वैशाख माह, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 98, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | सोमवार 02 मई 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

बॉर्डर पर 49 डिग्री तापमान में भी दुश्मन पर नजर

ठंडे पानी-शिकंजी और कपड़े के सहारे लू के बीच 13 घंटे ड्यूटी

जयपुर: यह भारत-पाक बॉर्डर का पश्चिमी रेगिस्तान के रेतीले धोरों का इलाका है। जहां इन दिनों 49 डिग्री तापमान के साथ सूरज अंगारे बरसा रहा है तो दूसरी तरफ लू के थपेड़े बेहाल कर रहे हैं। इस मौसम में बॉर्डर पर बीएसएफ जवानों की ऐसी मुस्तैदी कि गर्मी भी हांफती नजर आ रही है। भारत-पाक की पश्चिमी सीमा पर राजस्थान की अंतिम पोस्ट बाखासर से बाड़मेर जिले की अंतिम पोस्ट सुंदरा तक 237 किलोमीटर यात्रा कर जवानों की मुस्तैदी देखने को मिली। तपती धरा पर कदम से कदम मिलाकर जवान 49 डिग्री तापमान में भी बॉर्डर की निगहबानी करते नजर आए।

यहां दूर-दूर तक न तो कोई इंसान नजर आ रहा था और न ही लू और आग की तरह बरस रही गर्मी से बचने के लिए कोई इंतजाम। इसके बावजूद बीएसएफ के जवान महज एक विशेष कपड़ा मुंह पर बांधकर हाथ में बंदूक लिए और पानी की बोतल लटकाए ड्यूटी के प्रति मुस्तैद नजर आए। यह कोई

एक दिन की ड्यूटी नहीं होती है, जवान हर वक्त ऐसे ही ड्यूटी के प्रति सजग रहते हैं।

49 डिग्री के करीब तापमान: ओपी टॉवर में बीएसएफ के जवान मुस्तैद थे, जब जवानों की मुस्तैदी के बीच तापमापी यंत्र से तापमान देखा तो 49 डिग्री के करीब पहुंच चुका था। जब जवान से सवाल किया तो बोला- मेरे लिए गर्मी बाद में है।

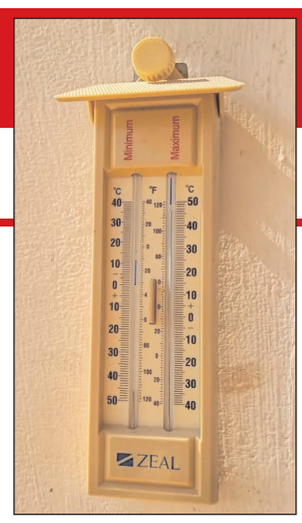

देश में गहराया बिजली संकट

हफ्ते में 3 बार पीक पावर सप्लाई का रिकॉर्ड, फिर भी पावर शॉर्टेज 10.77 गीगावॉट पर पहुंची

नई दिल्ली: देश इस समय बिजली संकट से जूझ रहा है। पीक पावर शॉर्टेज इस हफ्ते काफी तेजी से बढ़ी है। सोमवार को 5.24 गीगावॉट (जीडब्ल्यू) के सिंगल डिजिट से गुरुवार को यह 10.77 जीडब्ल्यू के डबल डिजिट में पहुंच गई। इस कमी की वजह पावर जनरेशन प्लांट में कोयले की कमी, हीटवेव और कुछ अन्य चीजें है।

नेशनल ग्रिड ऑपरेटर, पावर सिस्टम ऑपरेशन कॉर्पोरेशन के नए डेटा से पता चलता कि रविवार को पीक पावर शॉर्टेज 2.64 गीगावॉट थी, जो सोमवार को बढ़कर 5.24 गीगावॉट, मंगलवार को 8.22 गीगावॉट, बुधवार को 10.29 गीगावॉट और गुरूवार को 10.77 गीगावॉट हो गई। शुक्रवार को यह 8.12 गीगावॉट रही।

पीक पावर सप्लाई ने तीन बार रिकॉर्ड बनाया: दिलचस्प बात यह है कि देश भर में तेज गर्मी के बीच इस हफ्ते में पीक पावर सप्लाई तीन बार रिकॉर्ड लेवल तक पहुंची। पीक पावर सप्लाई ने मंगलवार को रिकॉर्ड 201.65 गीगावॉट के लेवल को छुआ। इसके बाद गुरुवार को 204.65 गीगावॉट का नया रिकॉर्ड बनाया और शुक्रवार को 207.11 गीगावॉट के ऑलटाइम हाई पर पहुंच गई।

बुधवार को यह 200.65 गीगावॉट थी और सोमवार को 199.34 गीगावॉट। पिछले साल 7 जुलाई को पीक पावर सप्लाई 200.53 गीगावॉट रही थी।

डिमांड में तेजी से गहराया बिजली संकट: एक्सपर्ट्स ने कहा कि डेटा साफ तौर पर दिखाता है कि डिमांड में तेजी आई है और बिजली की कमी ने संकट को और गहरा कर दिया है। उनका कहना है कि केंद्र और राज्य सरकारों के नेतृत्व में सभी स्टेकहोल्डर्स को थर्मल प्लांटों में कम कोयले के स्टॉक, प्रोजेक्ट पर रेक की समय पर अनलोडिंग, रेक की उपलब्धता जैसे इश्यू से मजबूती से निपटने की जरूरत है।

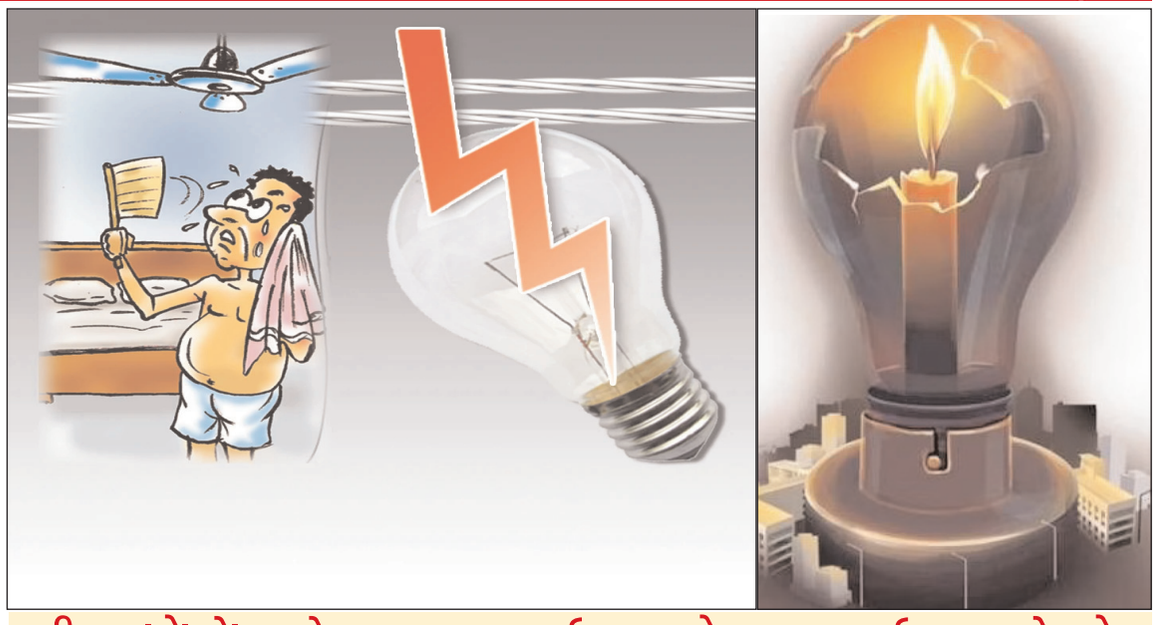

यूपी: गांवों में 5 से 10 रुपए खर्च कर मोबाइल चार्ज कर रहे लोग

बलरामपुर: भीषण गर्मी के बीच लगातार हो रही अघोषित विद्युत कटौती से एक बार फिर बिजली यानि कि जनरेटर का कारोबार चमकने लगा है। ग्रामीण बाजारों में दुकानदार शाम के समय रोशनी के लिए पैसा देकर जनरेटर का कनेक्शन ले रहे हैं। ग्रामीण 5 से 10 रुपए खर्च कर मोबाइल चार्ज कराने को विवश हैं। गर्मी के मौसम में लोड बढ़ने के कारण बिजली आने पर ट्रांसफार्मर भी जल जाते हैं। बिजली आपूर्ति बाधित होने पर शनिवार को गौरा चौराहा थाना क्षेत्र के भोजपुर संतरी गांव में ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के बाद मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर रोस्टर के अनुसार बिजली आपूर्ति किए जाने की मांग की है। जिले में बिजली आपूर्ति व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है। शहरी क्षेत्रों में 10 से 12 घंटे तो ग्रामीण क्षेत्र में 6 से 8 घंटे ही बिजली मिल पा रही है। बार-बार ट्रिपलिंग व लोकल फाल्ट के नाम पर बिजली कटौती किए जाने से ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली यानि कि जनरेटर का व्यवसाय एक बार फिर जोर पकड़ने लगा है। लोग पैसा देकर जनरेटर का कनेक्शन ले रहे हैं। इतना ही नहीं इन्वर्टर व सौर ऊर्जा से मोबाइल चार्ज करने का व्यवसाय भी खूब फलफूल रहा है। लोग 5 से 10 रुपए देकर अपना मोबाइल चार्ज कराने को विवश हैं। गांवों में स्थापित लघु उद्योग बंदी के कगार पर पहुंच गए हैं। समय से बिजली न मिल पाने के कारण आटा-चक्की व्यवसाय बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। आटा चक्की न चलने के कारण लोगों के घर रोटी के लाले भी पड़ गए हैं।

उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में अभी यह हाल है तो आने वाले दिनों में क्या होगा।

नॉन-पिटहेड थर्मल प्लांट में कोयले की कमी

नए डेटा से ये भी पता चलता है कि 164 गीगावॉट से ज्यादा की टोटल कैपेसिटी वाले 147 नॉन-पिटहेड थर्मल प्लांट में कोयले का स्टॉक 28 अप्रैल 2022 को मानक स्तर का 24% था।

इन प्लांट्स में गुरुवार को कोयले का स्टॉक 57,236 हजार टन के मानक के मुकाबले 13,755 हजार टन था। नॉन पिटहेड प्लांट कोयला खदानों से सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित हैं और ड्राय फ्यूल स्टॉक को बनाए रखना आवश्यक है।

कॉमर्शियल गैस सिलेंडर 102 रुपए महंगा हुआ

नई दिल्ली: महीने के पहले दिन यानी 1 मई को 19 किलो वाले कॉमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमत 102 रुपए महंगी हो गई है। राजधानी दिल्ली में अब नए सिलेंडर की कीमत 2355 रुपए होगी। हालांकि, घरेलू सिलेंडरों की कीमतों में कोई इजाफा नहीं हुआ है। इससे पहले कॉमर्शियल सिलेंडरों के दाम 1 अप्रैल को बढ़े थे। तक इसकी कीमत में 250 रुपए का इजाफा किया गया था।

19 किग्रा कॉमर्शियल गैस सिलेंडर की नई कीमतें: इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के अनुसार 19 किलोग्राम का एलपीजी सिलेंडर आज राजधानी दिल्ली खरीदने पर आपको 2355.50 रुपए देने होंगे। 30 अप्रैल तक इसकी कीमत 2253 रुपए थी।

वहीं, कोलकाता में पहले 2351 रुपए में मिल रहा था अब 2455 रुपए खर्च करने पड़ेंगे। मुंबई में 2205 रुपए की जगह आज से 2307 रुपए देने होंगे। वहीं तमिलनाडु के चेन्नई में कॉमर्शियल सिलेंडर की कीमतें 2406 रुपए से बढ़कर अब 2508 रुपए हो गई है।

जेट फ्यूल भी हुआ महंगा: एक मई से जेट फ्यूल की कीमतों में भी इजाफा हुआ हे। दिल्ली में एयर टरबाइन फ्यूल की कीमत 116851.46 रुपए प्रति लीटर हो गई है। वहीं कोलकाता में इसके दाम 121430.48 हो गया। मुंबई की बात करें तो यहां पर 115617.24 रुपए और चेन्नई में 120728.03 रुपए प्रति लीटर है। हालांकि आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों कोई बदलाव नहीं किया गया है।

शौर्य: नए सेना प्रमुख मनोज पांडे ने बताई भविष्य की रणनीति

नई दिल्ली: कार्यभार संभालने के एक दिन बाद सेना प्रमुख ने मीडिया के सामने सेना के आधुनिकीकरण और भविष्य की रणनीति को लेकर चर्चा की। उन्होंने कहा कि उनकी सबसे पहली प्राथमिकता रणनीतिक तैयारियों के उच्च मानकों को सुनिश्चित करना होगा जिससे कि आने वाली चुनौतियों से निपटा जा सके। उन्होंने कहा कि हमारा जोर सैन्य क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और आधुनिकीकरण पर होगा। इसके अलावा हम नवीनतम तकनिकों से लाभ उठाकर भारतीय सेना को और मजबूत करेंगे।

जीएसटी कलेक्शन: अप्रैल में टूटे सभी रिकॉर्ड, 1.68 लाख करोड़ मिला राजस्व

नई दिल्ली: जीएसटी कलेक्शन में एक बार फिर से सरकार ने सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। वित्त मंत्रालय की ओर से रविवार को दी गई जानकारी के मुताबिक, अप्रैल में जीएसटी राजस्व लगभग 1.68 लाख करोड़ रुपये के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। इससे पहले मार्च में जीएसटी राजस्व 1.42 लाख करोड़ रुपये था। वित्त मंत्रालय ने बताया कि मार्च की तुलना में अप्रैल में 25 हजार करोड़ अधिक राजस्व प्राप्त हुआ है। केंद्र ने बताया कि जीएसटी राजस्व में सुधार का कारण बेहतर होती आर्थिक गतिविधियां हैं। दी गई जानकारी के मुताबिक, इस साल अप्रैल का जीएसटी राजस्व पिछले साल की तुलना में 20 प्रतिशत ज्यादा है। वित्त मंत्रालय ने बताया कि अप्रैल में 1.06 करोड़ के जीएसटी रिटर्न दाखिल किए गए। वित्त मंत्रालय ने बताया कुल 1.68 लाख करोड़ राजस्व में सीजीएसटी 33,159 करोड़ रुपये, एसजीएसटी 41,793 करोड़ रुपये, आईजीएसटी 81,939 करोड़ रुपये और उपकर 10,649 करोड़ रुपये है। जीएसटी लागू होने के बाद से यह पहली बार है कि किसी एक महीने में जीएसटी संग्रह 1.50 लाख करोड़ के ऊपर गया हो।

वित्त मंत्रालय ने बताया, मार्च 2022 में कुल 7.7 करोड़ ई-वे बिल सृजित हुए, जो फरवरी 2022 में 6.8 करोड़ ई-वे बिल से 13 प्रतिशत अधिक हैं। वहीं इस साल अप्रैल के दौरान जीएसटीआर-3बी में 1.06 करोड़ जीएसटी रिटर्न दाखिल किए गए।

जम्मू-कश्मीर : सरहद पर फूटने लगे अमन के अंकुर

जम्मू-कश्मीर: भारत और पाकिस्तान के बीच जारी संघर्ष विराम समझौता से सरहद पर अमन के अंकुर फूटने लगे हैं। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सुचेतगढ़ बॉर्डर की ऑक्ट्राय पोस्ट पर बीएसएफ की ओर से वाघा सीमा की तर्ज पर परेड हो रही है। तो कश्मीर घाटी के बेहद संवेदनशील रहे केरन, गुरेज, तंगधार, माच्छिल सेक्टर और बंगस घाटी को भी सेना ने सैलानियों के लिए खोल दिया है। कुछ इलाकों में होम स्टे खुल गए हैं। यहां सैलानियों की आमद भी शुरू हो गई है। सैलानी यहां से पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर को बेहद करीब से निहार कर रोमांचित हो रहे हैं। वहीं, पर्यटन विभाग ने इन इलाकों को बॉर्डर टूरिज्म के तहत अपनी सूची में शामिल कर लिया है। सेना के साथ मिलकर प्रशासन इन इलाकों को पर्यटकों के लिए नए केंद्र के रूप में विकसित करने की योजना पर काम कर रहा है। कई वर्षों से गोलाबारी प्रभावित इन इलाकों में अब पूरी तरह से अमन है। सेना और पर्यटन विभाग पिछले कुछ वर्षों से हर साल केरन उत्सव का आयोजन कर रहे हैं। केरन में 28 वर्षीय वकार खान ने पिछले महीने अपने तीन मंजिला घर को होम स्टे में बदल दिया है।

बिहार में लाउडस्पीकर को लेकर भाजपा-जदयू में तनाव

भाजपा ने कहा-सीएम नीतीश सुप्रीमो कोर्ट के आदेश का करें पालन, सीएम ने कहा कि लाउडस्पीकर उतरवाने की बात फालतू

पटना: बिहार में लाउडस्पीकर की आवाज को लेकर भाजपा-जदयू फिर आमने सामने हैं। बिहार में बड़े भाई की भूमिका में सत्ता में भागीदार खड़ी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं ने सरकार से ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए लाउडस्पीकरों पर रोक लगाये जाने की मांग की है। इसपर जदयू नेताओं ने कड़ा प्रतिकार किया है। संसदीय बोर्ड के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाहा के बाद खुद सीएम नीतीश कुमार ने लाउडस्पीकर पर रोक की बात को सिरे से खारिज कर दिया है। इसके बाद बिहार

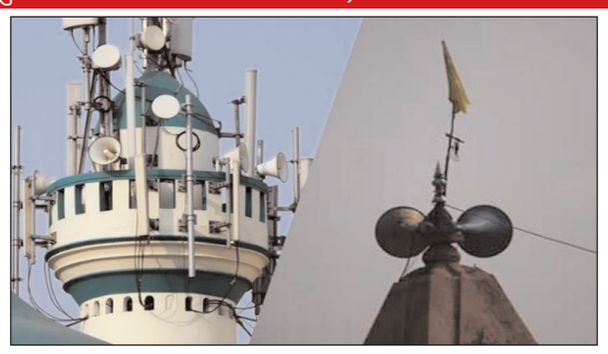

भाजपा ने बिना नाम लिए उपेन्द्र कुशवाहा पर जोरदार प्रहार किया है। साथ ही सीएम नीतीश को सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करने की नसीहत दी है। भाजपा ने कहा है कि हर मुद्दे को राजनीतिक चश्मे से देखना उचित नहीं। बिहार भाजपा के प्रवक्ता डॉ. राम सागर सिंह ने बिना नाम लिये कहा कि लाउडस्पीकर को राजनीतिक चश्मे से देखने वाले नेता गलत हैं। सुप्रीम कोर्ट का आदेश है उसी को लागू किया गया है। ऐसे में जो राज्य इसे लागू किया वो गलत नहीं बल्कि जो लागू नहीं कर रहे वो गलत हैं। जिन राज्यों ने इसे लागू किया है वो धन्यवाद के पात्र हैं। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता सागर सिंह ने कहा कि उप्र.ने इसे सख्ती से लागू किया है। उप्र. में मंदिर-मस्जिद दोनों जगह से लाउडस्पीकर उतारा गया है। 21 हजार लाउस्पीकरों को हटाया गया है।

'अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती, ईद पर बिजली आपूर्ति ठीक रखें'

लखनऊ: यूपी में जारी बिजली संकट को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अफसरों को निर्देश दिया है कि अक्षय तृतीया, परशुराम जयंती और ईद के अवसर पर बिजली आपूर्ति सुचारू रखें। अनावश्यक कटौती न हो। धर्मिक स्थलों के आसपास स्वच्छता, पेयजल आदि के प्रबंध किए जाएं। लोगों की सुविधाओं का ध्यान रखें। रविवार को टीम-9 के साथ हुई बैठक में उन्होंने अफसरों को बताया कि विगत दिवस दिल्ली यात्रा के दौरान मेरी माननीय गृह मंत्री, ऊर्जा मंत्री और रेल मंत्री के साथ बिजली आपूर्ति के सम्बंध में सकारात्मक बातचीत हुई। तीनों मंत्रीगणों ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है। कोयले की ढुलाई के लिए रेलवे हमें अतिरिक्त रैक देने जा रहा है तो भारत सरकार

से अतिरिक्त बिजली भी प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि रोस्टर के अनुरूप निर्बाध बिजली आपूर्ति के लिए समुचित प्रबंध किए जाएं। फिलहाल स्थिति सामान्य है और रोस्टर के अनुरूप बिजली आपूर्ति सुनिश्चित कराएं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक दशा में यह सुनिश्चित किया जाए कि एक भी उपभोक्ता को गलत बिजली बिल न मिले और सभी को समय से बिल मिल जाए। ओवरबिलिंग अथवा विलंब से बिल दिया जाना उपभोक्ता को परेशान तो करती ही है, व्यवस्था के प्रति निराश भी करती है और वह बिल जमा करने के प्रति उत्साहित नहीं होता। ऐसे में समय से बिल और सही बिल दिया जाना सुनिश्चित करें। इसके लिए ठोस कार्ययोजना बनाने की जरूरत है। बिजली आपूर्ति होती रहे इसके लिए बिल का भुगतान जरूरी है। बिजली का उपभोग करने वाले हर उपभोक्ता की यह जिम्मेदारी है कि वह समय से बिजली बिल का भुगतान करे। ऊर्जा विभाग/विद्युत निगमों को बिल के समयबद्ध संकलन के लिए ठोस प्रयास करना होगा। बकायेदारों से लगातार संपर्क करें, संवाद करें। समय से बिल भेजें, सही बिल दें।

तैयारी: कर्नाटक में काम शुरू करेगी इजरायली कंपनी

बेंगलुरु: इजरायल की कंपनी आईएसएमसी एनालॉग फैब प्राइवेट लिमिटेड ने कर्नाटक में एक सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन प्लांट की स्थापना करने में रुचि दिखाई है। कंपनी के अनुसार इस परियोजना की अनुमानित लागत करीब 22,900 करोड़ रुपये होगी और इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार की संभावनाएं भी बनेंगी।

यह जानकारी रविवार को कर्नाटक सरकार की ओर से जारी एक आधिकारिक विज्ञप्ति में दी गई। कंपनी सात साल की अवधि में इस परियोजना को पूरा करेगी और इससे लगभग 1500 लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। राज्य के सूचना प्रौद्योगिकी एवं बायोटेक्नोलॉजी विभाग में अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. ईवी रमण रेड्डी और आईएसएमसी के निदेशक अजय जालान ने इसे लेकर मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई की उपस्थिति में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

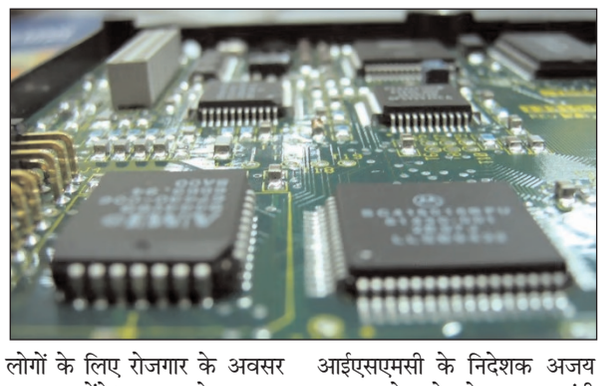

खबर संक्षेप

उरुवा ब्लाक में मृतक रोजगार सेवक को साथियों ने दी श्रद्धांजलि

मेजा रोड। मेजा के उरुवा ब्लॉक मे मृतक रोजगार सेवक को साथियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। बता दें कि मेजा ब्लॉक के भइंया गांव के रोजगार सेवक भरत मिश्रा, एक साथी ग्राम विकास अधिकारी के साथ प्रतापगढ़ निमंत्रण में गए थे जहां लौटते समय सड़क दुर्घटना में उनकी मौत हो गई। जिससे मेजा व उरुवा ब्लॉक के रोजगार सेवकों में शोक की लहर दौड़ गई। वहीं रविवार दोपहर उरुवा ब्लाक के बीडीओ ब्रह्म पाल सिंह की अध्यक्षता मे शोक सभा आयोजित किया गया। सभी रोजगार सेवकों ने मृतक साथी भरत मिश्रा को श्रद्धांजलि अर्पित किया। शोक सभा में एपीओ प्रदीप रस्तोगी, टीए उदयवीर, शिववीर विद्यार्थी, घनश्याम पटेल, रोजगार सेवक अनिश कुमार मिश्रा, आजाद सिंह यादव, पवन पटेल, सुरेंद्र कुमार, मनरेगा ऑपरेटर राम सागर प्रजापति मौजूद रहे।

मेजा ऊर्जा निगम ने मनाया अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस

अखंड भारत संदेश

मेजा। मेजा ऊर्जा निगम में रविवार को अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में उपस्थित राकेश द्विवेदी, उप श्रमायुक्त, प्रयागराज बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरूवात श्रमिकों को सुरक्षा शपथ दिलाकर की गई। तथा कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रमिकों को संबोधित करते हुए श्री द्विवेदी ने कहा कि श्रमिक हमारे देश की निमार्ता है। वे अपने मेहनत और लगन से कोई भी मुकाम हासिल कर सकते हैं।सुरक्षा प्रोटोकॉल को अपनाने पर जोर देते हुए, अनिल कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मेजा ऊर्जा निगम ने कहा कि सुरक्षा और काम के बीच, सुरक्षा को प्राथमिकता के तौर पर लिया जाना चाहिए। अतः काम करते समय अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित करना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। कार्यक्रम के अंत में, वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया और श्रमिकों के बीच सुरक्षा टोपी भी वितरित की गई।पीयूष कुमार, महाप्रबंधक (ओ एंड एम), गुरु प्रसाद सिंह, महाप्रबंधक (मेंटेनेंस), प्रदीप कुमार साबत, महाप्रबंधक (संविदा और सामग्री), संजय शुक्ला, महाप्रबंधक (मैकेनिकल इरेक्शन) और मेजा ऊर्जा निगम के अन्य वरिष्ठ अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में उपस्थित ऊर्जा निगम के अधिकारी व श्रमिक

भारत के उत्कर्ष की गाथा मेहनतकशों के पसीने से लिखी जाती है : नरेन्द्र सिंह

मेजा। प्रत्येक वर्ष एक मई को मजदूर दिवस मनाने की परम्परा चली आ रही है। उसी क्रम मे समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह ने रविवार को मजदूर दिवस पर शुभकामना देते हुए कहा कि अपने पसीने की बूंदों से भारत की आत्मा को ताकत देने वाले मेहनतकशों को मजदूर दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं, नरेन्द्र सिंह ने कहा कि भारत के उत्कर्ष की गाथा मेहनतकशों के पसीने से लिखी जाती है । उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी हमेशा से मजदूर हितों की लड़ाई लड़ती आ रही है। डाक्टर लोहिया, जार्ज फर्नांडिस, जनेश्वर मिश्र से लेकर मुलायम सिंह यादव से होते हुए आज सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी तथा प्रोफेसर रामगोपाल यादव जी के नेतृत्व मे समाज के हर कमजोर और जरुरतमंदों सहित मजदूर वर्ग के हक की लड़ाई लड़ा जा रहा है।नरेन्द्र सिंह ने कहा कि दुख है कि भाजपा सरकार ने मजदूर वर्ग को 'मजबूर' बना दिया।

शुआट्स में एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजी पर अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार

अखंड भारत संदेश

फिलीपीन्स, ब्राजील, लीबिया, नाइजीरिआ से प्रतिभागियों ने लिया हिस्सा

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज (शुआट्स), प्रयागराज के वॉघ इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी वी.आई. ऐ. ई. टी. के अंतर्गत, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग ने औद्योगिक और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में प्रगतिशील अनुसंधान पर एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजीह्व ऐ. म. टी. नामक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार की मेजबानी की। सम्मेलन के संयोजक डॉ राहुल डेविस ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में वैज्ञानिकों, शोधकताओं, शिक्षाविदों, उद्योगपतियों, इंजीनियरों और छात्रों के बीच तकनीकी की तेजी से संचार और आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए गुणवत्तापूर्ण अतिथि व्याख्यानों की प्रस्तुतीकरण की गयी। डीन प्रो. अर्पण शेरिंग एवं प्रो. अंशुका श्रीवास्तव ने अतिथियों, प्रस्तुतकताओं और उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए सम्मेलन का उद्घाटन किया। आरंभिक सत्र वेबिनार के सह-सयोंजक डॉ. गौरव निनावे के द्वारा संचालित किया गया जिसमे उन्होंने वेबिनार के प्रमुख विषयों के बारे में जानकारी दी। इसके उपरान्त वेबिनार के मुख्य सयोंजक डॉ. राहुल डेविस ने वेबिनार के दोनों अतिथि वक्ताओं का परिचय दिया। पहले सत्र के अतिथि वक्ता डॉ. किशोर देबनाथ असिस्टेंट प्रोफेसर, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान मेघालय ने फाइबर कम्पोजिट मटीरियल की आधुनिक मशीनिंग के विषय में की गयी नयी खोजों की चर्चा की। वहीँ वेबिनार के दुसरे सत्र में, ब्राजील देश से अतिथि वक्ता डॉ. लेओनार्डो दसिलवा असिस्टेंट प्रोफेसर, मैन्युफैक्चरिंग रिसर्च सेंटर, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ उबरलंडिआ ने अभियांत्रिकी मटीरियलस की सतह बनावट सरफेस टेक्सचरिंग के सुधार में इस्तेमाल की जाने वाली आधुनिक तकनीकों के ऊपर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में कुल मिलाकर 242 प्रतिभागियों ने सहभागिता की, जिनमें शुआट्स समेत भारत के कई राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, उच्च स्तर के निजी विश्वविद्यालओं, संस्थानों और विनिर्माण उदयोग के प्रतिभागियों ने भी सहभागिता की । इसके अलावा कई अन्य देशों जैसे फिलीपीन्स, ब्राजील, लीबिया, नाइजीरिआ आदि से भी प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का समापन, डॉ. एल. पी. सिंह विभागाध्यक्ष, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, शुआट्स के धन्यवाद प्रस्ताव द्वारा हुआ । म टेक. शोधार्थी श्री दिव्य प्रकाश ने सम्मेलन में स्वयंसेवक के रूप में सक्रिय रूप से भाग लिया और कार्यक्रम का पूरा तकनीकी कार्यभार संभाला। डॉ. डेविस और डॉ. निनावे द्वारा धन्यवाद के साथ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन किया गया।

हत्याकांड में स्कॉर्पियो व ई रिक्शा बरामद

नैनी। प्रयागराज भाजपा नेता के भाई बृजेश सिंह की हत्या के मुख्य आरोपी की तलाश में लगी आधा दर्जन टीमों को अभी तक कोई सफलता नहीं मिल सकी है। हत्या के बाद आरोपी मोबाइल फोन साथ नही ले गये। लोकेशन मिलने में दिक्कत आ रही है।उक्त मामले में पुलिस ने महिलाओं समेत आधा दर्जन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।सूत्रों की मानें तो आरोपियों ने बृजेश की हत्या में एक स्कॉर्पियो और एक ई रिक्शा का भी इस्तेमाल किया था। हालांकि उसकी पुष्टि अभी नहीं हो सकी है। लेकिन पुलिस ने हत्याकांड मामले में एक स्कॉर्पियो बरामद किए।नैनी इस्पेक्टर कुशल पाल सिंह ने बताया कि आरोपियों की एक स्कॉर्पियो और एक ई रिक्शा बरामद किया गया है।

न्यूज झरोखा

लेखपाल की हीला हवाली से तंग आकर प्रधान ने तहसीलदार से की शिकायत

रत्योंरा। कोराव तहसील में कार्यरत लेखपाल बेलगाम हो गए हैं। जिम्मेदार पदों पर आसीन अधिकारी भी उदासीन बन गए हैं जिससे हदबंदी हो या चक मार्गों की पैमाइश हो अथवा किसी भी प्रकार की नाप की बात हो सब में लेखपालों को मोटी रकम चाहिए। बगैर रकम के किसी भी प्रकार की नाप करने से इंकार कर देते हैं। ऐसे में पीड़ितों को पैमाइश व नाप कराने के लिए कई महीनों तक तहसील का चक्कर लगाना पड़ता है। ऐसा मामला कोरांव तहसील क्षेत्र के उल्दा गांव का है जहां के ग्राम प्रधान दिलीप सोनी के द्वारा तीन चक मार्गों की पैमाइश कराए जाने हेतु संबंधित लेखपाल व तहसील प्रशासन से माह जनवरी 2022 से ही मांग की जा रही है, किंतु लेखपाल द्वारा मामले में लगातार हीला हवाली की जा रही है। इतना ही नहीं ग्राम प्रधान दिलीप सोनी द्वारा तहसीलदार को दिए गए शिकायती प्रार्थना पत्र में यह कहा गया है कि लेखपाल रामकुमार वर्मा के द्वारा पैमाइश के लिए जरीब न होने की बात कह कर ग्राम प्रधान से जरीब खरीदने की बात कही। लंबे समय से हीला हवाली कर रहे लेखपाल ने ग्राम प्रधान को जरीब ना होने की बात कहकर पैमाइश से काफी दिनों तक चलता रहा जिसके बाद ग्राम प्रधान ने खुद 3:00 तक मार्गों की पैमाइश कराए जाने वाले पाल द्वारा की जा रही हरकत बाबत शिकायती प्रार्थना पत्र देकर दोषी लोकपाल पर कार्रवाई व शिकायती प्रार्थना पत्र में उल्लेखित तीनों चक मार्गों का शीघ्र पैमाइश कराए जाने की मांग की है। जिन चक मार्गों की पैमाइश कराए जाने की मांग की गई है, उनमें जैमुन पटेल के घर से पुन्नालाल के खेत तक गरन उल्दा राजस्व गांव के बॉर्डर तक, राजेंद्र प्रसाद कुशवाहा के घर से राजकुमार विश्वकर्मा के घर तक, बंधव काली सड़क से उमाकांत के घर तक चक मार्गों की पैमाइश कर मनरेगा के द्वारा मिट्टी कार्य कराया जाना है। लेखपाल द्वारा पैमाइश न किए जाने से गांव का विकास कार्य बाधित हो रहा है। मामले की शिकायत ग्राम प्रधान ने तहसीलदार से करते हुए त्वरित कार्रवाई की मांग की है।

युवाओं में अवैध असलहे के साथ शादी-विवाह में डांस करने का बना क्रेज

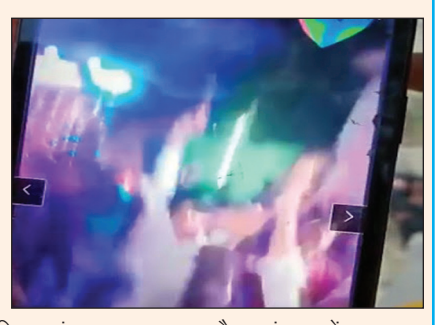

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र में युवाओं में अवैध असलहे के साथ शादी विवाह में डांस करने का क्रेज दिन प्रतिदिन दिन तेजी के साथ बढ़ता जा रहा। जो उन्हें कई बार सलाखों के पीछे पहुंचा चुका है। ऐसा ही एक मामला मेजा थाना क्षेत्र के कनिगड़ा गांव का बताया जा रहा है। जहां बरात में युवक हाथ में अवैध तमंचा लहराते हुए देखा जा रहा। सोशल मीडिया पर युवक का डांस करते तमंचे के साथ वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो वायरल होने के बाद मेजा पुलिस ने मामले का संज्ञान लिया। इस विषय पर जब थाना प्रभारी मेजा धीरेंद्र सिंह से वार्ता किया गया तो उन्होंने बताया कि वायरल वीडियो की जानकारी हो गई है। युवक की तलाश जारी है युवक मौके से घर छोड़कर फरार है । युवक के पिता को पूछताछ के लिए उठाया गया है। वहीं युवक का अवैध तमंचे के साथ डांस करते वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है। यह वीडियो 22 अप्रैल का बताया जा रहा।

कोरांव में विधायक और चेयरमैन ने बांटे सिलेंडर

कोरांव। 1 मई को ग्राम पंचायत गजाधरपुर कोराओ प्रयागराज में उज्जवला दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप मे विधायक राजमणि जी तथा विशिष्ठ अतिथि ग्राम प्रधान प्रतिनिधि ब्रिज भूषण पांडेय की उपस्थिति में कृपा शंकर इंडेन गैस एजेंसी के प्रबंधक श्री कृष्ण तिवारी के नेतृत्व में कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम में सभी ग्रामवासियो को एलपीजी विधायक जी के द्वारा उज्जवला योजना के तहत गैस वितरण किया गया। उक्त कार्यक्रम में गोविन्द मिश्रा, प्रभा शंकर शुक्ला, मंगला प्रसाद शुक्ला, सर्वेश शुक्ला,शेष धर पांडेय एवम समस्त ग्राम वासी उपस्थी रहे ! इसी प्रकार दिशा भारत गैस एजेंसी कोराव के द्वारा उजव्ला योजना के तहत बीस सिलेंडर चेयरमैन कोराव नर सिंह केसरी ने लाभार्थियों को निःशुल्क।वितरण किया। जिसमे।पिंटू सिंह,आशुतोष कुमार,मिथिलेश कुमार,पप्पु यादव आदि मौजूद रहे।

शैल निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान द्वारा बांटे गए टैबलेट

जारी। उत्तर प्रदेश सरकार के यशस्वी माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निदेर्शानुसार प्रदेश के युवाओं को तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए टैबलेट प्रदान किया जा रहा है। संस्था के प्रबंधक अनिल कुमार पांडे के द्वारा टैबलेट वितरण किया गया । इस अवसर पर प्रबंधक अनिल कुमार पांडे ने बताया कि योगी सरकार की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि योगी के नेतृत्व में प्रदेश में चौमुखी तरक्की हो रही है। युवाओं के हाथ में टैबलेट एवं स्मार्टफोन देकर युवाओं को बड़ी संख्या में तकनीकी के क्षेत्र में जोड़ने का काम किया। और ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शैल औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान जारी बाजार में पिछले 8 सालों से युवाओं को तकनीकी प्रशिक्षण देकर के रोजगार एवं स्वावलंबन को बढ़ावा देने का कार्य किया जा रहा है । इस मौके पर उपस्थित छात्रों में पंकज द्विवेदी, गुलाब कुशवाहा, आशीष, अमित सिंह, संजीव कुमार, दिनेश कुमार, अमन ,रवि, विकास ,अनमोल, प्रिंस, आदि समस्त छात्रों को टैबलेट वितरण किया गया।

श्री कृष्णा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान मड़वा में टेबलेट वितरण

प्रतापपुर। श्री कृष्णा निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान मड़वा बाजार में छात्र छात्राओं को टेबलेट वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि /संरक्षक प्रवीण मौर्य अधिवक्ता उच्च न्यायालय, संस्थापक/प्रबंधक जगदीश चंद्र मौर्य, बड़े बाबू रामराज मौर्य अनुदेशक सौरभ कुमार, नागेश कुमार एवं समस्त संस्थान परिवार द्वारा कार्यक्रम संपन्न किया गया।जिसमें सभी छात्र टेबलेट पाकर उत्साहित हुए एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं विद्यालय परिवार का आभार व्यक्त किया।

जलालपुर कंपोजिट विद्यालय में संसाधन की कमी, बीएसए को लिखा पत्र

जंघई। प्रतापपुर क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय जलालपुर मुतफर्का में सुविधाओं की कमी एवं अव्यवस्थाओं को लेकर एडवोकेट पुष्पराज भास्कर द्वारा शिकायत पत्र बीएसए, एबीएसए को लगातार दिया जा रहा है और विद्यालय में और संसाधनों की उपलब्धता की मांग की जा रही है।सत्र 2021-22 में विद्यालय में कुल विद्यार्थियों की संख्या 501 थी और सत्र 2022-23 में विद्यार्थियों की संख्या 457 है और विद्यालय में कमरों की संख्या केवल 8 है एक कमरे की क्षमता मात्र 30 से 40 बच्चों की है।जिस कारण कक्षाओं में अत्यधिक भीड़ हो जाती है भीड़ के नाते बच्चों में तनाव रहता है जिस कारण ठीक से पढ़ाई नहीं कर पाते हैं जबकि विद्यालय में अध्यापकों की संख्या 14 है। एक बार शिकायतकर्ता एडवोकेट पुष्पराज भास्कर ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रयागराज, खंड शिक्षा अधिकारी प्रतापपुर को शिकायती पत्र दिया उपरोक्त शिकायती पत्र पर विद्यालय में 53 सीट डेक्स बेंच लग गए तथा बेसिक शिक्षा अधिकारी ने आश्वासन दिया है जल्द ही कमरों की मांग भी पूरी कर दी जाएगी। पुष्पराज भास्कर एडवोकेट ने कहा कि विद्यालय की परिस्थिति के सुधार हेतु लगातार प्रयास जारी रहेगा बच्चे देश के भविष्य हैं और मैं उन बच्चों के लिए शासन प्रशासन तक बात पहुंचाने का प्रयास करता रहूंगा।

क्षेत्र पंचायत सदस्यों एवं ग्राम प्रधानों की पहली बैठक

अखंड भारत संदेश

जसरा। विकासखंड जसरा में आयोजित क्षेत्र पंचायत सदस्यों एवं ग्राम प्रधानों की पहली बैठक की अध्यक्षता करते हुए ब्लॉक प्रमुख अजीत सिंह ने कहा कि क्षेत्र पंचायत और ग्राम पंचायत मिलकर जसरा ब्लॉक को आदर्श ब्लॉक बनाएं। बीडीओ जसरा अमित मिश्र ने ग्राम पंचायतों के प्रधान व क्षेत्र पंचायत सदस्यों से कहा कि सरकार द्वारा हर ग्राम पंचायतों में पंचायत भवन का निर्माण कराकर वहां पंचायत सहायक को सुबह नौ बजे से पांच बजे तक अपने गांव के मिनी सदन में गाँव के लोगों की समस्याओं के निराकरण करने के लिए रखा गया है। ग्राम प्रधान पंचायत भवन में ग्राम पंचायत अधिकारी, रोजगार सेवक,पंचायत सहायक व सफाई कर्मी के साथ ही बीडीओ, लेखपाल, स्वास्थ्य कर्मी व थाना के किसी एक सिपाही का नाम व मोबाइल नंबर लिखा होना चाहिए। पंचायत भवन में आने वाले गांव के लोगों को सारी सुविधाएं मुहैया कराना सबकी पहली प्राथमिकता होगी। पंचायत भवन पर सेक्रटरी के बैठने का समय निर्धारित किया जाएगा। वृद्धावस्था, विधवा व दिव्यांग लोगों को गांव के मिनी सदन में ही सारी समस्याओं का निदान हो सके। पंचायत भवन पर अन्त्योदय कार्ड धारकों का नाम,वृद्धावस्था, विधवा व दिव्यांग के पूरे नाम भी प्रधान अंकित करायें। बीडीओ अमित मिश्र ने बैठक में अन्य विभागों के अधिकारियों के न आने पर उच्चाधिकारियों को सूचना देने को कहा है। सीएचसी अधीक्षक डा०तरुण पाठक ने सीएचसी में सफाई कर्मचारियों के न होने से गंदगी की सफाई के लिए सप्ताह में एक दिन सफाई के लिए कहा। पशु चिकित्साधिकारी डा० सुनील कुमार मिश्र ने बताया कि 11 न्याय पंचायतों में कुल चार न्याय पंचायत में ही गोआश्रय स्थल बनाया गया है। वहीं क्षेत्र पंचायत सदस्य चन्द्र प्रकाश त्रिपाठी ने गोआश्रय स्थलों में रह रहे गोवंशों के एक दिन के खर्च 30 रुपए को कम बताते हुए बढाने के लिए प्रस्ताव रखा। बताते चलें कि जसरा ब्लॉक में 63 ग्राम पंचायत और 189 बीडीसी हैं। ब्लॉक सभागार में सदस्यों को बैठने तक की जगह नहीं रही। बीडीओ जसरा ने सांसद व विधायक से मांग किया है कि एक बड़ा सभागार बने जिससे सबको यथोचित स्थान दिया जा सके। कार्यक्रम का संचालन एडीओ पंचायत श्याम लाल तिवारी और सचिव जीतेंद्र गौड़ ने किया। बैठक में सांसद प्रो०रीता बहुगुणा जोशी अपने पिता पर लिखी पुस्तक के विमोचन उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू द्वारा होना है के लिए गई हुई हैं। उनके प्रतिनिधि संत प्रसाद पांडेय मौजूद रहे। वहीं विधायक प्रतिनिधि उमेश शुक्ल, प्रधान संघ अध्यक्ष दारा सिंह पटेल,राहुल सिंह,लल्लू सिंह,मनोज प्रजापति, बृजेश बिंद,बृजेश सोनकर, आशीष सोनकर, भीम पटेल, बीओपीआरडी देवांशिका सिंह सहित सैकड़ों प्रधान व बीडीसी मौजूद रहे।

1--बैठक में महिलाओं की संख्या नगण्य

जसरा ब्लॉक में क्षेत्र पंचायत सदस्य व प्रधानों में आधा दर्जन से भी कम बीडीसी व प्रधान मौजूद रहीं। जब कि उनकी जगह उनके प्रति निधियों की भरमार रही।

2-- पूरे समय बिजली व्यवस्था को लेकर बनी रही समस्या क्षेत्र पंचायत की बैठक में बिजली विभाग के किसी भी सक्षम अधिकारी के न आने के कारण विद्युत कटौती का मामला गरमाया रहा। लेकिन समाधान करने के लिए कोई उपस्थित नहीं रहा।

बेटियों को समान शिक्षा एवम अवसर प्रदान करने की आवश्यकता : डा. शुभी सचान

अखंड भारत संदेश

जसरा। बेटियों को समान शिक्षा एवम उज्जवल भविष्य के अवसर चुनने की आजादी प्राप्त हों तों बेटियां अपने माता -पिता, समाज के साथ राष्ट्र को गौरवान्वित करती हैं।वर्तमान में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं हैं जहाँ स्त्रियों नें अपने कर्तव्य निष्ठता एवम सफलता की मिशाल न पेश की हों उक्त बातें डा. शुभी सचान नें एमएस आप्थाल्मालॉजी (नेत्र विशेषज्ञ) में मोती लाल नेहरू मेडिकल कालेज में प्रवेश हेतु सीट हासिल करने के दौरान अपने सम्मान समारोह में व्यक्त की आगे उन्होंने यह भी कहा कि उनके सफलता के पीछे माता -पिता, बहन सहित गुरुजनों का विशेष योगदान हैं जिनके आशीर्वाद से आज वह इस मुकाम को हासिल करने में सफल हुई हैं।इस दौरान डा. शुभी सचान नें उपस्थित लोगों से अत्यधिक मात्रा में पौधों को लगाने एवम उनके संरक्षण पर विशेष अपील भी किया। नेत्र सर्जन बनने के बाद वह समाज के दीन- दुःखियों एवम असहाय लोगों के निःशुल्क इलाज करने का भी संकल्प ली। इसके लिए वह अपने माता- पिता को प्रेरणास्त्रोत मानती हैं।इस अवसर पर राजकीय बालिका इंटर कालेज जसरा की पूर्व प्रधानाचार्या श्रीमती सुकुंती देवी सचान एवम उच्च न्यायालय के अधिवक्ता शिव शंकर सचान नें संयुक्त रूप से माल्यार्पण के साथ मिष्ठान खिलाकर डा. शुभी सचान के उज्जवल भविष्य के लिए उत्साहवर्धन किये।उक्त अवसर पर केंद्रीय इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शोधछात्र एवम युवा समाजसेवी अभिषेक सिंह पटेल के द्वारा पौधा भेंटकर सम्मानित किया गया अपने उदबोधन में अभिषेक सिंह पटेल नें डा. शुभी सचान के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ असहनीय गर्मी में पक्षियों के लिए प्रतिदिन दाना-पानी रखने की अपील किये।

ट्रक की टक्कर से मैजिक पलटा, एक की मौत

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। यमुनापार के शंकरगढ़ थाना क्षेत्र में भोर में हुए सड़क हादसे में मैजिक सवार युवक की मौत हो गई, जबकि आधा दर्जन लोग घायल हो गए हैं। मैजिक सवार सभी लोग मध्य प्रदेश के रहने वाले हैं और अस्थि विसर्जन के लिए प्रयागराज संगम जा रहे थे। हादसे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जबकि मृतक के शव को कब्जे में लेकर चीरघर भेजा। यह हादसा शंकरगढ़ क्षेत्र के गाढ़ा कटरा गांव के समीप हुआ। इस हादसे की सूचना हादसे का शिकार हुए लोगों के परिजनों को भेज दी गई है। जानकारी के मुताबिक मध्य प्रदेश के दमोह जनपद से कुछ लोग अस्थि विसर्जन के लिए मैजिक द्वारा प्रयागराज संगम जा रहे थे। बताया जाता है कि शंकरगढ़ क्षेत्र के गाढ़ा कटरा गांव के समीप आज भोर में विपरीत दिशा से आ रहे एक बेकाबू ट्रक ने मैजिक में जोरदार टक्कर मार दी, जिससे मैजिक पलट गया। हादसे की सूचना होने पर राहगीरों ने घटना की सूचना पुलिस को देते हुए वाहन में फंसे लोगों को बाहर निकाला। सूचना पर आई पुलिस ने सभी घायलों को स्थानीय अस्पताल पहुंचाया, जहां पर एक युवक को मृत घोषित कर दिया गया। अस्थि विसर्जन के निमित्त प्रयागराज जा रहे लोगों में सुशील कुमार (40) की मौत हो गई, जबकि नारायण पटेल, देवेंद्र कुशवाहा, राजकुमार कुशवाहा, चूड़ामणि पटेल, खेमचंद्र और कुंदनलाल घायल हो गए हैं। सभी लोग मध्यप्रदेश के दमोह जनपद के रहने वाले बताए जा रहे हैं। प्राथमिक उपचार के बाद सभी घायलों को सीएचसी शंकरगढ़ से जिला अस्पताल के लिए भेज दिया गया है।

खबर संक्षेप

ट्रैक्टर की चपेट में आने से घायल युवक की उपचार के दौरान मौत

मऊआइमा। ट्रैक्टर की चपेट में आने से घायल युवक का उपचार के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सराय सुलतान उर्फ पूरे मखदूम निवासी शिव प्रकाश 30 वर्ष पुत्र जवाहर लाल शनिवार को देर रात बागी पनपटटी के पास खडा था। बताया गया है कि उधर से आ रहे ट्रैक्टर ने शिव प्रकाश को टक्कर मार दी। जिससे वह बुरी तरह जख्मी हो गया। उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने ट्रैक्टर चालक राकेश कुमार के खिलाफ रविवार को मुकदमा दर्ज कर लिया। उधर परिजनों को सूचना मिलने पर वह रोते बिलखते चीरघर पहुंच गए।

अश्लील हरकत से परेशान महिला कर्मचारी ने लगाई गुहार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। चकबंदी कार्यालय में महिला कर्मचारियों से अश्लीलता का मामला डीएम-कमिश्नर तक पहुंच गया है। कार्यालय में खुलेआम फब्तियां कसने, गंदे आरोप लगाकर बदनाम करने की शिकायत की अनदेखी का आरोप बंदोबस्त अधिकारी पर लगाया गया है।मंडलायुक्त और डीएम से मिलकर महिला कर्मी ने अपनी पीड़ा जाहिर की तो उसे अनुशासनात्मक कार्रवाई की चेतावनी देते हुए कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया गया है। परेशान महिला कर्मियों का कहना है कि अगर उनकी नहीं सुनी गई तो वह न्याय के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ से मिलकर न्याय की गुहार लगाएंगी। चकबंदी कार्यालय में कनिष्ठ सहायक पद पर तैनात दो महिला कर्मचारियों के साथ अश्लीलता के मामले को महीने पहले से दबाने की कोशिश की जा रही है। पहले जिस लिपिक ने महिला कर्मियों को बदनाम करने की कोशिश की, उसके खिलाफ पुलिस से की गई शिकायतों को दबाव बनाकर वापस करा दिया गया। इसके बाद भी सिलसिला रुका नहीं। कभी व्हाट्सएप पर फोटो डाल कर उपहास उड़ाना तो कभी चरित्र हनन का आरोप लगाकर परेशान किया जाता रहा।

डीएम से मिलकर की शिकायत, सीएम से शिकायत की चेतावनी : आजिज आकर एक महिला लिपिक ने डीएम और मंडलायुक्त से इस मामले को अवगत कराया है। महिला कर्मी ने मंडलायुक्त को बताया है कि कनिष्ठ लिपिक दिनेश कुमार यादव से परेशान होकर वह मानसिक रूप से तनावग्रस्त हो गई हैं। बीते महीनों में निर्वाचन कार्य से एक वरिष्ठ कर्मचारी के साथ मुंडेरा मंडी जाने पर भी उनकी छवि धूमिल करने की कोशिश की गई। इसकी शिकायत कर्नलगंज पुलिस से की गई, लेकिन बंदोबस्त अधिकारी ने दबाव बनवा कर शिकायत वापस करा दी।इससे महिला कर्मियों के आत्म सम्मान के साथ और भी खुलकर खिलवाड़ किया जा रहा है। विभागीय अफसर दोषियों पर कार्रवाई करने की बजाए महिला कर्मियों को ही धमका रहे हैं। महिला कर्मियों का कहना है कि दफ्तर में उत्पीड़न की आवाज उठाने वालों को विक्षिप्त और मंदबुद्धि करार दे दिया जाता है। इससे पहले भी एक महिला कर्मी को आवाज उठाने पर विक्षिप्त करार देकर निलंबित किया जा चुका है।

राज्य महिला आयोग से भी लगाई गुहार : चकबंदी कार्यालय में तैनात महिला कर्मचारी ने इस मामले की शिकायत राज्य महिला आयोग से भी की है। महिला आयोग की सदस्य अनीता सिंह से मिलकर उन्होंने कार्यस्थल पर की जा रही अश्लील हरकत और दुर्व्यवहार से अवगत कराया है। महिला आयोग ने इस मामले की जांच कराकर जिम्मेदार अधिकारियों-कर्मचारियों पर कार्रवाई का भरोसा दिलाया है।महिला लिपिक को अगर किसी तरह की समस्या थी तो सबसे पहले मैं नियुक्ति प्राधिकारी हूं, मुझे अवगत कराना चाहिए था। लेकिन, उन्होंने इस प्रकरण को मुझे संज्ञान में लाए बिना डीएम और मंडलायुक्त तक पहुंचा दिया। जबकि, ऐसा नहीं करना चाहिए था। इस पर उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। - **पुष्कर बाबू, बंदोबस्त अधिकारी, प्रयागराज।**

साली से जीजा ने किया दुष्कर्म, पुलिस ने किया गिरफ्तार

नैनी प्रयागराज। नैनी थाना क्षेत्र के एक मोहल्ले में रहने वाली किशोरी के साथ उसके जीजा ने ही तमंचे के बल पर दुष्कर्म किया। इसकी जानकारी परिजनों को हुई तो उन्होंने आरोपी की पत्नी को जानकारी दी। आरोपी की पत्नी ने ही उसके खिलाफ मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। नैनी थाना क्षेत्र के एक कालोनी निवासी एक व्यक्ति के बच्चे का बीते 28 अप्रैल को जन्मदिन था। उसकी पत्नी बीते कई महीने से अपने मायके में रह रही थी। वह अपने मायके गया और बच्चे के जन्मदिन पर सभी को आमंत्रित किया। उसकी पत्नी तो नहीं आई लेकिन उसकी 13 वर्षीय साली जन्मदिन मनाने उसके घर आ गई। आरोप है कि देर रात उसने तमंचे के बल पर साली से दुष्कर्म किया । अगले दिन सुबह जब वह अपने घर गई तो उसने परिजनों को इसकी जानकारी दी।मामले की शिकायत लेकर एसएसपी ऑफिस गए। एसएसपी के आदेश पर आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। आरोपी को गिरफ्तार कर पुलिस ने जेल भेज दिया।

स्कूल जा रही किशोरी को अगवा कर दुष्कर्म का प्रयास

प्रयागराज। धूमनगंज में मुंडेरा चुंगी के पास 29 अप्रैल को स्कूल जा रही छात्रा का चार युवकों ने अपहरण कर लिया। वह छात्रा को धमका कर गंगा किनारे एसटीपी के पास ले गए और दुराचार का प्रयास किया। छात्रा के चीखने पर अपहताओं ने उसे कहीं अन्य स्थान पर ले जाने के लिए बाइक पर बिठाया। इस बीच छात्रा चलती बाइक से कूद गई। इस मामले में चार युवकों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। बाकराबाद की रहने वाली छात्रा 29 अप्रैल की सुबह स्कूल जाने के लिए घर से निकली। वह मुंडेरा चुंगी के पास स्थित स्टैंड पर उतरी। उसी समय दो बाइक पर सवार चार युवकों ने छात्रा का अपहरण कर लिया। उसे डरा धमकाकर जबरन बाइक पर बिठा लिया। छात्रा को अपहर्ता सीधे गंगा किनारे स्थित एसटीपी के बगल में ले गए और दुराचार का प्रयास किया लेकिन छात्रा ने शोर मचा दिया। **चलती बाइक से कूद गई छात्रा :** उसकी चीख सुनकर अपहताओं ने उसे कहीं और ले जाने के लिए बाइक पर बिठा लिया। कुछ दूर चलने के बाद छात्रा ने अगल बगल मकान देखे तो चलती बाइक से कूद गई। यह देख अपहर्ता वहां से भाग निकले। छात्रा बुरी तरह से घायल हो गई थी। उसे रोता देखकर एक महिला उसे पास की दुकान पर ले गई। वहां से पानी पिलाया। महिला ने ही छात्रा के घरवालों का नंबर लेकर फोन किया। पुलिस को भी सूचना दी गई। वहां काफी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। तमाम लोगों ने छात्रा को कूदते हुए देखा था। पुलिस ने आसपास कई जगह सीसीटीवी चेक किया। उनमें अपहर्ता साफ दिख गए। छात्रा को बाइक के बीच में बिठाया गया था। पीछे बैठे युवक ने छात्रा को पकड़ रखा था। एसओ धूमनगंज ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर ली गई। युवकों के बारे में पता लगाया जा रहा है। सोमवार को छात्रा का बयान कराने की कोशिश की जाएगी।

न्यूज झरोखा

रोटरी प्रयागराज संगम ने जारी किया हेल्थ कार्ड

स्वास्थ शिविर में सैकड़ों महिलाओं का हुआ निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण

झूंसी। रोटरी प्रयागराज संगम व महेन्द्र प्रताप सिंह फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को झूंसी के अंदावा स्थित महेन्द्र प्रताप सिंह पब्लिक स्कूल में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। रोटरी द्वारा हेल्थ कार्ड भी जारी किया गया। मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित फूलपुर विधायक प्रवीण पटेल ने स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ करते हुए कहां की स्वास्थ शिविर में आई हुई महिलाओं को देखकर प्रसन्नता हुई की महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति कितने सजग है। उन्होंने कहा कि ऐसे स्वास्थ्य शिविर के कार्यक्रम आयोजित होते रहने चाहिए। उन्होंने रोटरी प्रयागराज संगम द्वारा हेल्थ कार्ड जारी करने पर रोटरी को धन्यवाद दिया। शिविर में उपस्थित प्रशिक्षित डाक्टरों ने आई हुई सैकड़ों महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर परामर्श दिया। इस अवसर पर रोटेरियन पूनम गुलाटी, रोटरी प्रयागराज संगम के अध्यक्ष डॉ अमित त्रिपाठी, डॉ जीएस तोमर, गोल्डी पटेल, रिषी अग्रवाल, डॉ. प्रीति त्रिपाठी, डॉ आरके पाठक, डॉ गोपेश चौकसे, डॉ. मनोज यादव, डॉ बसंत यादव आदि डाक्टर मौजूद रहे।

पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद कुशवाहा ने दी श्रद्धांजलि

सहसों। क्षेत्र के चिरौड़ा गांव निवासी पूर्व ग्राम प्रधान उमाशंकर कुशवाहा के पिता 102 वर्षीय रामधन कुशवाहा के निधन पर पूर्व कैबिनेट मंत्री उत्तर प्रदेश शासन एवं सपा के वरिष्ठ नेता स्वामी प्रसाद कुशवाहा शनिवार रात उनके आवास पर पहुंचकर सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने पूर्व प्रधान सहित अन्य परिजनों को ढांढस बताते हुए दो मिनट का मौन रखकर आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की। इस दौरान उन्होंने हो रहे शांति हवन में भी शामिल हुए। इस मौके पर धनपत राम विद्रोही, अमरनाथ मौर्या, सुशील कुशवाहा, भागीरथी पाल, मोहम्मद इब्राहिम, राकेश कुमार यादव, रामचरण कुशवाहा, जगदीश मौर्य, संगम मौर्य आदि उपस्थित रहे।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने किया निरीक्षण

सहसों। मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रयागराज डॉक्टर नानक सरन ने शनिवार को नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुंचकर निरीक्षण किया तथा उपस्थित चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने अस्पताल परिसर को पूरी तरह साफ सफाई करते हुए जल जमाव एवं संक्रमण रहित व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त मरीजों के लिए स्वच्छ पेयजल की समुचित व्यवस्था का भी निर्देश दिया। उन्होंने कहा किसी भी कीमत पर आने वाले मरीजों को गर्मी में पेयजल की सुविधा के साथ स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाए।

पुरानी रंजिश को लेकर मारा पीटा गया मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। पुरानी रंजिश को लेकर एक राय होकर विरोधी मार पीट कर जख्मी कर दिए। पुलिस ने दो नामजद चार अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम नया पूरा सिकंदरपुर निवासी राजेश कुमार पुत्र शिवमूरत का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर उनके विरोधी एक राय होकर उसे मारे पीटे और जान से मारने की धमकी भी दिए।राजेश कुमार ने मऊआइमा थाने में धनंजय कुमार ,दिनेश कुमार और चार अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है ।

गैर मान्यता प्राप्त स्कूलों को जारी हुआ नोटिस

प्रयागराज। कौड़िहार के 16 गैर मान्यता प्राप्त स्कूलों को नोटिस दी गई है। खंड शिक्षाधिकारी ओम प्रकाश मिश्र ने स्कूल बंद न होने पर प्रबंधकों पर एफआईआर दर्ज कराने की चेतावनी दी है। जिन स्कूलों को नोटिस दी गई है उनमें सेकेंडरी स्कूल मेंडारा, मातावदल जूनियर हाईस्कूल पूरे घासी, रामा शिक्षण संस्थान भीटी आनापुर, स्वामी रामहर्ष जूनियर हाईस्कूल पारसपुर, आरएन पब्लिक स्कूल पारठपुर, एबी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दुबरा, प्रांजल पब्लिक स्कूल कसारी, सत्यम शिवम शुभम इंटर कॉलेज टिकरी, केएस मेमोरियल दासापुर, एसपी पब्लिक स्कूल मूसेपुर, जीडी पब्लिक स्कूल रामपुर, बीएस इंटर कॉलेज अठरामपुर, रामसूरत राजकली रसूलपुर, आलिम मेमोरियल जूनियर हाईस्कूल रसूलपुर, श्यामा विद्या मंदिर रसूलपुर और श्री महादेव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शामिल हैं।

मथुरा डीएम को हाईकोर्ट ने जारी किया गैर-जमानती वारंट

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अदालती आदेश की अवमानना मामले में मथुरा के जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल के खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किया है। अदालत ने पुलिस को मामले की अगली सुनवाई पर चहल को उसके समक्ष पेश करने का निर्देश दिया है। बृजमोहन शर्मा और तीन अन्य लोगों द्वारा दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव ने कहा, मथुरा के डीएम द्वारा 18 अप्रैल 2022 को पारित आदेश कुछ और नहीं, बल्कि उनका तिरस्कारपूर्ण कृत्य है, क्योंकि यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि ऐसा अधिकारी इस अदालत की ओर से पारित आदेश की भाषा और मंशा नहीं समझ सका हो। उल्लेखनीय है कि अदालत ने छह सितंबर 2021 को 22 जुलाई 2016 के उस आदेश को रद्द कर दिया था, जिसमें प्रतिवादियों ने आवेदकों को पेंशन का भुगतान इस आधार पर मना कर दिया था कि नियमित होने से पूर्व की उनकी सेवाओं को पात्रता सेवा के तौर पर नहीं गिना जाएगा, जिससे वे पुरानी पेंशन योजना का लाभ पा सकें। अदालत ने छह सितंबर 2021 के अपने आदेश में कहा था कि बहुत लंबे समय तक दी गई सेवाओं को सेवा पात्रता की गणना करते समय नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

बबीता पटेल पोलवाट में कांस्य पदक प्राप्त कर लहराया परचम

सच हो जाएंगे सारे सपने जब अपनी हिम्मत के साथ हिम्मत देने वालों का साथ मिल जाए

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। खिलाड़ियों की दिशा और दशा बदलने में कोच घनश्याम यादव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ऐसा ही कुछ कर दिखाया है गोल्डन गर्ल के नाम से भारत में प्रसिद्ध बबीता पटेल जो प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में कांस्य पदक जीतकर इलाके ही नहीं बल्कि जनपद प्रयागराज का नाम रोशन किया ।मऊआइमा विकासखंड के अबदालपुर खास तीली का पूरा निवासी रामनिवास पटेल का परिवार किसी परिचय का मोहताज नहीं।बबीता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वाकांक्षी योजना 2 खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स बैंगलोर के कंटीरवा स्टेडियम में 30 अप्रैल से 2 मई के बीच संपन्न हुआ जिसमें बबीता पटेल ने 3 . 50 मीटर ऊंची छलांग लगाकर भारत में कांस्य पदक प्राप्त कर अपने माता-पिता का नाम रोशन किया । बबीता पटेल मौजूदा समय में भोपाल स्थित तात्या टोपे स्टेडियम टीटी नगर भोपाल में राष्ट्रीय प्रशिक्षक घनश्याम यादव के सानिध्य में पोलवाट का प्रशिक्षण ले रही है।

कोच घनश्याम के साथ बबीता

बधाई देने वालों का लगा ताता : रविवार को बबीता पटेल की इस उपलब्धि की जानकारी मिलते ही तीली का पूरा गांव में जश्न का माहौल रहा। पिता रामनिवास पटेल माता सावित्री देवी की खुशी देखने लायक रही। इस अवसर पर पूरे दिन बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। फूलपुर सांसद केसरी देवी पटेल, सोरांव विधायक गीता पासी, मऊआइमा ब्लाक प्रमुख इम्तियाज समी पूर्व विधायक सत्यवीर मुन्ना पूर्व ब्लाक प्रमुख सुधीर मौर्य जिला पंचायत सदस्य हिंदू अभिषेक यादव विधान परिषद सदस्य सुरेंद्र चौधरी, समदरिया बालिका महा विद्यालय के प्रबंधक आशीष दुबे प्रधान संघ अध्यक्ष तीरथ यादव सहित दर्जनों जन प्रतिनिधियों ने बधाई दिया।

आवश्यक हो तभी धूप में बाहर निकलें

अखंड भारत संदेश

सहसों। भीषण गर्मी में धूप से बचते हुए ठंडे पेय पदार्थों से परहेज करें। नवीन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सहसों में रविवार को मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेला में प्रभारी चिकित्सक डॉ विमल चौरसिया ने चिकित्सीय परीक्षण के पश्चात लोगों को सलाह दी कि वे चिलचिलाती धूप में निकलने से परहेज करें। इसके साथ-साथ ठंडे पेय पदार्थों से बचें। अन्यथा अधिक तापमान के कारण शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है। लापरवाही करने पर डायरिया, वायरल फीवर सहित अन्य बीमारी हो सकती है। महिला चिकित्सक डॉ किरण ने उपस्थित महिलाओं एवं गर्भवती माताओं को सलाह दी कि वे आवश्यक हो तभी धूप व गर्मी में घर से बाहर निकले। इस दौरान गर्भवती माताएं अपनी सेहत पर विशेष ध्यान देते हुए लगातार स्वच्छ पेयजल के साथ पौष्टिक आहार पर विशेष ध्यान दें। आरोग्य मेले मे होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ अजीत सिंह यादव ने उपस्थित महिलाओं एवं बच्चों को सलाह दी कि वे किसी भी कीमत पर धूप से घर पहुंचने पर ठंडे पेय पदार्थ न लें। अन्यथा उन्हें डायरिया के अतिरिक्त चेचक सहित अन्य बीमारी होने की संभावना अधिक रहेगी। उन्होंने कहा वर्तमान समय में गांव में चेचक का प्रभाव दिखाई दे रहा है। जिसके लिए सभी लोग होम्योपैथी की दवा का प्रयोग जरूर करें ताकि स्वयं के साथ पूरा परिवार सुरक्षित रहे। आयुर्वेद चिकित्सक डॉ अजय प्रताप सिंह ने गठिया के मरीजों को चिकित्सीय परीक्षण के पश्चात कहा कि वे गर्मियों में अधिक से अधिक स्वच्छ जल का सेवन करें। इसके अलावा खट्टी चीजों से परहेज करते हुए नियमित योगा व व्यायाम जरूर करें। मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले में सत्तावन महिला , पुरुष एवं बच्चों का चिकित्सीय परीक्षण कर परामर्श एवं निशुल्क दवायें दी गई। इसी तरह होम्योपैथिक के पन्द्रह तथा आयुर्वेद के दस मरीजों का चिकित्सीय परीक्षण कर उन्हें परामर्श व निशुल्क दवाएं दी गई।

छह जून तक फाफामऊ पुल पर रहेगी भारी वाहनों की नो इंट्री

प्रयागराज। चंद्रशेखर आजाद सेतु फाफामऊ पुल पर अब छह जून तक भारी वाहनों की नो इंट्री रहेगी। पुल के जरिए शहर की ओर आने वाले भारी कामर्शियल वाहन, बस और छोटे कामर्शियल वाहनों को नवाबगंज, सोरांव बाईपास से डायवर्ट कर दिया जाएगा। शहर से भारी वाहन झूंसी के रास्ते लखनऊ, रायबरेली, प्रतापगढ़ की ओर जा सकेंगे। रूट डायवर्जन शांतिपुरम में चल रहे सीवेज पंपिंग स्टेशन के निर्माण के चलते किया गया है। इससे राहगीरों की समस्या बढ़ने की बात कही जा रही है।बताया गया है कि शांतिपुरम में बसना नाले के पास सीवेज पंपिंग स्टेशन बनाने और सीवर लाइन बिछाने का काम चल रहा है। ऐसे में प्रयागराज-अयोध्या राष्ट्रीय राजमार्ग पर आवागमन करने वाले वाहनों के लिए डायवर्जन प्लान लागू किया गया है। इससे पहले फाफामऊ पुल की मरम्मत का काम चल रहा था, जिसके चलते बड़े वाहन से लेकर कार तक की नो इंट्री की गई थी। अब इसी क्रम में सीवर लाइन के कारण भी पुल पर भारी वाहनों की आवाजाही को प्रतिबंधित किया गया है। एसपी ट्रैफिक का कहना है कि सीवर लाइन बिछाने और फिर सड़क बनाने में लगभग एक माह का वक्त लगेगा, जिसे देखते हुए छह जून तक डायवर्जन किया गया है। यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए पर्याप्त संख्या में पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है।

यूपीएचईएससी असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती में गैर राज्यों का अनुभव भी नियुक्ति में मान्य होगा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गैर राज्यों के महाविद्यालयों में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर शैक्षणिक अनुभव को उत्तर प्रदेश क़के महाविद्यालय की सेवा में जोड़ने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति सिद्धार्थ ने डॉ. अनूप कुमार पांडेय की याचिका पर अधिवक्ता सीमांत सिंह को सुनकर दिया है। कोर्ट ने छत्तीसगढ़ के दो सरकारी महाविद्यालयों में प्राप्त शैक्षणिक अनुभव को याची की सेवा में जोड़कर उसे प्रोन्नति व वेतन वृद्धि आदि सभी लाभ देने का निर्देश दिया है।याची ने कोर्ट को बताया कि याची की नियुक्ति साकेत महाविद्यालय अयोध्या में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर हुई है। इससे पूर्व वह छत्तीसगढ़ के दो सरकारी महाविद्यालयों में असिस्टेंट प्रोफेसर फिजिक्स के पद पर अपनी सेवाएं दे चुका है। इस आधार पर याची कैरियर एडवांसमेंट स्कीम के तहत प्रमोशन व सीनियर स्केल पाने का अधिकारी है लेकिन निदेशक उच्च शिक्षा ने याची को यह लाभ देने से इनकार कर दिया है।शैक्षणिक अनुभव नहीं जोड़ा जा रहा है। अधिवक्ता का कहना था कि 2018 के यूजीसी रेगुलेशन के अनुसार किसी भी राज्य के महाविद्यालय में किए गए कार्य को अन्य राज्य के महाविद्यालय की सेवा अवधि में जोड़ा जाएगा। उच्च शिक्षा निदेशालय के अधिवक्ता का कहना था कि यूजीसी रेगुलेशन 2010 और राज्य सरकार के शासनादेशों में ऐसी कोई शर्त नहीं दी गई है।याची के अधिवक्ता का कहना था कि 2010 के यूजीसी रेगुलेशन को 2018 के रेगुलेशन ने रिपील कर दिया है। कोर्ट ने याची को अन्य महाविद्यालयों में की गई सेवा अवधि को वर्तमान सेवा में जोड़े जाने का हकदार मानते हुए लाभ देने का निर्देश दिया है।

सेन्ट्रल एकेडमी में मनाया गया विश्व श्रमिक दिवस

झूंसी। आवास विकास कॉलोनी योजना 3 स्थित सेंट्रल एकेडमी में विश्व श्रमिक दिवस लाभ के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्था के निदेशक एस. के.तिवारी व प्रधानाचार्य ए.के.पांडेय जी विद्यालय के सभी कर्मचारियों , वाहन चालकों व आयाओं को मिठाई खिलाकर व माल्यार्पण करके अभिनन्दन किया।

उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए निदेशक ने कहा कि विश्व के समग्र निर्माण में श्रमिकों व कर्मचारियों का अमूल्य योगदान है। किसी भी संस्था के लिए ये सभी नींव के पत्थर हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने सभी का आह्वान किया कि हम सभी श्रमिकों व कर्मचारियों को समान दृष्टि से देखें। हमारे इस व्यवहार से ही मानवता में समभाव निर्मित हो सकता है। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समरोह मधु श्रीवास्तव, रात्रि डे, श्याम जी ,संजीव वर्मा, किरन सिंह, सत्येंद्र चतुवेर्दी, सुधांशु गुप्ता आदि रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत रत्योंरा करपिया वि0 खं0 कोरांव प्रयागराज

(निविदा सूचना)

ग्राम पंचायत रत्योंरा करपिया विकासखंड कोरांव जनपद प्रयागराज में 14वां वित्त, 15 वा वित्त एवं चतुर्थ राज्य वित्त आयोग, मनरेगा एवं स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत हैंडपंप मरम्मत, रिबोर, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, पाइप खडजा निर्माण, खड़ंजा मरम्मत, सोलर लाइट, डस्टबिन, सफाई किट व सामुदायिक शौचालय का निर्माण आदि में प्रयुक्त होने वाली सामग्री जैसे इंटरलॉकिंग ईंट, लाल ईंट, बालू, गिट्टी, एसएल डब्ल्यूएम, सरिया, स्टोन, पत्थर, स्टोन ग्रिट, जीएसबी, दरवाजा, पेंट, टाइल्स, ऑपरेशन कायाकल्प के अंतर्गत समस्त कार्य, कोरोना वायरस संबंधित साफ सफाई का कार्य व चबूतरा निर्माण, मास्क, सेनीटाइजर, स्प्रे मशीन, दस्ताना, थर्मल स्कैनिंग मशीन, पंचायत भवन, अंत्येष्टि स्थल के निर्माण मरम्मत एवं अस्थाई गोवंश आश्रय स्थल का निर्माण एवं मरम्मत एवं भूसा आपूर्ति आदि कार्यों में आपूर्ति की आवश्यकता है। आपूर्तिकर्ता व्यापार कर वाणिज्य कर आयुक्त कार्यालय में पंजीकृत हो, निविदा आमंत्रित की जाती है। दिनांक 02 मई2022 से दिनांक 6मई2022 तक निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय में जमा होगा। निविदा दिनांक 9मई 2022 को ग्राम पंचायत कार्यालय में समिति के समक्ष खोली जाएगी। निविदा कोटेशन स्वीकृत अस्वीकृत करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास सुरक्षित होगा। सामग्री की मात्रा पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगी। उक्त निविदा वर्ष 2022 में कराए जाने वाले समस्त विकास कार्य हेतु प्रभावी होगी।

शशिकांत कुशवाहा
(ग्राम प्रधान)
ग्रा0 पं0 रत्योंरा करपिया
वि0खं0 कोरांव प्रयागराज

इंद्र बहादुर सिंह
(ग्राम पंचायत अधिकारी)
ग्रा0 पं0 रत्योंरा करपिया
वि0खं0 कोरांव प्रयागराज

करछना तहसील का जिया नाम का तालाब भीषण गर्मी में जीव प्राणियों के लिए वरदान

संतोष यादव

करछना। प्रयागराज जमुनापार की प्रमुख एवं प्राचीन तहसील करछना के टोंस नदी कटका के पास स्थित गांव कचरा जो कटका गांव में लगता है और कचरा और कचरी गांव के वाडर पर जिया नाम से प्रसिद्ध तालाब में कभी भी पानी का अकाल नहीं हुआ, इस कारण यहां जीव प्राणियों का ठहराव चर्चा में शामिल हैं, एक ओर जहां क्षेत्र में पड़ रही भीषण गर्मी से तालाब, कुआं, पोखरो की सूखने का सिलसिला जारी है। जिससे बेजुबान जानवर जीव जंतुओं के लिए पानी की संकट गहराने लगा है। तो वहीं प्यास बुझाने के लिए जंगल में रहने वाले जानवर भी गांव की तरफ रुख करते हुए देखे जाते हैं। इसी तरह करछना क्षेत्र में 250 से अधिक तालाब बने है। लेकिन कुछ गिने चुने तालाबों को छोड़कर ज्यादातर तालाब सूख गए हैं, या सूखने के कगार पर है। लेकिन क्षेत्र के कचरा गांव स्थित एक ऐसा भी तालाब है जो सदियों से जीवो के लिए वरदान साबित होता चला है। माना जाता है कि जिया का तालाब नाम से चर्चित प्राचीनतम इस तालाब में भीषण गर्मी के दिनों में भी पानी भरा रहता है। जिससे पेयजल की समस्या कभी उत्पन्न नहीं होती और जीव-जंतुओं को पानी के लिए भडटकना नहीं पड़ता। बस्ती से 1 किलोमीटर की दूरी पर बने इस तालाब में रोजाना हजारों की संख्या में पशु पक्षी पहुंचकर अपनी प्यास को बुझाते हैं। कचरी गांव निवासी प्रताप बहादुर सिंह बताते हैं कि 55 व 60 के दशक में अत्यधिक संसाधन न होने के कारण कई गांव के ग्रामीण पुरुष, महिलाएं इस तालाब में नहाया करते थे। इस तालाब पर दो पक्के घाट बनाए गए हैं। लोगों की सहजता से तालाब के घाटों पर स्वच्छता और सुंदरता हमेशा बनी रहती थी। ज्यादातर लोग साबुन का उपयोग न करके काली मिट्टी को लगाकर नहाते थे। सुबह से लेकर शाम तक तालाब के घाट पर लोगों का जमावड़ा लगा रहता था। तालाब का पानी इतना स्वच्छ रहता था कि लोग खाना पकाने के उपयोग में भी लेते थे। लेकिन समय के परिवर्तन व रख रखाव के अभाव में जिया का तालाब का अस्तित्व धीरे धीरे खोता जा रहा है। हालांकि बीते कुछ वर्षों में सरकार ने पानी संरक्षण हेतु तालाबों की जीर्णोद्धार व सौन्दरीकरण के लिए विभिन्न योजनाओं के तहत कार्य कराया जा रहा है। लेकिन जमीनी स्तर पर कार्य न किए जाने से चारो तरफ गंदगी व झाड़ियों का अंबार लग गया।

मजदूर दिवस पर वक्ताओं ने मजदूरों के हक की उठाई आवाज

जिला पंचायत सभागार में जिला ट्रेड यूनियन ने मनाया मई दिवस

जिला पंचायत सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बोलते वक्ता।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विश्व मजदूर दिवस के अवसर पर जिला ट्रेड यूनियन काउंसिल प्रतापगढ़ के तत्वावधान में जिला पंचायत सभागार में मई दिवस मनाया गया। इस अवसर पर ग्रामीण बैंक कर्मियों के वरिष्ठ नेता बीपी त्रिपाठी उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण श्रमिक यूनियन प्रतापगढ़ के अध्यक्ष आर डी यादव आंगनबाड़ी कर्मचारी संगठन की जिला अध्यक्ष माधुरी सिंह के तीन सदस्य अध्यक्ष मंडल ने समारोह की अध्यक्षता व संचालन उत्तर प्रदेश बैंक एंप्लाइज यूनियन एवं जिला ट्रेड यूनियन काउंसिल के मंत्री नरेंद्र प्रसाद मिश्र ने किया।

इस अवसर पर सुरेश चंद शर्मा ने एक गीत प्रस्तुत किया। सभी आगंतुकों का स्वागत उत्तर प्रदेश बिजली कर्मचारी संघ के जिला मंत्री रामसूरत ने किया। समारोह का उद्घाटन जिला ट्रेड यूनियन काउंसिल के संरक्षक एवं सीपीआई के जिला मंत्री रामबरन सिंह ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के उत्तर प्रदेश के मंत्री हेमंत नंदन ओझा रहे। सम्मेलन को संबोधित करने वालों में प्रमुख रूप से युवा कम्युनिष्ट नेता राजमणि पांडे किसान सभा के जिला महामंत्री निर्भय प्रताप सिंह डाक कर्मियों के नेता नागेंद्र तिवारी मजदूर नेता महारानी दिन विश्वकर्मा उमेश चंद्र कोरी राजेंद्र बौद्ध आदि रहे। इस अवसर पर वक्ताओं ने एक मई 1886 में 8 घंटे के काम के अधिकार के आंदोलन से शुरू हुए अब तक के श्रमिक आंदोलन पर चर्चा की। इस अवसर पर प्रमुख रूप से राघवेन्द्र कुमार मिश्र, रेशमा देवी, शिव कुमार सिंह, अमर बहादुर, रामअचल वर्मा, जगत प्रकाश, मोतीलाल वर्मा, राजकुमार, अर्जुन सिंह, अनिल कुमार, दिनेश कुमार, विवेकानंद श्रीवास्तव, राधेश्याम पटेल आदि सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

देश के विकास में श्रमिकों की भूमिका महत्वपूर्णः सचान

अखंड भारत संदेश

श्रमिकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करते अतिथिगण।

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस पर विकास खंड मान्धाता के सभागार में कार्यक्रम आयोजित कर क्षेत्र के श्रमिकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में खण्ड विकास अधिकारी अशोक कुमार सचान मौजूद रहे। पूर्व प्रधान अशोक कुमार सिंह ने कार्यक्रम की अध्यक्षता और संचालन ग्राम पंचायत अधिकारी ओम प्रकाश सरोज ने किया। इस मौके पर खंड विकास अधिकारी अशोक कुमार सचान ने कहा कि उन्होंने राष्ट्र निर्माण में खुद को समर्पित करने वाले देश के सभी श्रमिक भाई बहनों को अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं है। कार्यक्रम में आए श्रमिको को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया और श्रम विभाग में पंजीकृत करने के लिए प्रेरित करते हुए श्रमिकों को उनके अधिकारों के प्रति भी जागरूक किया गया। इस मौके पर ए पी ओ संतोष कुमार यादव, ग्राम पंचायत अधिकारी अभिषेक पटेल, महेंद्र कुमार सरोज, शांति प्रकाश शर्मा, मनोज कुमार, अखंड प्रताप, चंद्रप्रताप पटेल,प्रधान फूलचंद्र पटेल, राम अजोर पटेल, कुलदीप पटेल सहित कई गांवों के ग्राम प्रधान व क्षेत्र पंचायत सदस्य और सभी ब्लॉककर्मी मौजूद रहे।

आधे अधूरे नवनिर्मित भवन में रहने को मजबूर ग्राम विकास अधिकारी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। एक तरफ प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी जी यू0पी0 के सभी ग्राम पंचायतों को हाई प्रोफाइल बनाने के लिए ग्राम पंचायतों में बने पँचायत भवन को मिनी सचिवालय का दर्जा देने के लिए एक सचिवालय पर सभी उपकरणों से लैस करने में लाखों रुपये खर्च कर रही है तो वही दूसरी तरफ ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर परिसर में बन रहे नवनिर्मित अधूरे पड़े भवन में ग्राम विकास अधिकारियों को आवंटित किए गए कमरों की हालत बड़ी दयनीय है जिसे देखकर ऐसा लगता है कि किसी बन्द कमरे में इनको रहने की सजा मिली है जिसमे ठंडा पानी पीने के साथ बिजली चले जाने पर बिजली तक नसीब नही हो रही है भीषण गर्मी में बिजली के चले जाने पर पसीने पसीने हो रहे है जिनके साथ ग्राम पंचायतों के ग्राम प्रधान व गाव की जनता भी गर्मी से तड़पते दिखाई दे रहे हैं। ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर के ग्राम विकास अधिकारियों के आवास कार्यालय पर जिले के जिम्मेदार अधिकारियों की नजर नहीं पड़ रही है।

ब्लाक मुख्यालय पर श्रमिकों को सम्मानित करतें बीडीओ अपर्णा सैनी

श्रमिक दिवस पर सम्मानित किये गये श्रमिक

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर के सभागार कक्ष में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस पर रविवार को खण्ड विकास अधिकारी अपर्णा सैनी ने मनरेगा योजनान्तर्गत सौ दिन रोजगार प्राप्त ग्राम पंचायत परियावां, कडरौ, बरियावां सहित अन्य ग्राम पंचायतों के श्रमिकों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया और कहा कि आज के दौर में श्रमिकों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। अपने परिवार का खर्च चलाने के लिए गर्मी, ठंडक, बरसात की परवाह नही करते चाहे तन पर कपड़ा हो या न हो लेकिन उनको अपनी मेहनत मजदूरी की चिन्ता के साथ परिवार चलाने की चिन्ता लगी रहती है। इस अवसर पर ज्ञानेंद्र कुमार, मायाशंकर तिवारी, ब्यास कुमार मौर्य, निर्भय प्रताप सिंह,व तकनीकी सहायक, ग्राम रोजगार सेवक, महिला मेठ श्रमिक सहित ब्लाक के समस्त ग्राम विकास अधिकारी व स्टाफ मौजूद रहे।

बच्चा बैंक के श्रमदान से निखर उठा रेलवे पार्क

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्रमिक दिवस के मौके पर बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप बीबीएफजी के वैलेंटियरों ने श्रमदान करके रेलवे स्टेशन पार्क की तस्वीर बदलने का प्रयास किया है। रविवार को तड़के पार्क की साफ सफाई की गई। अंदर पड़ी गंदगी कूड़ा कर्कट उठाकर बाहर किया गया। यात्रियों से पार्क की हरियाली में सहयोग मांगा। कचरा फेंक कर पार्क को गंदा न करने की अपील की गई। यात्रियों ने बैंक का कार्य की सराहना की। इस कार्य में रेल प्रशासन का भी सहयोग मिला। इस काम में ग्रुप के सहयोगी राजकुमार मोदनवाल, वीरेंद्र कुमार, भरत यादव, नवाब अली और रेलवे की सफाई करने वाली टीम और उनके सुपरवाइजर का भी सहयोग मिला।

हत्या के अभियोग में वांछित दो बहने गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। हत्या के अभियोग में वांछित दो सगी बहनों को जेठवारा पुलिस ने गिरफ्तार कर आज जेल भेज दिया। घटना के अन्य आरोपी पिता,पुत्र अभी भी फरार है। थाना क्षेत्र के गौरा गॉव में चार दिन पहले जमीनी विवाद में एक महिला संगीता मौर्या की घटना स्थल पर ही मौत हो गयी थी। जिसमें पीड़ित की तहरीर पर पिता,पुत्र और दो बेटियों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया था। आज मुखविर खास की सूचना पर चैकी प्रभारी कटरा गुलाब सिंह राकेश कुमार भदौरिया ने घटना में अभियुक्त दो सगी बहनों शालू मौर्या पुत्री कमलाकांत मौर्या निवासी गौरा जेठवारा एवं उसकी बड़ी बहन डॉली मौर्या पत्नी अनुपम कुशवाहा निवासी दहियावां थाना सोराव को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जबकि अन्य अभियुक्त पिता, पुत्र अभी पुलिस की पकड़ से बाहर हैं।

रेलवे फुट ओवर ब्रिज पर पड़ा स्लैब

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्लेटफार्म के बाहरी हिस्से वाले फुट ओवर ब्रिज पर स्लैब पड़ने का काम शुरू कर दिया गया है। पुल के जून तक बनकर तैयार हो जाने की उम्मीद है। पुल के बन जाने से मुसाफिरों के साथ साथ बाहरी हिस्से के लोगो के जाने में सुविधा होगी। पुराना पुल टूटने से पूर्वी सहोदर पुर वालों को आने जाने में काफी दिक्कत हो रही है। नया पुल बना शुरू में केवल प्लेटफार्म ही जुड़ पाए। बाहर के लोगों के सुविधा मिल सके। इसके लिए बाद में पुल का विस्तार किया गया। इस समय काम तेजी से चल रहा है। प्लेटफार्म के बाहरी हिस्से पर स्लैब डाला जा रहा है। रविवार को भी स्लैब का काम हुआ।

करंट की चपेट में आने से युवक की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। वाटर एटीएम में खराबी दूर कर रहे विद्युत मैकेनिक की करंट की चपेट में आने से दुखद मौत हो गयी। मृतक के शव को पुलिस ने पंचनामाकर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया है। लालगंज तहसील में अधिवक्ताओं की मांग पर क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना द्वारा वाटर एटीएम की सौगात दी गयी है। इसकी देख रेख की जिम्मेदारी नगर पंचायत की कार्यदायी संस्था को मिली है। वकीलों ने शनिवार को वाटर एटीएम के काम न करने को लेकर शिकायत की थी। शिकायत पर वाटर एटीएम में खराबी को दूर करने के लिए अंतू थाना के अदमापुर गांव निवासी अमरेन्द्र प्रताप सिंह 35 पुत्र राकेश सिंह दिन में वाटर एटीएम पहुंचा। वाटर एटीएम के फिल्टर की कमी को ठीक करते समय वह करंट की चपेट में आ गया। हालाकि अमरेन्द्र की मौके पर ही मौत हो गयी । एहतियातन उसे नगर स्थित ट्रांमा सेंटर ले जाया गया। देर रात चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

कोतवाली स्टाफ बताकर उड़ाई चेन, हड़कम्प

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। पुलिसकर्मी बन आरोपियों ने पीड़ित को टप्पे बाजी का शिकार बना लिया। कोतवाली की नगर पंचायत बाजार में जलेशरगंज रोड पर सुंदरलाल सोनी ने आभूषण की दुकान खोल रखी है। शनिवार की शाम चार बजे उसकी दुकान पर बाइक सवार दो आरोपी पहुंचे। आरोपियों ने खुद को लालगंज कोतवाली पुलिस का नया स्टाफ बताया। आरोपियों ने सुंदरलाल से बातचीत करते ठंडा पानी मांगा। सुंदरलाल पानी लेने निकला तो आरोपियों ने पीड़ित की पत्नी से अपने गले में पहने सोने की चैन की बात की। पीड़िता ने बताया कि उसने ग्राहक का चेन पहन रखा है। इस पर आरोपियों ने पुलिसिया अंदाज में चेन दिखाने को कहा। महिला ने जैसे ही चैन उतार कर दिया। आरोपी बातचीत करते चेन लेकर निकल गये। काफी देर तक आरोपियों का पता नही चला और इस बीच सुंदरलाल पानी लेकर लौट आया। ठगी का वाकया समझते ही सुंदर लाल ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल भी पहुंचे और पीड़ित से घटना की जानकारी ली।

रेलवे फाटक पर ओवर ब्रिज बनाने का सर्वे शुरू

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज-लखनऊ रेल मार्ग पर परियावां कालाकांकर रेलवे स्टेशन के 35 सी रेलवे फाटक से गुजरने वाले ट्रेनों का संचालन बढ़ाने के लिए दोहरीकरण के साथ रेल विभाग ओवरब्रिज की बनाने की तैयारी कर रहा है जिसकी रविवार को रेल विभाग के एसडीओ एस के सिंह सेतु निगम प्रतापगढ़ की सर्वे टीम ने रेलवे फाटक के दोनों तरफ की रेल विभाग के साथ पीडब्लूडी,आबादी, व ग्राम समाज की जमीन को चिन्हित किया रेलवे फाटक पर ओवर ब्रिज बनाने के लिए रेल विभाग को दोनों तरफ तीन तीन सौ मीटर लम्बी खाली जगह व चैड़ी सड़क चाहिए जब कि मौजूदा सीसी सड़क अनुमानित चार मीटर चैड़ी है। यदि सब कुछ ठीक ठाक रहा तो ट्रेन के आवागमन के दौरान रेलवे फाटक के बन्द होने पर दोनों तरफ लगने वाले वाहनों के लम्बे जाम से लोगो को छुटकारा मिल सकता है।

इनामिया बदमाश सभापति और उसके भाई को प्रतापगढ़ लेकर आई पुलिस

दोनों अभियुक्तों को न्यायालय में किया गया पेश

पुलिस की गिरफ्त में इनामी सभापति व सुभाष यादव।

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कई महीनों से फरार चल रहे पट्टी तहसील क्षेत्र के आसपुर देवसरा थाना अंतर्गत विनैका का गांव के रहने वाला प्रमुखपति सभापति यादव और उसके कुख्यात भाई सुभाष यादव को प्रतापगढ़ की पुलिस बंगाल के सियालदह से रविवार की भोर प्रतापगढ़ ले आई है और न्यायालय में पेश किया।

पट्टी तहसील क्षेत्र के विनैका गांव का रहने वाला सभापति यादव 2 साल से मामले में फरार चल रहा है। उसके फरार होने के बाद शासन ने कर्रा किया और उस पर इनाम की राशि को बढ़ाते हुए पांच लाख कर दिया। लगभग 8 दिन पहले पश्चिम बंगाल के सियालदाह रेलवे स्टेशन पर जीआरपी पुलिस ने दोनों भाइयों को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद दो दिन बाद प्रतापगढ़ पुलिस सियालदाह से दोनों वांछितों को लाने के लिए सियालदाह गई थी। उसके बाद प्रतापगढ़ पुलिस अधीक्षक कार्यालय के बाद दोनों को मेडिकल के बाद सीजीएम कोर्ट में पेश किया गया।

सभापति यादव पर 46 तो सुभाष यादव पर दर्ज है 29 मुकदमे

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आसपुर देवसरा थाना अंतर्गत विनैका का गांव का रहने वाला सभापति यादव और उसके भाई पर गंभीर धाराओं में कई मामले दर्ज हैं। सभापति यादव पर 46 तो सुभाष यादव पर कुल 29 मुकदमे विभिन्न थानों में दर्ज है, जिसमें कई गंभीर किस्म के और हत्या के मामले शामिल है। डेढ़ साल पहले पट्टी कोतवाली क्षेत्र के मुजाही बाजार में एक घटना के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया तो सभापति यादव और सुभाष यादव दोनों फरार हो गए।

प्रशासन ने कर्रा करते हुए दोनों के विनैका स्थित आवास पर बुलडोजर चलवाया तो जमकर राजनीति भी हुई लेकिन दोनों भाई फरारी काटते रहे और प्रशासन लगातार दोनों पर इनाम की राशि बढ़ाते बढ़ाते 5 लाख तक कर दिया सभापति यादव राजनीति में काफी दिलचस्पी लेता रहा। कई बार चुनाव लड़ने वाला सभापति कई राजनैतिक दलों में डुबकी लगा चुका है।

एमडीपीजी कालेज में हुआ सेमिनार का आयोजन

एनएसएस की महिला इकाई द्वारा हुआ कार्यक्रम

एमडीपीजी कालेज में आयोजित सेमिनार में मौजूद अतिथिगण।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुनीश्वर दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 मनोज मिश्र के आदेशानुसार पंचायतीराज के सुदृढ़ीकरण में महिलाओं की भूमिका विषय पर एक सेमिनार का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना की महिला इकाई की कार्यक्रमाधिकारी डा0 अमिता मिश्रा, पुरुष इकाई के कार्यक्रमाधिकारी डा0 शैलेश कुमार पाण्डेय तथा रेन्जर्स की कार्यक्रमाधिकारी डा0 ऊषा दुबे के कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन में किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि एवं महाविद्यालय के चीफ प्रॉक्टर डा0 राधाकृष्ण दुबे द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता चीफ प्राक्टर डा0 राधाकृष्ण दुबे के द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन बी. एड. विभाग की प्रशिक्षु शिक्षिका शिखा पांडेय व बीएससी की छात्रा शाम्भवी सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में डा0 ऊषा दुबे, डा. निशा सिंह, डा0 शैलेश कुमार पाण्डेय, डा0 मुक्ता वर्मा, डा0 अमिता मिश्रा, डॉ0 अभिषेक सिंह द्वारा अपने विचार रखे गए। अंत में इस कार्यक्रम के अध्यक्ष व महाविद्यालय के चीफ प्राक्टर डा0 राधाकृष्ण दूबे ने सभी के प्रति अभार जताया। कार्यक्रम में जूलाजी विभाग से एसोसिएट प्रो. डा0 अमिता मिश्रा, असि. प्रो. डा. अभिषेक सिंह, व बी. एड. विभाग से एसोसिएट प्रो. डा0 ऊषा दुबे, एसोसिएट प्रो. डा0 गीता शुक्ला, असि. प्रो. डा0 शैलेश कुमार पाण्डेय, डा. निशा सिंह (मनोविज्ञान), डा. मुक्ता वर्मा (इतिहास) आदि मौजूद रहे।

पीबीपीजी कालेज के प्राचार्य डा0 बृजभानु बने प्रोफेसर

अखंड भारत संदेश

डा0 बृजभानु सिह।

प्रतापगढ़। पीबीपीजी कालेज के प्राचार्य डॉक्टर बृजभानू सिंह को प्रोफेसर के पद पर जनपद में एसोसिएट प्रोफेसर से मिले प्रमोशन पर जनपद के प्रबुद्ध वर्ग ने जताई खुशी। प्रतापगढ़ रियासत के राजा वरिष्ठ भाजपा नेता राजा अनिल प्रताप सिंह, पूर्व न्यायाधीश ज्ञान चंद्रा, अनुराग प्रताप सिंह रज्जू राजा, शशांक भूषण सिंहह्ल शंकू राजाह्ल, उमेश प्रताप सिंह, गिरधारी सिंह वरिष्ठ भाजपा नेता, राजेश सिंह महामंत्री बीजेपी, आशीष श्रीवास्तव महामंत्री बीजेपी,संजीव आहूजा, डॉक्टर पीयूष कांत शर्मा, डॉक्टर आर के सिंह, श्रीमती श्रद्धा सिंह, डॉक्टर राकेश सिंह प्रबंधक बाबू संत बख्श सिंह एजुकेशनल ट्रस्ट, राकेश सिंह प्रबंधक, वीएस मेमोरियल पब्लिक स्कूल, डॉक्टर प्रभात शर्मा, प्रिंसिपल प्रभात एकेडमी, परितोष जी विभाग प्रचारक राष्ट्रीय स्वयं सेवक, हरीश जी विभाग कार्यवाह, रवि सिंह, राघवेंद्र सिंह डीजीसी रेवन्यू, कत सौरभ पाण्डेय जिला कार्यवाह, अखिलेश पांडेय प्राचार्य डिग्री कालेज पट्टी व अध्यक्ष काशी प्रांत एवीबीपी, गोकुल नाथ श्रीवास्तव प्रबंधक मालती इंटर कालेज व वरिष्ठ भाजपा नेता, धर्मेंद्र सिंह कुशफरा, अमितेंद्र श्रीवास्तव, संतोष भगवन, क्षितिज श्रीवास्तव, मुन्ना सिंह, राजीव पांडेय, शिव कुमार सिंह आदि ने बधाई दी है।

सुधीर कुमार बने नवाबगंज थाना प्रभारी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने कानून ब्यवस्था चाक चैबंद बनाए रखने के लिए नवाबगज थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह को जिला मुख्यालय वापस बुला लिया जिनका गैर जनपद स्थानांतरण हो गया और इनकी जगह कोतवाली प्रशासनिक इंस्पेक्टर सुधीर कुमार सोनी को नवाबगज थाना प्रभारी नियुक्त किया। नवागत थाना प्रभारी सुधीर कुमार ने रविवार को कार्यभार ग्रहण कर ईद त्योहार को लेकर को तीन बजे पीस कमेटी की बैठक आयोजित किया ।

व्यापार मण्डल ने एसपी के साथ की बैठक, समस्याओं पर हुई चर्चा

अखंड भारत संदेश

एसपी सतपाल अंतिल की बैठक में मौजूद जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार।

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने व्यापारियों संग व्यापारिक समस्याओं के कारण और निवारण हेतु पुलिस लाइन स्थित सई कांप्लेक्स में बैठक की, जहां क्षेत्राधिकारी अभय पांडे, एल आई यू इंस्पेक्टर ओ पी सिंह मौजूद रहे। बैठक में उ.प्र.उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी, शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के पदाधिकारी मौजूद रहे। बैठक में ट्रैफिक जाम से निजात दिलाने हेतु प्रशासन द्वारा स्टेट बैंक के सामने पुलिस बैरीकेटिंग लगाने से व्यापारियों के ग्राहकों व सामानों के आवागमन से उत्पन्न समस्याएं, बाबागंज गफ्फार पेट्रोल पंप चैराहे व अन्य प्रमुख चैराहों पर आए दिन होने वाली दुर्घटनाओं के संदर्भ में चर्चा हुई, जिस पर समाधान का आश्वासन दिया गया। बैठक में महामंत्री संजय सोनी, कृष्ण मोहन केसरवानी, अश्वनी केसरवानी, नारायण खंडेलवाल, राहुल केसरवानी, जयप्रकाश खंडेलवाल, अभय खंडेलवाल, धीरज उपाध्याय, पंकज केसरवानी, अख्तर राइन, शकील अख्तर मोनू केसरवानी बंटी, मुन्ना सोनी मौजूद रहे।

यूपी कांप मोबाइल एप के प्रचार के लिए नगर में चपकाये पोस्टर

लोगो को सेवाओ के सम्बंध में किया जागरूक

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। रविवार की दोपहर पट्टी पुलिस ने उत्तर प्रदेश पुलिस की यूपीकांप मोबाइल एप्लीकेशन पुलिस सेवाओं का लाभ उठाने की सुविधा का जगह-जगह प्रचार किया पट्टी । नगर के विभिन्न स्थानों पर पोस्टर चिपका कर लोगों को जागरूक करने के लिए पुलिस ने यह कवायद शुरू किया जिसमें लोगों को जागरूक भी किया गया।रविवार की दोपहर पट्टी पुलिस ने यूपी कांप से संबंधित जानकारी देने के लिए मोबाइल ऐप के बारे में जागरूक करते हुए जगह-जगह पोस्टर चिपकाया। नगर के बैंक आफ बडौदा पट्टी चैक मेन रोड ढकवा मोड़ सहित विभिन्न स्थलों पर पुलिसकर्मी पोस्टर चिपकाते हुए नजर आए। पुलिस कर्मियों ने बताया कि अपने एंड्रॉयड फोन में यूपी कॉप ऐप को डाउनलोड करना पड़ेगा जिसे 27 सुविधाओं शामिल की गई है । एप पर किसी भी अपराध के संबंध में सूचना यूजर द्वारा दिया जा सकता है। वहीं एफ आई आर दर्ज करने की सुविधा भी आम नागरिकों को प्रदान की गई है दिव्यांग और सीनियर सिटीजन के लिए अलग से विकल्प दिया गया है यह बहुत ही सुविधाजनक है।

पत्रकार को पितृशोक

पट्टी, प्रतापगढ़। पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज यूपी संघ के प्रांतीय अध्यक्ष पीसी पांडे की के पिता का रविवार की सुबह आकस्मिक निधन हो जाने पर पत्रकारों में शोक की लहर दौड़ पड़ी। पट्टी तहसील के पत्रकारों ने इस संबंध में एक शोक सभा कर के शोक संवेदना प्रकट किया। अवधेश सिंह ने इस संबंध में एक महत्वपूर्ण बैठक का आहूत किया और लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि पीसी पांडे के पिता का निधन हम सभी के लिए अपूर्णनीय क्षति है।

खबर संक्षेप

चंद्र दर्शन का करें आयोजन-शहर काजी

कौशाम्बी। शहर काजी मुफ्ती खुशनूद आलम एहसानी रजवी ने अपील जारी करते हुए कहा है की 29 रमजानुल मुबारक यानी आज 01 मई 2022 बरोज इतवार मगरिब की नमाज के बाद अपने अपने इलाकों में ईदुल फितर के चाँद के दर्शन का आयोजन करें अगर चाँद नजर आ जाए तो इन नंबरों पर सूचित करें। 7007367485,857482950 ,94540 72571 किन्तु चाँद की तस्दीक ली जा सके।

त्योहारों को शांतिपूर्ण तरीके से कराए सम्पन्न : डीएम

कौशाम्बी। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक द्वारा ईद-उल-फितर व अक्षय तृतीया पर्व के दृष्टिगत कलेक्ट्रेट परिसर स्थित उदयन सभागार में विभिन्न समुदाय के धर्मगुरुओं सम्भ्रान्त गणमान्य व्यक्तियों व अधिकारियों के साथ बैठक कर त्यौहारों को सौहार्दपूर्ण व शांतिपूर्वक मनाने के लिए की अपील गई।

मुख्यमंत्री द्वारा लखनऊ में ई-पेंशन पोर्टल का किया गया उद्घाटन

ई-पेंशन पोर्टल से पेंशन की धनराशि हस्तान्तरित की गयी जिसमें 09 पेंशनर जनपद के भी शामिल

पेंशन पोर्टल कार्यक्रम में बोलते डीएम

पेंशन पोर्टल कार्यक्रम में उपस्थित भीड़

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा लोक भवन सभागार लखनऊ में ई-पेंशन पोर्टल का उद्घाटन किया गया इस कार्यक्रम का सजीव प्रसारण सम्राट उदयन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में किया गया कार्यक्रम में उपस्थित पेंशनरों ने मुख्यमंत्री के उदबोधन को सुना मुख्यमंत्री द्वारा 31 मार्च 2022 को राज्य सरकार की सेवा से सेवानिवृत्त हुए कुल 1230 पेंशनरों को ई- पेंशन पोर्टल के माध्यम से पेंशन की धनराशि उनके खाते में हस्तान्तरित की गयी जिसमें 09 पेंशनर जनपद के भी शामिल है जनपद में वर्तमान में कुल 5518 पेंशनर है। इस अवसर पर जिलाधिकारी सुजीत कुमार प्रभारी वरिष्ठ कोषाधिकारी डॉ देव कुमार यादव सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण व पेंशनर उपस्थित थे ई-पेंशन पोर्टल प्रणाली का उद्देश्य सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के पेंशन प्रकरणों का निस्तारण समयबद्ध रूप से किया जाना, प्रत्येक चरण पर जवाबदेही सुनिश्चित किया जाना तथा इस संबंध में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित किया जाना है यदि किसी प्राधिकारी द्वारा निर्धारित समय अवधि में कार्यवाही पूर्ण नहीं की जाती है तो सिस्टम द्वारा प्रकरण उच्च स्तर के प्राधिकारी को स्वतः अग्रसारित कर दिया जायेगा।

शादी कार्यक्रम के दौरान दो पक्षों में मारपीट कई घायल

कौशाम्बी। सराय अकिल कोतवाली अंतर्गत भगवानपुर चौकी क्षेत्र के ग्राम किसनपुर अम्बारी में शादी कार्यक्रम के दौरान दो पक्षो में मारपीट हुई। घटना में दोनों पक्षों से कई लोग घायल हुए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मामले की पडताल करते हुए छानबीन में जुट गई है। किशुनपुर अंबारी गांव के सजीवन पुत्र बचाई के यहाँ तिलोकोत्सव का कार्यक्रम था। ऐसे में काफी रिश्तेदार भी मौजूद थे। इसी दौरान किसी बात को लेकर शराब के नशे में धुत होकर सजीवन के सहयोगियों ने विपक्ष के ऊपर लाठी डंडे से लैस होकर मार पीट शुरू कर दिए। इतना ही नहीं महिलाओं को भी बेरहमी से तरह मारा पीटा गया। दोनों पक्षो से लगभग आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हुए। दोनों पक्ष सराय अकिल थाना पहुचकर शिकायती पत्र दिया है। इंस्पेक्टर ने दोनों पक्ष से मिली तहरीर के मुताबिक जांच शुरू कर दिया था। वहीं घायलों में घायल देवराज, सुखलाल,मीना देवी,लक्खी देवी,सुनीता देवी,अर्जुन एवं विक्की शामिल हैं। जिनका उपचार चल रहा है।

न्यूज झरोखा

अवधेश बने हिंदू जागरण मंच के जिला संयोजक, यसवंत को सह संयोजक किया गया मनोनीत

कौशाम्बी। हिंदू जागरण मंच का काम हिंदू समाज को एकजुट कर उसे समाज में फैली कुरीतियों और समाज को नुकसान पहुंचाने वाले तत्वों से प्रतिरोध करना है। जिस तरीके से संगठन मेरे ऊपर भरोसा करते मुझे जिले की जिम्मेदारी सौंपी है उस पर खरा उतरने के लिए समाज में एकजुट करने के लिए पूरे तन मन से कार्यक्रम करूंगा। उक्त बातें हिंदू जागरण मंच के नवमनोनीत जिला संयोजक अवधेश नारायण शुक्ला संगठन के जिम्मेदारों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कही। घोषणा प्रयागराज के गोरिया मठ में क्षेत्रीय बैठक में क्षेत्र संगठन मंत्री शिव कुमार व प्रांत संगठन मंत्री शिवनारायण की अगुवाई में आयोजित बैठक में की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रांत संयोजक ने की इस मौके पर बोलते हुए नव मनोनीत जिला संयोजक अवधेश नारायण शुक्ला ने कहा कि जिस तरीके से संगठन के लोगों ने उन पर भरोसा जताते हुए जिले की जिम्मेदारी सौंपी है। वह हिंदू समाज के उत्थान के लिए गांव-गांव निकलकर संगठन को मजबूत करेंगे। मायका जिले में हिंदू धर्म के खिलाफ साजिश हो रही है बड़ी मात्रा में धर्मांतरण बैठके हो रही हैं। उनके विरोध में हिंदू जागरण मंच लोगों को जागरूक कर धर्म के प्रति समर्पित बनाएगा। इस मौके पर प्रांत संगठन मंत्री शिवनारायण ने कहा कि जिला संयोजक के लिए मनोनीत अवधेश में शुक्ला और जिले में सह संयोजक बनाए गए जसवंत सिंह यादव पूरे मनोयोग काम का जिले में संगठन को खड़ा करेंगे। जिला संयोजक बनाए जाने की खुशी में नव मनोनीत जिला संयोजक अवधेश राय शुक्ला के गांव में लोगों ने मिठाई बांटकर एक दूसरे से खुशी का इजहार किया इस मौके पर प्रमुख रूप से गोपी प्रसाद, पप्पू शाक्य, आशीष शाक्य, रामलखन पासी, अर्जुन लाल, मानिकचंद सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

पिता की पुण्यतिथि पर किया भंडारे का आयोजन

कौशाम्बी। परसरा निवासी राजा राम केशरवानी के पुत्र लालजी केसरवानी की 1 मई को पुण्य तिथि है लालजी केसरवानी के पुण्यतिथि के अवसर पर उनके पुत्रों द्वारा भरवारी कस्बे के मेहता रोड में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जहां तमाम लोग पहुंचे और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। बाबा मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड भरवारी कौशांबी के मैनेजिंग डायरेक्टर अमित केशरवानी ने पुण्यतिथि पर पहुँचे लोगो का आभार व्यक्त किया लालजी केसरवानी के पुण्यतिथि पर उनके पुत्र अमित केसरवानी और कपिल केसरवानी ने कहा कि आप सभी का हम हर्दय की गहराइयों से धन्यवाद आभार व्यक्त करते है और आशा करते है कि हमारा आपका साथ यूँही बना रहेगा और आप सभी अपना बहुमूल्य समय निकालकर भंडारे में आए और प्रसाद ग्रहण किया उसके लिए हम हमेशा आभारी रहेंगे मेरे अपनो ने आज मेरे पिता जी की पुण्य तिथि पर ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर मेरा मान सम्मान बढ़ाया है हम आपसे ऐसे ही प्यार की गुजारिश जीवनपर्यन्त करते है लालजी केसरवानी के पुत्रों ने भंडारे में आए सभी लोगों को बहुत बहुत धन्यवाद दिया है।

संवेदनशील स्थानों पर विशेष सतर्कता बरती जाए : डीएम

शान्ति एवं कानून व्यवस्था बिगाडने वालों के विरूद्ध कडी कार्यवाही की जायेगी : एसपी, पर्याप्त विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा द्वारा सम्राट उदयन सभागार में ईद-उल-फितर एवं अक्षय तृतीया त्यौहार पर शान्ति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारियों एवं सम्भ्रान्त नागरिकों के साथ बैठक की गई बैठक में जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा उप जिलाधिकारियों एवं क्षेत्राधिकारियों से अब तक की गयी तैयारियों की जानकारी प्राप्त करने पर बताया गया कि फूट पेट्रोलिंग की जा रही है, पीस कमेटी की बैठक की गयी है तथा तहसीलदार कानूनगो एवं लेखपाल की ड्यूटी लगायी गयी है जिलाधिकारी ने सभी उप जिलाधिकारियों क्षेत्राधिकारियों एवं थाना प्रभारियों को संवेदनशील स्थानों पर विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश देते हुए कहा कि किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरती जाय। उन्होनें सभी ईओ एवं जिला पंचात राज अधिकारी को साफ-सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए कहा कि नाली चोक होने की शिकायत न आने पाये तथा पानी की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित किया जाय उन्होंने सभी ईओ को त्यौहार के दिन कार्यालय में उपस्थित रहकर प्राप्त होने वाली शिकायतों को तत्काल निस्तारित करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिशासी अभियन्ता विद्युत को पर्याप्त विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के साथ ही जेई की ड्यूटी लगाकर सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने प्रभारी मुख्य चिकित्साधिकारी को सीएचसी एवं पीएचसी वार डॉक्टरों की ड्यूटी लगाकर सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी खण्ड विकास अधिकारियों को भी त्यौहार के दिन अपने अपने कार्यालय में उपस्थित रहने के निर्देश दिये पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना प्रभारियों को त्यौहार के दिन विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश देते हुए कहा कि कही भी कोई अप्रिय घटना न होने पाये एवं शान्ति व कानून व्यवस्था बनी रहे। उन्होंने संभ्रान्त नागरिकों से कहा कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तत्काल उन्हें या जिलाधिकारी या सम्बन्धित उपजिलाधिकारी व क्षेत्राधिकारी को अवगत कराये, जिसका तत्काल समाधान किया जायेगा उन्होंने सभी से त्यौहार को आपसी भाईचारा एवं सौहार्दपूर्ण मनाने की अपील की।

बैठक करते डीएम एंव एसपी

उन्होंने कहा कि शान्ति एवं कानून व्यवस्था बिगाडने वालों के विरूद्ध कडी कार्यवाही की जायेगी कानून व्यवस्था से किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जायेगा इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय एवं अपर पुलिस अधीक्षक समर बहादुर सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण एवं संभ्रान्त नागरिक गण उपस्थित रहे।

मजदूरों की खुशहाली से हो नए भारत की पहचान :अजय सोनी

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में रविवार को पार्टी के जिला कार्यालय मंझनपुर में मजदूर दिवस पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तमाम लोगों ने मजदूरों के जीवन में बेहतर बदलाव को लेकर कई विषयों पर परिचर्चा की कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अजय सोनी ने उपस्थित लोगों को मजदूर दिवस पर बधाई दी। साथ ही मजदूरों के साथ सद्भावपूर्वक व्यवहार करने एवं उनका सम्मान करने का सुझाव दिया। इस अवसर पर लोगों से वार्ता करते हुए अजय सोनी ने कहा कि नए भारत की पहचान मजदूरों की खुशहाली से होना चाहिए। आज भारत पहले की अपेक्षा काफी विकास कर रहा है जिसमें मजदूरों का अहम योगदान है। नए भारत के निर्माण में मजदूरों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसे और बेहतर बनाने के लिए मजदूरों के हित एवं विकास में सरकारों एवं समाज को ध्यान देने की जरूरत है। मजदूर श्रम तंत्र का अभिन्न हिस्सा है और बगैर श्रम के कोई निर्माण संभव नहीं है। इस अवसर पर पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रेम चन्द्र केसरवानी ने कहा कि सरकार को चाहिए कि मजदूर दिवस को निर्माण दिवस के रूप में देश भर में मनाया जाए ताकि मजदूरों को सम्मान मिल सके और लोग नए भारत के नव निर्माण में मजदूरों की भूमिका का सही मूल्यांकन कर सकें। इस अवसर पर जयलाल चौधरी, तीरथ मौर्य, परिहार लोधी, फूलचंद्र लोधी, सुखराज सरोज, मानसिंह लोधी, अशोक विश्वकर्मा आदि मौजूद रहे।

यंग अधिवक्ता के निधन पर अश्रुपूरित आंखों से लोगों ने दी अंतिम विदाई

कौशांबी। जनपद न्यायालय के यंग अधिवक्ता आशीष केसरवानी की इलाज के दौरान मौत हो गई मौत की जानकारी जैसे ही राजनीतिक दल के नेताओं अधिवक्ता समाज के लोगों और उनके रिश्तेदारों को लगी उनके आवास पर लोगों की भीड़ लग गई उनका अंतिम संस्कार हिंदू रीति रिवाज से मंझनपुर स्थित श्मशान घाट में किया गया है यहां अश्रुपूरित आंखों से लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की इस दौरान यंग अधिवक्ता के पिता दिनेश चंद्र केसरवानी अधिवक्ता मॉडल डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष मनुदेव त्रिपाठी महामंत्री तुषार तिवारी अशोक कुमार मिश्रा उर्फ भोला मिश्रा केडी द्विवेदी एडवोकेट भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष प्रेमचंद चौधरी जिला महामंत्री संजय जयसवाल पूर्व सभासद अंशुल केसरवानी अनुराग केसरवानी आशीष केसरवानी बच्चा सहित तमाम लोगों ने अश्रुपूरित आंखों से श्रद्धांजलि अर्पित किया है अधिवक्ता के निधन पर सोमवार को न्यायिक कार्य से विरत रहने का अधिवक्ताओं ने फैसला किया है।

गिरधरपुर गढ़ी गौशाला में दुर्दशा का शिकार हैं गोवंश

कड़ा कौशाम्बी। सिराथू तहसील क्षेत्र के गिरधरपुर गढ़ी गांव में गोवंश की दुर्दशा विचलित कर देने लायक है कई गाय की मौत हो गई है और कई गाय दुर्दशा के शिकार हैं गौशाला में गोवंश के लिए खाने-पीने के इंतजाम भी नहीं है लेकिन उसके बाद भी गोवंश को संरक्षण देने वाले अधिकारी मूकदर्शक बने हुए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि उत्तर प्रदेश में गौ माता के लिए बनी गौशालाएं की व्यवस्था अत्यंत दुखी और विचलित कर देने वाली हैं हिंदू धर्म में गौ माता पर संकट इससे ज्यादा कभी नहीं था ग्रामीणों ने कहा कि आज कौशांबी के गिरधरपुर गढ़ी गौशाला में निरीक्षण करने के दौरान आठ गायों की मौत और इतने ही सख्या में गोवंश बीमार जो मौत के करीब खड़ी है जिनकी आँखे चिड़िया नोच ले गई पांच दिनों से गायों को कुछ खाने के लिए इंतजाम नहीं किया गया आज गाय माता को देख कर मन दुखी हैं बिचलित है।ग्रामीणों का कहना है कि जिले के हजारों लोग जो कहने को हिन्दू शान से कहते हैं पर गायों की ये दशा देख कर कुछ नही बोल रहें हैं क्या ऐसा ही हाल रहा तो गाय पूजने के लिए बचेगी या नहीं सरकार इस ब्यवस्था पर बिचार करे।

03 मई को मनाई जाएगी ईद:शहर काजी

कौशांबी। शहर काजी मुफ्ती खुशनूद आलम एहसानी रजवी साहब ने बताया की 29 रमजानुल मुबारक 1443 हिजरी मुताबिक 01 मई 2022 को ईद का चांद नजर नहीं आया किंतु 30 का एतिबार करते हुए ऐलान किया जाता है की 02 मई 2022 को रमजानुल मुबारक की 30वीं तारीख है और शव्वालुल मुकर्रम 1443 हिजरी की पहली तारीख यानी ईदुल फितर 03 मई 2022 बरोज मंगल को मनाई जाएगी। उन्होंने बताया की ईद की रात इबादत करने का इस्लाम में बहुत महत्व है हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है की जो अल्लाह के लिए ईदैन(दोनो ईद ईदुल फितर और ईदुल अजहा) की रात इबादत करेगा उसका दिल कयामत के दिन नहीं घबराएगा जबकि उस दिन लोगों पर डर की वजह से घबराहट तारी होगी।एक और हदीस में है की जो इस रात इबादत करता है उसपर जन्नत वाजिब(जरूरी) हो जाती है।

निरोधात्मक कार्यवाही में 28 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मझनपुर से 07 थाना करारी से 04 थाना पश्चिम शरीरा से 06 थाना सराय अकिल से 05 थाना चरवा से 02 थाना कोखराज से 02 थाना सैनी से 01 थाना कड़ाधाम से 01 कुल 28 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय कर दिया है।

शराब के साथ तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में चलाए जा रहे अवैध शराब के निर्माण एंव तस्करी के विरुद्ध अभियान के क्रम में अलग अलग थानो द्वारा तीन अभियुक्तो को गिरफ्तार करते हुए उनके कब्जे से 30 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्तो का चालान न्यायालय कर दिया है जानकारी के मुताबिक थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त नथन सरोज पुत्र विफई निवासी बरुआ थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व पन्ना लाल पुत्र स्व० बुदुन निवासी लकौड़ा थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना मोहब्बतपुर पइन्ता पुलिस बल द्वारा अभियुक्त अर्जुन सिंह पुत्र भीम सिंह निवासी गोसैलमपुर थाना मोहब्बतपुर पइन्सा को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद होने अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

शहीदों को याद कर मनाया आजादी का अमृत महोत्सव

भारतीय खाद्य निगम इलाहाबाद ने ओसा मंडी में आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित किया कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। भारतीय खाद्य निगम मंडल कार्यालय इलाहाबाद के तत्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव ओसा मंडी मंझनपुर में आयोजित किया गया आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम सैकड़ों किसानों श्रमिकों आदि लोगों की उपस्थिति में संपन्न हुआ कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर अध्यक्ष जिला पंचायत कौशाम्बी श्रीमती कल्पना सोनकर,समाजसेवी जितेंद्र सोनकर पूर्व प्रमुख ओसा मंडी सचिव कुलभूषण वर्मा के साथ मुकेश कुमार मीना सहायक महाप्रबंधक(गु0नि0) आयोजन की अध्यक्षता कर रहे जयशंकर शाही मंडल प्रबंधक इलाहाबाद मंच पर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन तथा सरस्वती वंदना के साथ शुरू हुआ तत्पश्चात अध्यक्षता कर रहे जयशंकर शाही मंडल प्रबंधक भारतीय खाद्य निगम ने सभी का स्वागत करते हुए भारतीय खाद्य निगम के 1964 में गठन से लेकर अब तक खाद्य भंडारण परिचालन एवम वितरण में आयी आत्मनिर्भरता की उपलब्धियां गिनाई भारतीय खाद्य से संबंधित जानकारियो एवं उपलब्धियों के बारे में जैसे किसानों को खरीद के 48 घंटे के अंदर ऑनलाइन भुगतान, डिपो ऑनलाइन सिस्टम से डिपो के कार्य मे तीव्रता एवं पारदर्शिता, डिपो की उउळश के मदद से लाईव निगरानी, टऊ्र एवम कऊ्र योजनाओं में ऋङ्क१ॐ्री फ्री(पोषकयुक्त चावल) के वितरण, उङ्क्र-19 के दौरान किये गये कार्य इत्यादि की जानकारी दी गयी। इसके पश्चात समाजसेवी जीतेन्द्र सोनकर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कल्पना सोनकर ने उपस्थित समस्त लोगो का अभिवादन करते हुये भारतीय खाद्य निगम को आयोजन हेतु धन्यवाद दिया सभा का समापन मंडल प्रबंधक जयशंकर शाही एवम सहायक महाप्रबंधक (गु0नि0) ने मंच पर मौजूद अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुये राष्ट्रगान के साथ किया।कार्यक्रम में प्रमुख रूप से भाग लेने वाले लोगों में भारतीय खाद्य निगम के आशीष मिश्रा अभय त्यागी पंकज बराईक वंदना सिंह बृजेश सिंह यादव सुजीत सिंह राजकुमार, दीपक, वीरेंद्र प्रिंस एम शैलेश, डॉ सुरेंद्र ,शैलेश,प्रशांत श्वेता पूजा प्रिया अपूर्वा,लवी,रुचि, सौरभ मिश्रा, महेंद्र,दुर्गेश, अपूर्व सतीश विष्णु सत्येंद्र, सुभाष,इत्यादि सैकड़ों लोग शामिल रहे कार्यक्रम का संयोजक भारतीय खाद्य निगम मंडल कार्यालय इलाहाबाद रहा।

पेंशन पोर्टल कार्यक्रम में बोलते डीएम

पेंशन पोर्टल कार्यक्रम में उपस्थित भीड़

नगर पंचायतों में चुनाव की सुगबुगाहट के बीच

सक्रिय हुए वोट के कथित दलाल, प्रत्यासी

अखंड भारत संदेश

अगले अंक में पढ़े -3 करोड़ 80 लाख लूटने की जुगत में लगे भ्रस्टाचारी जिम्मेदार

अझुवा कौशाम्बी। विधानसभा चुनाव के बाद नगर पालिका,नगर पंचायत में निकाय चुनाव को लेकर मतों के दलाल और प्रत्यासियों की सुगबुगाहट शुरू हो गयी है हलांकि अभी चुनाव में 7 माह से अधिक समय शेष है परिसीमन होने के बाद सम्भवतः नवम्बर दिसम्बर में निकाय चुनाव सम्पन्न होंगे।

अब बात करें नगर पंचायतों की तो कुछ दिनों से वह ठेकेदार भी सक्रिय हो गए हैं जिनके कहने से उनके घरों के मतदाता भी मतदान नही करते आखिर हो क्यों नही झाड़ में चढ़ाकर उनको अपने खाने पीने की व्यवस्था जो करनी है ऐसे प्रत्यासी भी शोशल मीडिया में स्वयं का गुणगान करने में जुटे हैं वजह नगर पंचायतों में शासन द्वारा करोड़ो की धनराशि विकास के मदों में आवंटित होती है उसके बंदरबाट का ख्वाब देखते हैं नगर पंचायत अझुवा का ही विकास ले लीजिए यहां पिछले साढ़े 4 वर्ष में अध्यक्ष ने विकास का ऐसा खाका खींचा कि कई पंचवर्षीय इनका गुणगान होता रहेगा पानी टंकी में 7 हजार की नौकरी करने वाले आज करोड़ों में खेल रहै हैं, रिवाल्वर खोंसकर एसी गाडी में बैठकर रुआब गांठते हुए पुनः चुनाव जीतने का ख्वाब देख रहे हैं जबकि इन महाशय का कहना है ऐसा कोई सगा नही जिसको हमने ठगा नही जिस व्यक्ति ने ऐसे व्यक्ति को चुनाव लड़वाया चुनाव में जो खर्च आया उसे खर्च किया उसको पीछे धकेल कई करोड़ को संपत्ति अर्जित की। बीते वर्षों में नगर पंचायत के जिम्मेदार सदस्यों ने कमीशनखोरी का खेल ऐसा खेला की सरकारी जांच का बहाना बना पैसे बदले के खेल, सरकारी जांच में इतने उलझे कि नगर के विकास के मद में आये धन को लूट लिया, अब कुछ दिन के कार्यकाल में नगर पंचायत के विकास में आये धन को बंदरबांट करने की बड़ी जुगत में लगे हैं जिसमे वे सफल होते भी दिख रहे हैं।

सार्वजनिक भूमि पर पूर्व प्रधान व अन्य लोगों ने किया कब्जा

कौशांबी। चायल तहसील क्षेत्र के रतगहा गांव ग्राम सभा में पूर्व प्रधान व अन्य लोगों ने सार्वजनिक भूमि पर दबंगई के बल पर कब्जा कर रखा है मामले की शिकायत उप जिला अधिकारी चायल से ग्रामीणों ने की है ग्रामीणों ने कहा कि सार्वजनिक भूमि पर पूर्व प्रधान और अन्य लोगों के कब्जे को खाली कराया जाए और सरकारी कार्य में उपयोग किया जाए ग्रामीणों ने कहा कि सार्वजनिक भूमि पर दबंगई के बल पर कब्जा करने वाले पूर्व प्रधान व अन्य लोगों पर कार्यवाही कर सार्वजनिक भूमि को मुक्त कराया जाए।

विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय पुरस्कार हेतु करें आवेदन

कौशाम्बी। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी अभिषेक उपाध्याय ने जनपदवासियों को सूचित किया है कि प्रत्येक वर्ष की भांति 03 दिसम्बर विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर दक्ष दिव्यांग कमचार्री स्वतः रोजगार रत दिव्यांग व्यक्तियों उनके सेवा योजकों एवं दिव्यांगजन के प्लेसमेण्ट अधिकारियों एवं स्वैच्छिक संगठनों इत्यादि को राज्य स्तरीय पुरस्कार दिये जाने का प्रावधान है। दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य कर रहे उक्त दिव्यांग कमचार्री स्वतः रोजगार एवं स्वैच्छिक संगठनों द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार पाने हेतु प्रस्ताव 15 जुलाई 2022 तक कायालर्य जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी विकास भवन-मंझनपुर में उपलब्ध करायें।

मजदूर दिवस पर अंग वस्त्र देकर मजदूरों को पूर्व विधायक ने किया सम्मानित

सैकड़ों मजदूरों को पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता ने उपहार में दिया साड़ी और बैग

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस पर रिद्धि सिद्धि फाउंडेसन की तरफ से केपीएस विद्यालय भरवारी में पूर्व विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने सैकड़ों मजदूर साथियों को अंग वस्त्र से और साथ में बैग साड़ी देकर उन्हें सम्मानित किया साथ ही फाउंडेशन के चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता ने उनके साथ बैठकर लस्सी पीकर मजदूरों का सम्मान करते हुए यह कहा कि आज अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस है आप सब के बिना कोई भी काम पूरा नहीं हो सकता है उन्होंने कहा कि प्रत्येक काम करने के लिए आप सब की जरूरत पड़ती है और आप 45 डिग्री के चिलचिलाती धूप में काम करते हैं और लोगों का काम करते हैं काम तो हर कोई करता है परन्तु आप सभी की मेहनत से ही घरों का निर्माण होता है आप सभी के मेहनत से ही घरों में खाने के लिए अनाज पहुंचता है। इस अवसर पर मुख्य रूप से भरवारी के पूर्व चेयरमैन गंगा प्रसाद काले जगदीश शिवहरे कस्तूरबा इंटर कॉलेज प्रबंधक पितांबर लाल केसरवानी उग्रसेन दिलीप सरोज पिंटू कुशवाहा, सूरज यादव, वेदांत उपाध्याय, शेरा यादव, भगवती प्रसाद , मनोज कारपेंटर सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

मजदूरों को सम्मानित करते पूर्व विधायक संजय गुप्ता

संपादकीय

राम भक्त हनुमान अतुलनीय, विवेकशील है...

भारत की देव-प्रतीति निराली है। जहाँ-जहाँ दिव्यता वहाँ-वहाँ देवता के दर्शन होते हैं। इसीलिए अनेक विद्वान भारत को बहुदेववादी कहते हैं। वस्तुतः भारत के लोग बहुदेववादी नहीं हैं। हम बहुदेव उपासक हैं। भारतीय संस्कृति और परंपरा के एक खूबसूरत देवता हैं हनुमान। वे परम भक्त का अकेला उदाहरण हैं। बुद्धिमान हैं। विवेकशील हैं। बलवान हैं लेकिन अपने आराध्य को हृदय में धारण करके चलते हैं। भारतीय चिंतन में ऐसे अनेक देवता हैं। कोई भी देवता भक्त नहीं है। हनुमान अतुलनीय हैं। सिद्धांतनिष्ठ जान पड़ते हैं। एक हाथ में ध्वज और दूसरे हाथ में वज्र लेकर सिर्फ हनुमान ही निकले। ध्वज सिद्धांत का प्रतीक है और वज्र शक्ति का पर्याय। शक्ति के बिना ध्वज को कौन महत्व देगा। जीवन में शक्ति का महत्व है। लेकिन शक्ति के साथ सिद्धांत भी चाहिए। इसी तरह सिद्धांत के साथ शक्ति अपरिहार्य है। हनुमान देव के पास शक्ति और सिद्धांत दोनों हैं। बड़े निराले देवता हैं हनुमान। संप्रति हनुमान चालीसा को लेकर चर्चा जारी है। चालीसा में देव हनुमान की स्तुति है। हनुमान चालीसा का पाठ भय दूर करने के लिए भी होता रहा है। मुझे याद आता है कि प्रारंभिक शिक्षा के लिए मुझे लगभग 10 किमी पैदल जाना पड़ता था। रास्ते में जंगल थे। देर हो जाने के कारण जंगल में डर लगता था। आचार्यों ने बताया कि हनुमान चालीसा जेब में रखो, पढ़ो और गाओ। डर नहीं लगेगा। हनुमान का स्मरण निर्भयदाता है। विज्ञान को महत्व देने वाले विद्वान प्रश्न उठा सकते हैं। वे आस्था आस्तिकता के प्रभाव वैज्ञानिक विश्लेषण में खोज सकते हैं। लेकिन आस्तिक बुद्धि को मानने वाले लोग हनुमान स्तुति में रस लेते हैं। वानर रूप हनुमान का शक्तिशाली प्रतीक वाकई आश्चर्यजनक है। विश्व सभ्यता और कला के विवेचनकर्ता हुड ने, दि होम ऑफ हीरोज (पृष्ठ- 41) में लिखा है, कीरीट द्वीप की मिनियन कला में हाथी दाँत की मुद्रा में एक वानर है। यह मुद्रा 2200 से 2000 ईपू मानी गयी है। एक अन्य विद्वान मैकॉय का विश्लेषण है कि, सुमेर और विलम की वानर मूर्तियों से प्राचीन सिंधु घाटी की मूर्तियों से घनिष्ठता है। मूर्तियाँ शून्य से नहीं पैदा होती। मूर्तिकार इसी संसार से सामग्री लेते हैं और कवि और गीतकार भी। वे ऐतिहासिक तथ्य होती हैं। कलाकार ऐसे ही ऐतिहासिक तथ्यों से प्रेरित होते हैं। वानर रूप हनुमान प्राचीन देवता हैं। बेशक उनकी चर्चा रामायण काल में ज्यादा दिखाई पड़ती है। भारत के हनुमान देवता माया और आयुर्विज्ञान के देवता बताये गये हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार वे सीता का पता लगाने के लिए लंका गये थे। लंका की अशोक वाटिका में उन्हें सीता के दर्शन होते हैं। वे सोचते हैं कि मैं सीता माँ से किस भाषा में बात करूँ। संस्कृत में बात करूंगा तो वह मुझे रावण का अनुचर मान सकती हैं। यहाँ वाल्मीकि जी का संकेत है कि हनुमान कई भाषाओं के जानकार थे। मोहनजोदड़ो में वानरों की मूर्तियाँ मिली थीं। संभावना यह है कि हनुमान देवता के प्रतीक के प्रति श्रद्धा के कारण तत्कालीन नागरिक वानरों को पवित्र मानते रहे होंगे। वानर रूप हनुमान की उपासना वैदिक काल में भी दिखाई पड़ती है। ऋग्वेद में वर्णित एक देवता हैं वृषाकपि। संभवतः उनकी स्तुतियाँ बहुत लोग करते थे। इंद्र भी ऋग्वैदिक काल के बड़े देवता हैं। ऋग्वेद में इंद्र चाहते हैं कि स्तोता उनकी स्तुति करें। इंद्र कहते हैं कि, उपासकों ने मुझ इंद्र की स्तुति नहीं

मजदूर दिवसः याद आया रामदेव बाबू का जुझारूपन !

डॉ. प्रभात ओझा

एक बार की बात है बुजुर्ग हो रहे रामदेव सिंह की तबीयत गंभीर हुई तो उनके बेटे उन्हें लखनऊ के अस्पताल लेकर गए। इसकी सूचना यूपी के मुख्यमंत्री रहे रामनरेश यादव को मिली। वह आनन-फानन उनसे मिलने आए। वह रामदेव बाबू को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। उनका लगाव रामदेव सिंह से आजीवन रहा। ये सारे परिचय मजदूरों और आम लोगों के हित में लगाने का गजब का उनका हुनर था। उनका निधन 87 वर्ष की उम्र में हुआ और जीवन के बड़े हिस्से को उन्होंने इसी लोकहित में लगा दिया

अभी पिछले ही महीने की 14 तारीख को वे हमसे विदा हुए। इस अर्थ में उन्हें भूलने का कोई मतलब ही नहीं है। फिर भी मजदूर दिवस आया तो उनके जुझारू जीवन को रखना स्वाभाविक है। एशिया की सबसे बड़ी एल्यूमिनियम कंपनी हिंडाल्को की कहानी उसके प्रथम मजदूर नेता रामदेव सिंह के बिना पूरी नहीं होती। प्रथम इसलिए कि कंपनी शुरू हुई और उसी के साथ उसमें काम करने वाले मजदूरों की मजबूरियां भी। ऐसे में उनके लिए रामदेव बाबू ने आवाज उठायी। वह आवाज उनकी जिद और दृढ़ संकल्प की कहानियों से भरी है। रेणूकूट हिंडालको जब शुरू हुआ, आसपास वीरान था। मजदूरों ने काम शुरू किया तो बाहर जीवन की सामान्य सुविधाओं का मिलना भी मुश्किल था। सबसे बड़ी मुश्किल कार्य क्षेत्र में भी दिखने लगी। चिमनियों के बीच काम करने वालों को लिए सामान्य उपकरण तो छोड़िए, हेलमेट और धातु वाले अन्य शरीर-रक्षक उपकरण तक नहीं थे। इन साधनों के साथ बाहर बाजार की शुरूआत आसान नहीं थी। आज के कारखाने और व्यवस्थित बाजार को देखते हुए तब के कष्ट की कल्पना नहीं की जा सकती। यह सब सुलभ कराने में रामदेव बाबू के संघर्ष की कथा लंबी हो सकती है। फिर भी एक तथ्य पूरी कहानी का सार है कि वे 14 साल तक नौकरी से बाहर रखे गये। इन 14 वर्षों को राम की तरह इसे रामदेव का भी बनवास कहा जा सकता है। उन्होंने इस दौरान ट्रेड यूनियन और उसकी गतिविधि जारी रखने के लिए मजदूर विरोधी राक्षसों से संघर्ष किया। मजदूरों के बीच रोशनी लाने वाले और बिजली बत्तियों से चमचमाता बाजार बसाने वाले रामदेव सिंह का जीवन टीन शेड में ही गुजरा। वह कभी छप्पर वाला मकान भी नहीं बना पाए। जिनके बारे में मशहूर है कि हिंडाल्को में सैकड़ों योग्य लोगों की नौकरी उनके एक बार कह देने से लग गई, अपने तीन बेटे और बेटी की नौकरी वह नहीं लगवा पाए। बिहार के सिवान जिले के कौंसड़ गाँव में जन्मे रामदेव सिंह एक सामान्य किसान के बेटे थे। 18 वर्ष की वय में परिवार का सहयोग करने के लिये नौकरी ढूंढते हुए वह गोरखपुर चले आए। एक कंपनी में सुपरवाइजर का काम मिला, जिसमें उन्हें 70 रुपये तनख्वाह के मिलने लगे। वह अधिक कमाई के लिये झरिया के शिवपुर कोइलरी में आ गए। जब उनकी मां को पता चला कि कोलफील्ड में काम करने के लिए जान जोखिम में डालना पड़ता है, तो उन्हें वहाँ से नौकरी छोड़ने को कहा। फिर जेके नगर होते हुए उनका रुख रेनूकूट की ओर हुआ। वर्ष 1961-62 के बीच उनकी नौकरी हिंडाल्को कारखाने के पॉट रूम में लगी, जहां आग उगलती भट्ठियाँ और उबलते बॉयलर्स होते थे। ऊपर से तनख्वाह और सुविधाएं नाम मात्र की थीं। अधिकारियों की डाँट-फटकार से भी वहाँ के मजदूर त्रस्त थे। आवास के नाम पर एक टीन शेड के नीचे 30-30 मजदूर भेड़-बकरियों के जैसे रहा करते थे। यह सब देख उबलते बॉयलर्स की तरह युवा रामदेव के अंदर का क्रांतिकारी उबल पड़ा। वह सीधे फोरमैन से जाकर मजदूरों की समस्या के लिये भिड़ गए। उन लोगों ने नौकरी से निकालने की धमकी दी तो वह और तन गए। उनके खिलाफ वार्निंग लेटर आया, जिसे उन्होंने अधिकारियों के सामने सुलगते सिगरेट से जला दिया। यह सब साथी मजदूरों के लिये टॉनिक की घूंट थी, कई अमरीकी कर्मचारी भी उनके समर्थन में आए। कुछ हफ्तों में रामदेव सिंह नेता रामदेव बन गए थे। मैनेजमेंट ने एक दिन उन्हें नौकरी से निकाल दिया। जब वह अगले दिन गेट पर आए तो बीसियों सिक्योरिटी गार्ड उनका रास्ता रोकने को खड़े थे। मजदूरों की भीड़ गेट पर ही धरने पर बैठ गई। रामदेव सिंह जिंदाबाद के नारे लगे। मजदूरों की मांग थी कि रामदेव अगर नौकरी नहीं करेंगे तो हम भी काम नहीं करेंगे। मैनेजमेंट झुक गया और चेतावनी देकर उन्हें वापस काम पर रख लिया। हालांकि उन्होंने इतने बड़े समर्थन के बाद मजदूरों की लड़ाई और तेज कर दी। इस तरह हिंडाल्को के मजदूरों को अपना पहला मजदूर नेता मिल गया था। कुछ महीनों बाद ही उन्हें नौकरी से फिर निकाल दिया गया। उनको जान से मारने की कई बार साजिश हुई। उनके सहयोगियों को भी एक-एक कर झूठे मामलों में फंसा कर जेल भेजा जाने लगा। रामदेव सिंह को भी कई बार जेल जाना पड़ा। वह हिंडाल्को से बाहर थे लेकिन वहाँ के मजदूरों के लिये लड़ते रहे। उनके पीछे गुप्तचरों की टीम लगी रहती थी, इसलिए उन्हें देश की आजादी के क्रांतिकारियों की तरह ठिकाना बदल-बदल कर योजनाएं बनानी पड़ती थीं। हड़ताल पर हड़ताल होते गए, नेता रामदेव सिंह का नाम पहले राज्य के राजनीति में फिर केंद्र की राजनीतिक गलियारों तक पहुँच गया। प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह से रामदेव सिंह ने कई बार मीटिंग की। केन्द्रीय मंत्री रहे राजनारायण और प्रभुनारायण तो उनके संघर्ष के साथी रहे। उनका भरपूर समर्थन हमेशा मिलता रहा। वे हिंडालको मजदूरों और स्थानीय लोगों में इतने लोकप्रिय हो चुके थे कि लोग उन्हें राम और हिंडालको प्रबंधन को रावण की संज्ञा देती रही। वे वहां के भोजपुरी क्षेत्र और लोक जीवन में आदमी में नउवा, पंछिन में कौआ और नेतन में रामदेउवा (आदमियों में नाऊ, पंक्षियों में कौआ और नेताओं में रामदेव) के रूप में याद किए जाते रहे। वह हिंडाल्को में पॉट रूम में काम करने के दौरान मजदूरों की दयनीय हालत को देखकर मैनेजमेंट पर हमेशा करारा प्रहार किया करते थे। उन्होंने राष्ट्रीय श्रमिक संघ की स्थापना की, जो आज भी सक्रिय है। उस समय रेनूकूट के सड़क के दोनों किनारों पर एक भी झोपड़ी नहीं थी, एक भी दुकानदार नहीं था...सिर्फ बेहया (जंगली झाड़ी) के जंगल थे। रामदेव सिंह ने झोपड़ियाँ बनवाईं, दुकानें खुलवाईं और व्यापार मण्डल के अध्यक्ष बने। उन्होंने बिड़ला मैनेजमेंट के खिलाफ संघर्ष किया, जिसके कारण उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। रामदेव सिंह ने जीवन का पहला आंदोलन साल 1963 में एक रात 11 बजे शुरू किया जब उन्होंने हिंडाल्को में तीन दिन की हड़ताल करा दी। फिर दूसरी हड़ताल 12 अगस्त 1966 में हुई। उसका असर ये हुआ कि रामदेव बाबू समेत 318 लोगों को नौकरी से निकाल दिया गया। उन्हें बहुत प्रलोभन दिया गया लेकिन उनके जमीर का कोई मोल नहीं लगा सका। साल 1977 में उनके साथी और प्रसिद्ध राजनेता रहे राजनारायण ने उन्हें पुनः हिंडाल्को जॉइन कराया। इस दरम्यान उनका परिवार, उनके बच्चे सब मुफलिसी में जीवन काटते रहे। फिर नौकरी करते हुए भी हिंडाल्को के प्रेसिडेंट को ललकारते रहते थे। हिंडाल्को की मर्जी के खिलाफ रामदेव सिंह ने रेनूकूट के असहाय दुकानदारों को भी बसाया। इस तरह बाबू रामदेव सिंह मजदूरों के साथ-साथ, व्यापारियों और जनता के भी नेता थे। रेनुकूट से सटे पिपरी पुलिस स्टेशन के पास रामदेव सिंह का निवास स्थान था, जहां अक्सर भारतीय राजनीति के बड़े राजनेता राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, राजनारायण, चौधरी चरण सिंह, जॉर्ज फर्नांडीज, विश्वनाथ प्रताप सिंह चंद्रशेखर, लालू प्रसाद यादव और वर्तमान केन्द्रीय मंत्री राजनाथ सिंह आदि का आना-जाना हुआ करता था। यहीं राजनीतिक विश्लेषण होते। जेपी आंदोलन में भी सक्रिय रामदेव बाबू का राजनीतिक जीवन हमेशा उन्हें परिवार से दूर ही रखे रहा।

एक बार की बात है बुजुर्ग हो रहे रामदेव सिंह की तबीयत गंभीर हुई तो उनके बेटे उन्हें लखनऊ के अस्पताल लेकर गए। इसकी सूचना यूपी के मुख्यमंत्री रहे रामनरेश यादव को मिली। वह आनन-फानन उनसे मिलने आए। वह रामदेव बाबू को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। उनका लगाव रामदेव सिंह से आजीवन रहा। ये सारे परिचय मजदूरों और आम लोगों के हित में लगाने का गजब का उनका हुनर था। उनका निधन 87 वर्ष की उम्र में हुआ और जीवन के बड़े हिस्से को उन्होंने इसी लोकहित में लगा दिया।

(लेखक, स्वतंत्र पत्रकार और इंदिरा गांधी कला केंद्र के मीडिया सेंटर से भी जुड़े हैं।)

योग-क्रांति है गुड गवर्नेंस का मॉडल

ललित गर्ग

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल देश एवं दुनिया में मुफ्त की सुविधाओं के लिये जाने जाते हैं। अब उन्होंने दिल्ली में रहने वाले लोगों के लिए निशुल्क योग कराने का निर्णय लिया है, क्योकि दिल्ली के आम-आदमी का भागदौड़ की प्रदूषणभरी जिंदगी में शरीर, मन और आत्मा स्वस्थ्य नहीं है, ऐसे में योग उनकी बड़ी मदद कर सकेगा, ऐसा विश्वास है। निश्चित ही यह एक स्वागतयोग्य कदम है। राजनीति का मकसद सिर्फ सत्ता हासिल करना नहीं, बल्कि उन्नत एवं स्वस्थ जीवनशैली प्रदत्त करना भी है, इस दृष्टि से दिल्ली सरकार ने योग और मेडिटेशन को जन आंदोलन बनाकर दिल्ली के घर-घर तक पहुंचाने का निर्णय लेकर सूझबूझ एवं आदर्श शासन-व्यवस्था का संकेत दिया है।

इनदिनों दिल्ली योग के पोस्टरों से पटी है। जनवरी से दिल्ली में जगह-जगह योग की क्लासेज भी शुरू हो जायेगी। यह पूरे देश में अपने किस्म का पहला विलक्षण कार्यक्रम है, जिसके तहत दिल्ली सरकार लोगों को फ्री में योग कराएगी। इसके लिए 400 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया है। दिल्ली में निशुल्क सुविधाओं की आंधी का अनुकरण देश के अन्य प्रांतों की सरकारें भी करने लगी है, ठीक इसी तरह यदि दिल्ली सरकार की योग मुहिम को देखकर पूरे देश के अंदर भी योग शालाएं शुरू होती है तो घर-घर तक योग पहुंचेगा, लोगों का जीवन स्वस्थ, संतुलित एवं शांतिमय होगा। भारतभूमि अनादिकाल से योग भूमि के रूप में विख्यात रही है। यहां का कण-कण, अणु-अणु न जाने कितने योगियों की योग-साधना से आप्लावित हुआ है। तपस्वियों की गहन तपस्या के परमाणुओं से अभिषिक्त यह माटी धन्य है और धन्य है यहां की हवाएं, जो साधना के शिखर पुरुषों की साक्षी हैं। इसी भूमि पर कभी वैदिक ऋषियों एवं महर्षियों की तपस्या साकार हुई थी तो कभी भगवान महावीर, बुद्ध एवं आद्य शंकराचार्य की साधना ने इस माटी को कृतकृत्य किया था।

साक्षी है यही धरा रामकृष्ण परमहंस की परमहंसी साधना की, साक्षी है यहां का कण-कण विवेकानंद की विवेक-साधना का, साक्षी है क्रांत योगी से बने अध्यात्म योगी श्री अरविन्द की ज्ञान साधना का और साक्षी है महात्मा गांधी की कर्मयोग-साधना का। योग साधना की यह मंदाकिनी न कभी यहां अवरुद्ध हुई है और न ही कभी अवरुद्ध होगी, क्योंकि पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अब केजरीवाल जैसे शासक इसे जन-जन की जीवनशैली बनाने को तत्पर हुए हैं। इसी योग मंदाकिनी से अब दिल्ली आप्लावित होगा, निश्चित ही यह एक शुभ संकेत है सम्पूर्ण दिल्लीवासियों के लिये। दिल्ली में योग आन्दोलन की सार्थकता इसी बात में है कि सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, विश्व मानवता का कल्याण हो। सचमुच योग वर्तमान की सबसे बड़ी जरूरत है। लोगों का जीवन योगमय हो, इसी से युग की धारा को बदला जा सकता है। मेरी दृष्टि में योग मानवता की न्यूनतम जीवनशैली होनी चाहिए। आदमी को आदमी बनाने का यही एक सशक्त माध्यम है। एक-एक व्यक्ति को इससे परिचित- अवगत कराने और हर इंसान को अपने अन्दर झांकने के लिये प्रेरित करने हेतु दिल्ली में योग आन्दोलन को व्यवस्थित ढंग से आयोजित करने के उपक्रम होने चाहिए। इसी से संतुलित इंसान बनने और अच्छा बनने की ललक पैदा होगी। योग मनुष्य ही नहीं बल्कि राजनीतिक जीवन की विसंगतियों पर नियंत्रण का माध्यम है। दिल्ली का जीवन जीने लायक बन सकेगा। आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए दिल्ली की महत्वपूर्ण उपलब्धि और असफलता को दो बिन्दुओं में बताना हो तो दिल्ली की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी योग-क्रांति और असफलता होगी बढ़ता प्रदूषण। जहां तक व्यवस्था का प्रश्न है, यह दोनों ही बातें सही हैं। योग की ही भांति हमें प्रदूषण को ह्रशून्य दरह्र पर ले जाना होगा जिसके बिना सभी क्षेत्रों में हमारी तरक्की बेमानी मानी जायेगी। कोई भी राष्ट्र केवल व्यवस्था से ही नहीं जी सकता। उसका सिद्धांत पक्ष भी सशक्त होना चाहिए। किसी भी राष्ट्र की ऊंचाई वहां की इमारतों की ऊंचाई से नहीं मापी जाती बल्कि वहां के नागरिकों के चरित्र से मापी जाती है। उनके काम करने के तरीके से मापी जाती है। हमारी सबसे बड़ी असफलता है कि आजादी के 75 वर्षों के बाद भी राष्ट्रीय चरित्र, स्वस्थ जीवनशैली नहीं दे पाये।

व्यंग्य

पर्स ही हिट है, पर्स ही फिट है

संजीव ठाकुर

रूस यूक्रेन युद्ध के दो महीने बाद भी अमानवीय क्रूर विभीषिका थमने का नाम नहीं ले रही है। यूक्रेन के करोड़ों लोग बेघरबार हो गए हैं।

यूक्रेन की अरबों रुपए की संपत्ति युद्ध की भेंट चढ़ चुकी है, यूक्रेन में नागरिकों का कोहराम मचा हुआ है। ऐसे समय में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव एंटोनियों गुतारेस की रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से शांति बहाल हेतु शांति वार्ता मानवता के लिए सर्वाधिक सकारात्मक एवं अहम पहल है। अब रूस, यूक्रेन युद्ध भयानक तथा क्रूरतम रूप ले चुका है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पूरी तरह अपनी सनक में आकर यूक्रेन को बबार्दी के अंतिम छोर पर पहुंचाना चाह रहे हैं। ऐसा नहीं है कि सिर्फ अड़ियल रवैया रूस ही दिखा रहा है बल्कि यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेन्सकी भी ना जाने किस घमंड और गुमान पर अड़े हुए हैं, उन्हें अपने देश के एक करोड़ से ज्यादा विस्थापित नागरिक दिखाई नहीं दे रहे हैं एवं हजारों निर्दोष नागरिकों के साथ सैनिकों की मृत्यु तथा शव भी उन्हें युद्ध रोकने के लिए बाध्य नहीं कर पा रहें है। वैसे यह तो तय है कि रूसी राष्ट्रपति पुतिन यूक्रेन की आड़ में अमेरिका तथा नाटो देशों के सदस्यों को यह बताना चाह रहे हैं कि रूस अभी भी उतना ही शक्तिशाली है जितना वह उस 1990 में विघटन के पूर्व था। रूस यूक्रेन युद्ध के 50 दिन पूरे हो चुके हैं और यूक्रेन के हौसले अभी भी बुलंद दिखाई दे रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय न्यूज एजेंसियों के अनुसार कीव ,मारियोपोल, बूचा, लोहानस्क,डोनेट्स आदि शहर नर संहार के भयानक केंद्र बन चुके हैं। न्यूज एजेंसी के अनुसार यूक्रेन के मूल हथियार जो उसके पास पूर्व में थे सारे नष्ट हो चुके हैं, तमाम हवाई अड्डे नेस्तनाबूद कर दिए गए हैं, अब स्थिति यह है कि फ्रांस, इजराइल, कनाडा,न्यूजीलैंड, अमेरिका, ब्रिटेन, पोलैंड से आए हुए जहाज, टैंक और मशीन गनों के सहारे ही यूक्रेन में वर्तमान का युद्ध लडा जा रहा है। यूक्रेन के लगभग 20 से 25 हजार सैनिक और नागरिक मारे जाने की एजेंसियों द्वारा पुष्टि की गई है। और कीव ,बूचा, मारियोपोल में रूसी सैनिकों के साथ उनके कई सेना के अधिकारियों की मौत की भी पुष्टि की गई है। यूक्रेन के सरकारी प्रवक्ता ने बताया रूस के लगभग 15हजार सैनिक इस युद्ध में हलाक हुए हैं। और उनके लड़ाकू जेट ,पैटर्न टैंक, बख्तरबंद गाड़ियां तथा ड्रोन भारी मात्रा में नष्ट कर दिए गए हैं। रूस युद्ध में अरबों रुपए का नुकसान प्रतिदिन झेल रहा है। यूक्रेन को तो नाटो तथा अमेरिका लगातार आर्थिक तथा सामरिक मदद कर रहा है, जिसके फलस्वरूप यूक्रेन की स्थिति अभी तक मजबूत बनी हुई है। इस युद्ध में मानवीय संवेदनाओं, मानवता ने यूक्रेन तथा रूस दामन लगभग त्याग दिया है। दोनों देशों के निष्ठुर कमांडरों ने मानवता को मूल नष्ट करने का मानों ठेका ही ले लिया है। यूक्रेन से लगभग एक करोड़ से ज्यादा यूक्रेन के निवासियों ने पोलैंड और यूरोपीय देशों में मजबूर शरणार्थियों की तरह पनाह ले ली है। इस युद्ध में रूस के राष्ट्रपति पुतिन उनके विदेश मंत्री लावरोव तथा रक्षा मंत्री सहित अन्य कमांडर अब मानसिक दबाव में आकर मानसिक असंतुलन की स्थिति में आ गए हैं। पुतिन के मानसिक असंतुलन की स्थिति का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि उसने चेचन्या के सबसे खतरनाक कमांडर रमजान को आक्रमण का जिम्मा दिया है इस कमांडर रमजान के बारे में बताया जाता है कि यह पुतिन का सबसे विश्वास पात्र एवं अत्यंत क्रूर सैन्य अधिकारी है जो केवल विरोधी सैनिकों की मृत्यु बनकर उन पर टूट पड़ता है। ऐसे में यूक्रेन एक बड़े नरसंहार केंद्र के रूप में तब्दील हो सकता है और इसकी परिणति वैश्विक अशांति की ओर अग्रसर हो कर विश्व युद्ध की संभावनाओं को और बढ़ा देगी।

अब धीरे-धीरे पुतिन की योजनाओं से लगने लगा कि उनकी मानसिक स्थिति हिटलर की तरह पूरे विश्व को विश्व युद्ध की आग में झोंकने की हो गई है।

उल्लेखनीय है कि इस रूस यूक्रेन युद्ध में रूस के साथ लगभग 24 देश ही है और बाकी सारे देश रूस का लगातार विरोध कर रहे हैं केवल भारती ही ऐसा देश है जो निरपेक्ष बना हुआ है रूस का मौन समर्थन करने के कारण यूरोपीय देश की नाराजगी झेलने को मजबूर हैं।

मजदूर -किसान अपने हक के लिए कब एक होंगे !

प्रदीप उपाध्याय

आजादी के बाद से मजदूर और किसान आज भी बदहाली का जीवन जीने को अभिशप्त हैं।एक ओर मजदूर को अपना श्रम बेचने के लिए मजदूर मण्डी में स्वयं को प्रदर्शित करना पड़ता है तो दूसरी ओर किसान अपनी फसल के उचित मूल्य पाने के लिए अनाज मंडी में आँसू बहाता है।किसान कर्ज में डूबा रहता है और आत्महत्या का रास्ता चुन लेता है। मजदूर-किसान हित की बात तो सभी करते हैं लेकिन उनके वास्तविक कल्याण की दिशा में कोई सार्थक प्रयास होता नहीं दिखाई दे रहा है। इन्हें भी वोट बैंक की तरह ही उपयोग में लाया जा रहा है। मजदूर और किसानों के हित की बातें विशिष्ट अवसरों पर ही कही जाती है। अभी फिर वर्ष में एक बार मनाया जाने वाला मजदूरों का दिवस यानी मजदूर दिवस यानी मई दिवस आ गया है।। मजदूरों के लिए बहुत कुछ कहा जाएगा,भाषणबाजी होगी और दिन पूरा होते ही अगले वर्ष तक के लिए सारी बातें भूला दी जाएंगी। कार्ल मार्क्स ने लिखा था- दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ, दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह रही कि मजदूर तो एक नहीं हो सके,पूंजीपति जरूर एक हो गये। देशभर की जमा पूंजी मुठ्ठीभर लोगों के हाथों में जमा होती जा रही है।आज कार्ल मार्क्स को साम्यवादी और समाजवादी विचारधारा के लोगों ने ही भूला दिया है।लेनिन की प्रतिमाओं को ढहाया जा चुका है। विभिन्न साम्यवादी और समाजवादी विचारधारा के पोषक देश स्वयं पूंजीवादी व्यवस्था की राह पर चल निकले हैं। फ्रांस और रूस में हुई क्रांति तथा उसके बाद विश्व में पूंजीवाद के विरूद्ध बने माहौल तथा समाजवाद और साम्यवाद के प्रसार के बावजूद मजदूरों की हालत जस की तस बनी हुई है। समाजवादी और साम्यवादी व्यवस्था वाले देश भी कमोबेश पूंजीवाद के रास्ते पर ही जब चल निकले हैं और मजदूरों की बात कहने वाले संगठन कमजोर हो चले हैं तब सर्वहारा वर्ग के कल्याण की बात कौन करेगा और किससे उम्मीद की जा सकती है। मजदूर दिवस उन कर्मठ लोगों का दिन है जिन्हें उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है, चाहे औद्योगिक श्रमिक हों या कृषि मजदूर ,उनका हर स्तर पर शोषण हो रहा है तथा उनका भविष्य भी अंधकारमय बना हुआ है। कार्ल मार्क्स ने कहा था कि एक व्यक्ति को अपने जीवन यापन की आवश्यक चीजें यानी रोटी,कपड़ा और मकान तो मिलना ही चाहिए जबकि आज भी सर्वहारा वर्ग इससे वंचित है। पूंजीवादी व्यवस्था ने आय और उत्पादन के अर्थ ही नहीं बदले बल्कि पूंजी और विकास के पैमाने ही बदल दिये हैं।मशीनीकरण ने उपयोगी श्रम को भी उपयोगहीन कर दिया है और व्यक्ति गौण हो गया है। जबकि सूफोक्लेस ने कहा है कि- बिना श्रमिक के कुछ भी सफल नहीं है। रोजगार के अवसर कम होते जा रहे हैं और बेरोजगारी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। कुशल-अकुशल श्रम का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। हमारे देश में भले ही संविधान की प्रस्तावना में समाजवाद शब्द को स्थान दिया गया है लेकिन अब हमने निजीकरण और पूंजीवाद की सभी बुराईयों को आत्मसात करते हुए समाजवाद से मुँह फेर लिया है। उत्पादन और वितरण की समान व्यवस्था पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं रह गया है। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह भी है कि श्रम संगठनों और राजनीतिक दलों ने उदारीकरण,निजीकरण और वैश्वीकरण के सम्मुख हथियार डाल दिये हैं।आज मजदूरों की आवाज दबंगता से सशक्त तरीके से कोई नहीं उठा पा रहा है। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में अर्थनीति के कारण रोजगार का संकट विद्यमान हो गया है।सामाजिक सुरक्षा योजना इंसान के पेट भरने की गारंटी नहीं है।भले ही हम दावा करते हों कि देश में कोई भूखा नहीं सोता है लेकिन दो जून की रोटी कई लोगों को नसीब नहीं हो पा रही है।अमीर और अधिक अमीर होता जा रहा है ,गरीब और अधिक गरीब। इस गहरी होती खाई को मिटाया नहीं गया तो पुनः सम्पूर्ण विश्व में रक्तपूर्ण क्रांति की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। राजनीतिक स्वार्थवश 'दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ' का नारा देने वाले हाशिये पर चले गए हैं।

तापमान में वृद्धि: गर्मी का कहर

विजय गर्ग

देश के बड़े हिस्से में तापमान वृद्धि से उपजी मुश्किलों से लोग दो-चार हैं, जो इंटर गवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज की दो माह पूर्व आई उस रिपोर्ट पर मोहर लगाती है, जिसमें बढ़ते तापमान से उपजे संकट की ओर इशारा किया गया था। चिंता की बात यह है कि ये प्रभाव निर्धारित समय से काफी पहले दिखाई दे रहे हैं। आज देश के कई हिस्से भीषण गर्मी की गिरफ्त में हैं जिससे सामान्य जन-जीवन प्रभावित है और लाखों लोगों की जिंदगी व आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव नजर आ रहा है। बढ़ती गर्मी के चलते देश भर में बिजली की मांग में तेज उछाल आया है जिसके चलते नया बिजली संकट पैदा हो रहा है क्योंकि इससे थर्मल पावर स्टेशनों में कोयले की आपूर्ति दबाव में आ गई है।

विडंबना यह है कि कोविड संकट के दौरान देश को संबल देने वाले कृषि क्षेत्र में संकट की दस्तक दिखायी दे रही है। चिंता की बात यह है कि खराब मौसम के चलते गेहूं की उत्पादकता में गिरावट आई है। हमें जलवायु परिवर्तन के लगातार घातक होते दायरे को महसूस करना चाहिए। इस साल मार्च में गर्मी का पिछले 120 साल का रिकॉर्ड टूटना इस संकट की ओर ही इशारा कर रहा है। वक्त की मांग कि हमारी कृषि व लोगों की जीवन शैली को जलवायु संकट से उत्पन्न चुनौतियों के मुकाबले के लिये तैयार किया जाये। उन फसलों पर शोध व अनुसंधान की जरूरत है जो कम पानी व अधिक तापमान में उगायी जा सकती हैं। तभी हम जलवायु संकट से उपजे हालात का सामना करते हुए अपनी बढ़ती आबादी के लिये खाद्यान्न उपलब्ध करा पायेंगे जिसमें जहां एक ओर किसानों को नये फसल चक्र को अपनाने के लिये प्रेरित करने की जरूरत हैं, वहीं आम लोगों को जीवन शैली में बदलाव के लिये मानसिक रूप से तैयार करने की भी जरूरत है। तभी हम इस चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं।

जीत के बाद बोले हार्दिक पंड्या- हमारी टीम में कोई बड़ा या छोटा नहीं

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अपने पहले सत्र में शानदार प्रदर्शन कर रही गुजरात टाइटन्स के कप्तान हार्दिक पंड्या ने कहा कि उनकी टीम में कोई बड़ा -छोटा नहीं है और सभी खिलाड़ी बराबर है। पीठ में चोट के कारण हार्दिक यूएई में टी20 विश्व कप के बाद से भारतीय टीम से बाहर हैं। उनकी अगुवाई में हालांकि गुजरात की टीम ने नौ मैचों में आठ में जीत दर्ज की। टीम ने शनिवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर को छह विकेट से हराकर प्ले ऑफ में अपनी जगह लगभग पक्की कर ली है।

पंड्या ने मैच के बाद कहा कि एक व्यक्ति के रूप में मैं सिर्फ अपना विकास नहीं करना चाहता हूं। मुझे अपनी टीम के साथियों या अपने आसपास के लोगों के साथ आगे बढ़ना पसंद है। यही हमारी सफलता का कारण भी है। जाहिर है, मैं कप्तान हो सकता हूं, लेकिन हमारी टीम में कोई सीनियर जूनियर नहीं है। उन्होंने कहा कि इस मामले में हर कोई एक ही रास्ते पर है, सब का एक ही लक्ष्य है। टीम में सभी खिलाड़ियों को लगता है कि वह कप्तान की तरह ही अहम है। हां जाहिर है, मैं नयी भूमिका का लुत्फ उठा रहा हूं। मेरे आस पास शानदार लोगों का समूह है। जिस तरह से परिणाम हमारे पक्ष में रहे है, मैं उससे बेहतर शुरुआत की उम्मीद नहीं कर सकता हूं।

कोलिंस और ओसाका मैड्रिड ओपन के दूसरे दौर में

मैड्रिड। पूर्व नंबर एक खिलाड़ी नाओमी ओसाका ने यहां मैड्रिड ओपन के पहले दौर में क्वालीफायर अनास्तासिया पोटापोवा पर 6-3, 6-1 की आसान जीत दर्ज की। चार बार की ग्रैंडस्लैम चैम्पियन ने अवसाद का हवाला देते हुए पिछले साल फ्रेंच ओपन से हटने का फैसला किया था। आस्ट्रेलियाई ओपन के फाइनल में पहुंची डेनियल कोलिंस ने 2016 ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता मोनिका पुइग पर 7-5 6-0 से जीत दर्ज कर अगले दौर में प्रवेश किया। जेसिका पेगुला और मारिया सकारी ने भी अपने मुकाबले जीते।

आरसीबी के कप्तान फाफ डु प्लेसिस ने बताई हार की वजह

मुंबई। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान गुजरात टाइटंस से मिली हार के बाद निराश दिखे। उन्होंने कहा कि हम 175-180 के स्कोर पर पहुंचने की कोशिश कर रहे थे। हमने अच्छी शुरूआत की थी। लेकिन उन्होंने बीच के ओवरों में अच्छी गेंदबाजी की। मुझे शुरू से ही लगा कि हम कुल से 5-10 रन कम हैं। हमने गेंद से अच्छी शुरुआत की थी। लेकिन मैच जैसे-जैसे आगे बढ़ा गुजरात टाइटंस के खिलाड़ियों ने इस पर कब्जा कर लिया। वह लक्ष्य का पीछा करने के दौरान शांत रहते हैं। पाटीदार ने वास्तव में अच्छा खेला, यह उनके और टीम के लिए बहुत अच्छा था। डु प्लेसिस बोले- एक टीम के रूप में इस तरह से बल्लेबाजी करने का यह एक अच्छा प्रयास था। खासकर पिछले दो मैचों के दौरान जो हुआ, उस आत्मविश्वास को हम आगे बढ़ाएंगे। मुझे लगता है कि हमने शॉर्ट साइड पर ज्यादा रन दिए। एक तरफ मैदान बड़ा था। हमें जरूरत थी कि बल्लेबाजों को शॉर्ट साइड से दूर रखें। अगर मैं गलत नहीं हूं तो चौथा आखिरी ओवर, हम उन्हें शॉर्ट साइड पर खिलाते रहे और यही वह है जिससे आपको दूर रहना होगा। हमें कम से कम नुकसान लेना होगा। आप एक बड़ी बाउंड्री के साथ तब भी अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं, जब आप सही क्षेत्रों में गेंदबाजी करते हैं।

वहीं, कोहली के रन बनाने पर डुप्लेसिस ने कहा कि यह सही दिशा में एक बड़ा कदम था। क्रिकेट आत्मविश्वास का खेल है। उन्होंने एक अर्धशतक लगाया है। यह कुछ ऐसा है जिसका फायदा हमें आगे जाकर मिलेगा। आपको शीर्ष -4 में किसी को बाहर जाने और तेजी से रन बनानी की जरूरत होगी।

9वें मैच में मुंबई को नसीब हुई जीत, राजस्थान को 5 विकेट से हराया

मुंबई। राजस्थान रॉयल्स और मुंबई इंडियंस के बीच आईपीएल 2022 का 44वां मैच मुंबई के डॉ. डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स अकादमी में खेला गया। मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीत लिया है और पहले गेंदबाजी का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करते हुए राजस्थान रॉयल्स ने जोस बटलर की अर्धशतकीय पारी के बदौलत 20 ओवरों में 6 विकेट के नुकसान पर 158 रन ही बना पाई और मुंबई इंडियंस को 159 रन का लक्ष्य दिया। लक्ष्य का पीछा करने आई मुंबई इंडियंस ने 5 विकेट के नुकसान पर जीत हासिल दर्ज कर ली। मुंबई ने 19.2 ओवर में 161 रन बनाकर पहली जीत दर्ज की।

राजस्थान रॉयल्स (पहली पारी)

पहले बल्लेबाजी के लिए आई राजस्थान रॉयल्स का पहला विकेट देवदत्त पडिक्कल के रूप में लगा। पडिक्कल ऋतिक शौकीन ने 15 रन पर आउट किया।

इसके बाद दूसरा विकेट कप्तान संजू सैमसन का गिरा। संजू सैमसन 7 गेंदों पर 2 छक्कों की मदद से 16 रन बनाकर कुमार कार्तिकेय की गेंद पर टिम डेविड को कैच थमा बैठे। डेनियल सैम्स ने डेरिल मिचेल को 17 रन पर आउट करके टीम को तीसरी सफलता दिलाई।

टॉप फॉर्म में चल रहे जोस बटलर ने इस मैच में भी अपने बल्ले का कमला दिखाया। बटलर ने ऋतिक के ओवर की पहली 4 गेंदों पर 4 छक्के जड़ दिए। दो गेंदों बाद ही वह छक्का लगाने के चक्कर में बाउंड्री के पास पकड़े गए। बटलर ने 52 गेंदों पर 5 चौके और 4 छक्के की मदद से 67 रन की पारी खेलकर आउट हुए।

इसके बाद रिले मेरेडिथ ने रियान पराग को आउट कर मुंबई इंडियंस को 5वीं सफलता दिलाई।

तेजी से रन बटोर रहे अश्विन को रिले मेरेडिथ ने 21 रन पर आउट कर अपनी दूसरी सफलता हासिल की। अश्विन 9 गेंदों पर 3 चौके और एक छक्के की मदद से 21 रन बनाकर आउट हुए।

मुंबई इंडियंस (दूसरी पारी)

मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा अपने जन्मदिन के मौके पर भी बड़ी पारी खेलने में कामयाब नहीं हो पाए। रोहित शर्मा 2 रन बनाकर अश्विन का शिकार बने। ट्रेंट बोल्ट ने खराब फॉर्म में चल रहे ईशान किशन को 26 रन पर आउट कर राजस्थान रॉयल्स को दूसरी सफलता दिलाई। ईशान ने अपनी पारी के दौरान 4 चौके और एक छक्का लगाया। दो विकेट गिरने के बाद सूर्यकुमार यादव और तिलक वर्मा ने पारी को आगे बढ़ाया। सूर्यकुमार इस दौरान अच्छे टच में नजर आए। उन्होंने 36 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। वहीं, तिलक भी उनका अच्छा साथ देते नजर आए। मुंबई इंडियंस का तीसरा विकेट सूर्यकुमार यादव के रूप में गिरा। सूर्यकुमार यादव 39 गेंदों पर 5 चौके और 2 छक्के की मदद से 51 रन बनाकर आउट हुए। लगातार अच्छी पारी खेल रहे तिलक वर्मा इस मैच में भी शानदार लय में दिखे। प्रसिद्ध कृष्णा ने तिलक वर्मा को 35 रन पर आउट किया। उन्होंने अपना पारी के दौरान एक चौके और 2 छक्के लगाए। आखिरी ओवर की पहली ही गेंद पर किरोन पोलार्ड कैच आउट हो गए। पोलार्ड 14 गेंदों पर 10 रन बनाकर आउट हुए।

रियाल मैड्रिड ने चार मैच शेष रहते ही जीता 35वां खिताब, एस्पेनयोल को 4-0 से रौंदा

मैड्रिड। स्पेन के फुटबॉल क्लब रियाल मैड्रिड ने एक बार फिर से 'ला लिगा' पर कब्जा कर लिया है। उसने एस्पेनयोल के खिलाफ 4-0 की जीत के साथ ही खिताब अपने नाम कर लिया। लीग में अभी रियाल के चार मैच बाकी है, लेकिन कोई भी टीम अब उसे पीछे नहीं छोड़ सकती है। रियाल के 34 मैच में 81 अंक हैं। दूसरे स्थान पर काबिज सेविला के 34 मैच में 64 अंक हैं। बार्सिलोना 33 मैच में 63 अंक के साथ तीसरे और एटलेटिको मैड्रिड 33 मैच में 61 अंक के साथ चौथे पायदान पर है।

रियाल के लिए मैच में पहला गोल 33वें मिनट में ब्राजील को रोड्रिगो ने दागा। इसके ठीक 10 बाद उन्होंने दूसरा गोल कर टीम को 2-0 से आगे कर दिया। हाफटाइम तक यही स्कोर रहा। हाफटाइम के बाद भी एस्पेनयोल की टीम कोई कमाल नहीं दिखा सकी। रियाल के 55वें मिनट में मार्को असेंसियो ने तीसरा गोल कर दिया। इस मैच में स्टार खिलाड़ी करीम बेंजेमा के गोल की कमी थी, जिसे उन्होंने 81वें मिनट में पूरा कर दिया।

रियाल की टीम सबसे ज्यादा 35 बार ला लिगा टाइटल जीतने में सफल रही है। पिछली बार उसने 2019-20 सीजन में खिताब को अपने नाम किया, लेकिन 2020-21 में उसे निराशा हाथ लगी थी। तब एटलेटिको मैड्रिड की टीम चैंपियन बनी थी। एटलेटिको का वह 11वां टाइटल था। बार्सिलोना की टीम 26 बार चैंपियन बन चुकी है, लेकिन 2018-19 सीजन के बाद उसे सफलता नहीं मिली है। एटलेटिक बिल्बाओ ने आठ, वेलेंसिया ने छह, रियाल सोसिदाद ने दो, डिपोर्टिवो ने एक, सेविला ने एक और रियाल बेटिस ने एक बार खिताब अपने नाम किया है।

काउंटी में गरजा चेतेश्वर पुजारा का बल्ला, तीसरे मैच में जड़ा दूसरा दोहरा शतक

होव। भारतीय टेस्ट टीम में वापसी के लिए लय हासिल करने की कोशिश में इंग्लैंड गए चेतेश्वर पुजारा ने लगातार दूसरे मैच में ससेक्स के लिए दोहरा शतक लगाया। डरहम के खिलाफ काउंटी चैम्पियनशिप के दूसरे डिवीजन के इस चार दिवसीय मैच में पुजारा शनिवार को 334 गेंद में 203 रन बनाकर आउट हुए। दिन की शुरूआत 107 रन से करने वाले इस दिग्गज बल्लेबाज ने अपनी पारी में 24 चौके जड़े। उनके दोहरे

शतक की मदद से ससेक्स ने 538 रन बनाकर पहली पारी में 315 रन की बढ़त हासिल कर ली। डरहम की पहली पारी 223 रन पर सिमटी थी। भारतीय टीम में वापसी की राह देख रहे पुजारा का 5 पारियों में यह तीसरा शतक है। उन्होंने इस दौरान ससेक्स के साथ अपने पदार्पण मैच में छह और नाबाद 201 रन बनाए थे जिससे टीम ने डर्बीशर के खिलाफ फॉलोऑन मिलने के बाद मैच ड्रॉ कराया था। उन्होंने इसके बाद वॉस्टरशर के खिलाफ 109 और 12 रन की पारियां खेली थी।

इस मैच में हालांकि उनकी टीम को 34 रन से हार का सामना करना पड़ा था। दक्षिण अफ्रीका दौरे के बाद भारतीय टीम से बाहर हुए पुजारा इस शानदार लय के कारण इंग्लैंड दौरे पर टेस्ट श्रृंखला के आखिरी मैच के लिए टीम में वापसी कर सकते हैं।

सेमीफाइनल में जापान की यामागुची से हारीं पीवी सिंधु, कांस्य पदक से करना पड़ा संतोष

मैड्रिड। भारतीय बैडमिंडन स्टार पीवी सिंधु को बैडमिंटन एशिया चैंपियनशिप के सेमीफाइनल मैच में हार का सामना करना पड़ा है। इसके साथ ही इस प्रतियोगिता में पीवी सिंधु का सफर कांस्य पदक पर ही खत्म हो गया। महिला एकल के सेमीफाइनल मैच में जापान की अकाने यामागुची ने उन्हें 21-13, 19-21, 16-21 से हराया। एशियन चैंपियनशिप में सिंधु ने दूसरी बार कांस्य पदक जीता है। सिंधु ने इस मैच में शानदार शुरुआत की थी और पहला सेट जीता, लेकिन इसके बाद उन्होंने लय खो दी। लगातार दो सेट हारने के साथ ही उन्होंने मैच गंवा दिया और इस प्रतियोगिता में उनका सफर खत्म हो गया। सिंधू और यामागुची के बीच कुल 22 मैच हुए हैं। इनमें से 13 मैच सिंधु के नाम रहे हैं, लेकिन नौ मैच में यामागुची ने बाजी मारी है।

पहला सेट जीतने के बाद हारीं सिंधु

पीवी सिंधु ने इस मैच में शानदार शुरुआत की थी और पहला से 21-13 के अंतर से अपने नाम किया। हालांकि, दूसरे सेट में उन्होंने अपनी लय खो दी और यामागुची ने बेहतरीन वापसी की। जापानी खिलाड़ी ने दूसरा सेट 19-21 के करीबी अंतर से अपने नाम किया। दूसरे सेट में भी सिंधु पहले 13-11 के अंतर से आगे थीं, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद तीसरे सेट में यमागुची ने सिंधु को वापसी का मौका दिया और 16-21 से सीट जीतने के साथ ही मैच भी अपने नाम किया।

रेफरी से बहस के बाद पिछड़ी सिंधु-इस मैच में सिंधु बेहतरीन लय में थीं और पहला सेट जीतने के बाद दूसरे सेट में भी आगे चल रही थीं, लेकिन सर्विस में देरी करने के चलते मैच रेफरी ने सिंधू से कहा कि वो शटल यामागुची को दे दें। सिंधू ने कहा कि वो सर्विस के लिए तैयार थीं, लेकिन यामागुची तैयार नहीं थीं। इस वजह से उन्होंने सर्विस नहीं की, लेकिन रेफरी ने सिंधु की नहीं सुनी और सर्विस उनसे लेकर यमागुची को दे दी गई। इसके बाद भारतीय खिलाड़ी की लय टूट गई और वो मैच भी हार गईं। एशियाई बैडमिंटन चैंपियनशिप टूर्नामेंट की दो साल बाद वापसी हो रही है। कोरोना की वजह से दो साल तक इसे रद्द कर दिया गया था।

नवजात बेटी के साथ दिखे क्रिस्टियानो रोनाल्डो

मैड्रिड। क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने अपनी नवजात बेटी को पकड़े हुए सोशल मीडिया पर एक दिल दहला देने वाली तस्वीर पोस्ट की है। मैनचेस्टर यूनाइटेड स्टार और उनके साथी जॉर्जीना रोड्रिगेज ने इस महीने की शुरुआत में डिलिवरी के दौरान अपने नवजात बेटे को दुखद रूप से खो दिया था। जॉर्जीना के गर्भ में दो बच्चे थे जिनमें से सिर्फ एक को ही बचाया जा सका।

अमेरिकी बास्केटबॉल खिलाड़ी ड्वाइट हावर्ड काशी पहुंचे, मां गंगा की आरती की

वाराणसी। मन की शांति की तलाश में अक्सर पश्चिमी देशों के लोग भारत आते हैं। भारतीय संस्कृति और रीति-रिवाजों से जुड़कर उन्हें मन की शांति भी मिलती है। अमेरिकी बास्केटबॉल खिलाड़ी ड्वाइट हावर्ड के साथ भी ऐसा ही हुआ है। वो मन की शांति के लिए देव नगरी काशी पहुंचे थे और मां गंगा की आरती में शामिल हुए। इस आरती का हिस्सा बनने के बाद उनके मन को शांति मिली। उनके गंगा आरती में शामिल होने और तिलक लगाने का वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। ड्वाइट हावर्ड काशी एनबीए के दिग्गज खिलाड़ी हैं। उन्होंने इस शहर की काया बदलने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद भी दिया।

ड्वाइट हावर्ड ने गंगा आरती में शामिल होने के बाद एक वीडियो भी शेयर किया। इसके साथ उन्होंने लिखा 'वाराणसी की आध्यात्मिक यात्रा के बाद खुद के भीतर शांति और सुकून महसूस कर रहा हूं। इस एक यात्रा ने आत्मा को फिर से जीवंत कर दिया। पवित्र शहर के कायाकल्प के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई। वाराणसी की तरफ दुनिया के कई दिग्गज आकर्षित हुए हैं। मैं भी खुद को यहां पाकर विनम्र महसूस कर रहा हूं। मुझे यकीन है कि इस पवित्र शहर का पुनर्जन्म कई और लोगों को प्रेरित करेगा।

गंगा आरती के बाद लगवाया त्रिपुंड

ड्वाइट हावर्ड ने गंगा आरती में शामिल होने के बाद भारतीय संस्कृति को समझने की कोशिश की और माथे पर त्रिपुंड भी लगवाया। ड्वाइट से पहले भी कई विदेशी खिलाड़ी और बड़ी हस्तियां भारतीय संस्कृति और रीति रिवाजों से जुड़े रहे हैं। हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर ग्लेन मैक्सवेल ने दक्षिण भारतीय रीति रिवाजों के अनुसार शादी की थी। इसके बाद न्यूजीलैंड के डेवोन कॉन्वे ने भी अपनी शादी से पहले की पार्टी भारतीय परिधान में की थी।

एनबीए में लॉस एंजिल्स के लिए खेलते हैं ड्वाइट

ड्वाइट हावर्ड एनबीए में लॉस एंजिल्स के लिए खेलते हैं। वो सेंटर फॉरवर्ड की पोजिशन में खेलते हैं। उनके काशी आने पर उत्तर प्रदेश का पर्यटन विभाग भी बहुत खुश है। यूपी के पर्यटन विभाग ने

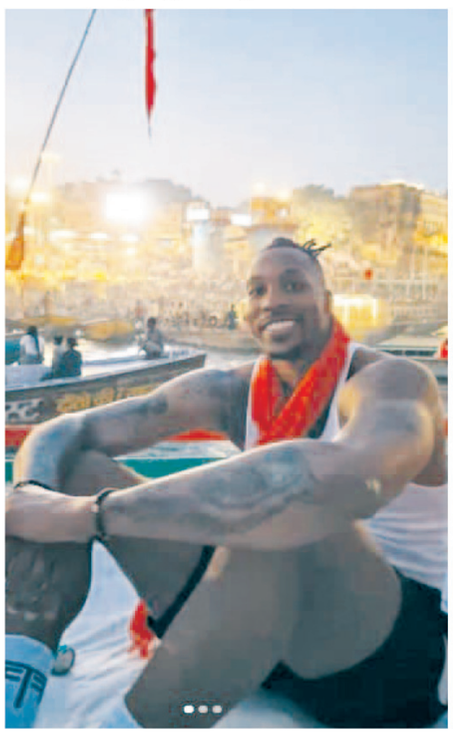

उनके काशी आने की तस्वीरें शेयर करते हुए बताया कि हावर्ड ने गंगा आरती के बाद काशी शहर से जुड़े अपने संस्मरण साझा किए।

हार के बाद अश्विन का बयान, ओस प्रभाव नहीं डालती तो 158 पर्याप्त स्कोर होता

नवी मुंबई। राजस्थान रॉयल्स के ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने अपनी टीम की इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में मुंबई इंडियन्स के हाथों पांच विकेट से हार के बाद कहा कि यदि ओस अहम भूमिका नहीं निभाती तो 159 रन का लक्ष्य पर्याप्त होता।

मुंबई ने इस मैच में जीत दर्ज करके आखिरकार आईपीएल के वर्तमान सत्र में अपना खाता खोला तथा अपने कप्तान रोहित शर्मा को 35वें जन्मदिन का सर्वश्रेष्ठ उपहार दिया। मुंबई के सामने 159 रन का लक्ष्य था जो उसने 19.2 ओवर में हासिल कर दिया। उसकी तरफ से सूर्यकुमार यादव ने 51 और तिलक वर्मा ने 35 रन बनाये। अश्विन ने मैच के

बाद संवाददाताओं से कहा, 'मुझे लगता है कि यदि ओस ने भूमिका नहीं निभाई होती तो यह स्कोर पर्याप्त होता, लेकिन बहुत अधिक ओस पड़ रही थी, इसलिए लगा कि हमने 10-15 रन कम बनाए।'

उन्होंने कहा, '158 प्रतिस्पर्धी स्कोर था। यह इससे जुड़ा था कि हमारी शुरुआत कैसे रही थी। हमने पावरप्ले में अच्छा प्रदर्शन किया था और उनकी तुलना में एक विकेट अधिक लिया था।' अश्विन ने कहा, 'इसलिए यह चुनौतीपूर्ण स्कोर था और हमने इस सत्र में जो भी स्कोर बनाया उसका अच्छा बचाव किया।

हार दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन ओस ने अहम भूमिका निभाई। गेंद ओवरपिच हो रही थी और स्पिनरों का उपयोग आखिर में नहीं किया जा सकता था।' ऑफ स्पिनर ने कहा, 'जब ओस प्रभाव डालती है तो ऐसा होता है। हमने अच्छा स्कोर बनाया था। यदि यह 10-15 रन अधिक होता तो अच्छा होता लेकिन आईपीएल में (एक टीम के) 14 मैचों में कभी ऐसा हो जाता है।'

राजस्थान ने मुंबई को पावरप्ले में कुछ खास नहीं करने दिया और दो विकेट भी लिये लेकिन कामचलाऊ गेंदबाज डेरिल मिचेल ने सातवें ओवर में 20 रन लुटा दिये। अश्विन ने कहा, 'पिछले मैच में भी डेरिल मिचेल ने सातवां ओवर किया था। यह छठे गेंदबाज के लिये हमारी रणनीति का हिस्सा है, लेकिन आज यह नहीं चल पाई। कभी ऐसा होता है।'

तेवतिया-मिलर की शानदार जुगलबंदी, गुजरात ने बैंगलुरु को 6 विकेट से हराया

मुंबई। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु के खिलाफ खेले गए आईपीएल 2022 के 43वें मैच में राहुल तेवतिया और डेविड मिलर की शानदार पार्टनरशिप की बदौलत गुजरात टाइटंस ने विजय अभयान को जारी रखा। ये गुजरात की लगातार 5वीं जीत है और टीम प्वाइंट टेबल में 9 मैचों में 8 जीत के साथ 16 अंक लेकर पहले स्थान पर काबिज है। आरसीबी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का विकल्प चुना और विराट कोहली की अर्धशतकीय पारी की बदौलत 6 विकेट के नुकसान पर 170 रन बनाते हुए गुजरात को 171 रन का लक्ष्य दिया है। इसके जवाब में उतरी गुजरात टीम ने रिद्धिमान साहा और शुभमन गिल की बदौलत अच्छी शुरूआत की। वहीं तेवतिया और मिलर ने शानदार भागीदारी करते हुए 3 गेंदें रहते 4 विकेट के नुकसान पर 174 रन बनाकर टीम को 6 विकेट से जीत दिलाकर वापस लौटे।

फॉफ डुप्लेसिस 4 गेंदें खेलकर शून्य पर आउट हुए। वह सांगवान की दूसरे ओवर की पांचवीं गेंद पर विकेटकीपर साहा के हाथों कैच आउट हुए। रजत पाटीदारी 32 गेंदों पर 5 चौकों और 2 छक्कों की मदद से 52 रन बनाकर सांगवान की 15वें ओवर की पहली गेंद पर शुभमन गिल को कैच थमा बैठे और आउट हो गए। कोहली 53 गेंदों पर 58 रन की धीमी पारी खेलकर शमी की 17वें ओवर की चौथी गेंद पर बोल्ड हुए। कोहली ने अपनी पारी के दौरान 6 चौके और एक छक्का लगाया। दिनेश कार्तिक तीन गेंदों पर मात्र दो रन बनाकर राशिद खान की 18वें ओवर की तीसरी गेंद पर शमी के हाथों बोल्ड हुए। ग्लेन मैक्सवेल 18 गेंदों पर तीन चौकों और दो छक्कों की मदद से 33 रन बनाकर आउट हुए। वह 19वें ओवर की लॉकी फर्गुसन की तीसरी गेंद राशिद खान के हाथों कैच आउट हुए। महिपाल लोमरोड़ 8 गेंदों पर 16 रन बनाकर अल्ज़ारी जोसेफ की 20वें ओवर की आखिरी गेंद पर कैच आउट हुए। अंत में महिपाल लोमरोर (2) नाबाद वापस लौटे। साहा 22 गेंदों पर चार चौकों की मदद से 29 रन बनाकर हसरंग की 8वें ओवर की तीसरी गेंद पर रजत पाटीदार के हाथों कैच आउट हुए। टीम को दूसरा झटका शुभमन गिल के रूप में लगा।

यूक्रेन में हुए रूसी रॉकेट हमले में ओडेसा हवाईअड्डा का रनवे क्षतिग्रस्त

कीव। रूस के रॉकेट हमले में यूक्रेन के तीसरे सबसे बड़े शहर ओडेसा के हवाईअड्डे का रनवे और काला सागर का एक महत्वपूर्ण बंदरगाह क्षतिग्रस्त हो गया है। यूक्रेन की सेना ने यह जानकारी दी। 'टेलीग्राम' पर एक पोस्ट में यूक्रेन के 'ऑपरेशनल कमान साउथ' ने

बताया कि रॉकेट हमले के बाद ओडेसा रनवे उपयोग के लायक नहीं रह गया है।यूक्रेन की समाचार समिति 'यूएनआईएएन' ने सेना के सूत्रों के हवाले से कहा कि स्थानीय प्रशासन ने लोगों से सुरक्षित जगहों पर शरण लेने को कहा है। ओडेसा में विस्फोट की कई आवाज सुनी गई है। ओडेसा के क्षेत्रीय गवर्नर ने कहा कि रॉकेट रूस के कब्जे वाले क्रीमिया से दागे गए थे। उन्होंने बताया कि किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

श्रीलंका के राष्ट्रपति राजपक्षे ने राजनीतिक दलों से मतभेद भुलाने का आह्वान किया

कोलंबो। श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे ने रविवार को कहा कि सभी राजनीतिक दल अपने मतभेदों को भुला दें और सभी जनहित को ध्यान में रखें। गौरतलब है कि देश इस समय सबसे बुरे आर्थिक दौर से गुजर रहा है और सरकार से तत्काल इस्तीफा देने की

मांग की जा रही है। राजपक्षे ने अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर जनता को दिए संदेश में मतभेद भुलाने और जनहित को ध्यान में रखने की बात कही।इससे एक दिन पहले श्रीलंका की शक्तिशाली बौद्ध धार्मिक संस्था ने चेतावनी दी थी कि अगर गोटबाया के बड़े भाई एवं देश के प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे ने देश के राजनीतिक और आर्थिक संकट को सुलझाने के लिए अंतरिम सरकार बनाने के वास्ते इस्तीफा नहीं दिया तो लोग सभी नेताओं को खारिज कर देंगे।गोटाबाया ने ट्वीट किया, ''अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर मैं एक बार फिर सभी राजनीतिक दलों को एक साथ आने का आमंत्रण देता हूं। आइये राजनीतिक मतभेदों को भूलकर जनहित के संघर्ष में हाथ मिलाएं।

प्रधानमंत्री शहबाज के बेटे हमजा ने ली पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री पद की शपथ

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के नए प्रधान मंत्री शहबाज शरीफ के बेटे हमजा शहबाज शरीफ ने देश के सबसे राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र पंजाब प्रांत की कमान संभाल ली। जिसके बाद पाकिस्तान की राजनीति में उनके वंश की पकड़ और मजबूत हो गई है। पंजाब के सीएम पद के लिए हफ्तों के गतिरोध के बाद शनिवार को हमजा शहबाज शरीफ ने देश के सबसे अमीर,सबसे अधिक आबादी वाले और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली प्रांत पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में पदभार संभाला।

गौरतलब है कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग-क्यू (क्क्रक्त) के प्रत्याशी परवेज इलाही और विधानसभा में विपक्ष के नेता हमजा शहबाज के बीच सीएम पद के लिए मुख्य मुकाबला था। हमजा पाकिस्तान के नवनियुक्त पीएम शहबाज शरीफ के पुत्र हैं। इससे पहले इमरान खान के करीबी उस्मान बुजदार सीएम थे। वह 2018 में सीएम बने थे, लेकिन अविश्वास प्रस्ताव में इमरान सरकार के पतन के साथ ही उनकी भी बिदाई हो गई थी। डॉन के अनुसार लाहौर हाईकोर्ट ने बुधवार को आदेश दिया था कि राज्य के नए सीएम का चुनाव कराया जाए।

वार-पलटवार: जेलेंस्की का दावा- कमजोर हो गया रूस, विक्ट्री डे परेड में सजाने के लिए भी नहीं बचे हथियार

कीव। रूस और यूक्रेन के बीच 24 फरवरी को शुरू हुई जंग अभी भी जारी है। इस युद्ध का आज 67वां दिन है, इसके बावजूद रूस की ओर से हमले बंद नहीं किए गए हैं। उधर, यूक्रेनी सेना भी रूसी सैनिकों को दक्षिण और पूर्व में दाखिल होने से रोकने के लिए लगातार हमले कर रही है। इस बीच करीब 15 लाख यूक्रेनी किसी न किसी कारण से यूक्रेन छोड़कर जा चुके हैं। एक दिन पहले यूक्रेनी राष्ट्रपति ने आरोप लगाया था कि पांच लाख यूक्रेनी नागरिकों को जबरन रूस ले जाया गया है।

24 घंटे में यूक्रेन ने रूस के कई फाइटर जेट किए तबाह

यूक्रेनी सेना की ओर से दावा किया गया है कि उन्होंने रूस के नौ से ज्यादा हवाई हमलों को रोक दिया है। कहा गया है कि पिछले 24 घंटे में यूक्रेनी सेना ने रूस के करीब नौ फाइटर जेट नेस्तनाबूद कर दिए। इसमें दो S-25i और सात यूएवी थे।

रूस को उम्मीद से ज्यादा हुआ सैन्य नुकसान- जेलेंस्की

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा, रूस और यूक्रेन के बीच जंग 24 फरवरी को शुरू हुई थी। तब से लेकर अब तक रूस को 1000 से अधिक टैंक, 200 विमान और 2500 मिलिट्री

वाहनों का नुकसान हुआ है। जेलेंस्की ने कहा, रूस को यूक्रेन के खिलाफ और अधिक मिसाइलों और रॉकेट का इस्तेमाल करना होगा।

विक्ट्री डे परेड के लिए भी नहीं बचे हथियार

यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा कि, यूक्रेनी सेना ने रूस को करारा जवाब दिया है। उनका बहुत अधिक सैन्य नुकसान किया है, जिससे रूस कमजोर पड़ गया है। उन्होंने कहा- बेशक रूस के पास हमारी सीमा में हमला करने के लिए और अधिक हथियार होंगे, लेकिन मास्को में नौ मई को होने वाली विक्ट्री डे परेड में सजाने के लिए उनके पास हथियार नहीं बचे हैं।

रूस ने नाजियों की तरह मचाया कत्लेआम

यूक्रेन के मैरियूपोल शहर के मेयर ने कहा, रूस ने ठीक बिल्कुल वैसा ही किया है, जैसा नाजियों ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान किया था। उन्होंने कहा जर्मनी के कब्जे के दौरान 10 हजार लोगों को मार दिया गया था। वहीं रूसी सेना ने यहां 20 हजार से ज्यादा लोगों को मौत की नींद सुला दिया।

अमेरिकी हाउस स्पीकर ने किया कीव का दौरा

अमेरिकी हाउस स्पीकर नैंसी पेलोसी ने रविवार को कीव का दौरा किया। इस दौरान उनके साथ अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल भी मौजूद रहा। नैंसी पेलोसी ने अपनी यात्रा के दौरान यूक्रेन के राष्ट्रपति वेलोदिमीर जेलेंस्की से मुलाकात की। इस दौरान रूस द्वारा किए गए हमले पर दोनों नेताओं की चर्चा हुई।

सऊदी अरब: इमरान खान और 150 अन्य के खिलाफ मामला दर्ज, पाक पीएम शहबाज शरीफ के खिलाफ नारेबाजी का आरोप

इस्लामाबाद। सऊदी अरब में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और उनके प्रतिनिधिमंडल के खिलाफ नारेबाजी के मामले में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की पुलिस ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान और 150 अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

अभद्र भाषा का किया था इस्तेमाल

हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो क्लिप वायरल हुई थी जिसमें दिख रहा था कि जब शहबाज शरीफ अपने प्रतिनिधिमंडल के साथ जैसे ही मदीना में पैगंबर की मस्जिद पर पहुंचे तो कुछ पाकिस्तानी तीर्थयात्रियों ने उनके खिलाफ अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया। उन्होंने चोर और गद्दार कहकर उनके खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इस मामले में मदीना पुलिस ने पांच लोगों को गिरफ्तार करने का दावा किया है।

इमरान के करीबियों का नाम भी शामिल

पाकिस्तानी अधिकारियों के मुताबिक, पंजाब पुलिस ने

शनिवार रात इमरान खान और 150 अन्य लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया। इसमें पूर्व मंत्री फवाद चौधरी और शेख रशीद, इमरान खान के पूर्व सलाहकार शाहबाज गुल, नेशनल असेंबली के पूर्व डिप्टी स्पीकर कासिम सूरी और लंदन में इमरान खान के करीबी सहयोगी अनिल मुसरत और साहिबजादा जहांगीर का नाम भी शामिल है।

फैसलाबाद के पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज

अधिकारियों ने बताया कि लाहौर से लगभग 180 किलोमीटर दूर फैसलाबाद के एक पुलिस स्टेशन में स्थानीय निवासी नईम भट्टी की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया है। नईम भट्ट ने अपना शिकायत में मदीना में पैगंबर की मस्जिद को अपवित्र करने, गुंडागर्दी करने और मुसलमानों की भावनाओं को आहत करने का आरोप लगाया है। पुलिस का कहना है कि इस मामले में नामजद लोगों के खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। पाकिस्तान दंड संहिता की धारा 295 समेत कई धाराओं में मामला दर्ज किया है। FIR के मुताबिक, मदीना में मस्जिद-ए-नबवी में शरीफ और उनके प्रतिनिधिमंडल को निशाना बनाने के मकसद से इमरान खान के 100 से अधिक समर्थकों को पाकिस्तान और ब्रिटेन से सऊदी अरब भेजा गया था।

इमरान खान ने दी थी सफाई

एक टीवी को दिए इंटरव्यू में इमरान ने कहा था, 'वह किसी को भी पवित्र स्थान पर नारे लगाने के लिए कहने के बारे में सोच भी नहीं सकते।

पोलियो से हारता पाकिस्तान, एक हफ्ते के भीतर सामने आया दूसरा केस

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत में दो साल की एक बच्ची पोलियो से संक्रमित पाई गई है। एक सप्ताह के भीतर पाकिस्तान में पोलियो का यह दूसरा मामला सामने आया है। पोलियो के दो मामले सामने आने के बाद पाकिस्तान के स्वास्थ्य अधिकारी चिंतित हो गए हैं, क्योंकि देश में आगामी ईद की छुट्टियों के मद्देनजर

बड़े पैमाने पर लोगों के आवागमन में वृद्धि होने के कारण पोलियो के वायरस के फैलने का खतरा भी काफी बढ़ गया है।अफगानिस्तान के अलावा पाकिस्तान दुनिया के उन दो देशों में शामिल है, जहां पोलियो खत्म होने की स्थिति में है। पोलियो का वायरस बेहद संक्रामक माना जाता है। जब तक पोलियो का सफाया नहीं हो जाता, तब तक दुनिया भर के बच्चों को जीवन भर लकवा होने या वायरस से मृत्यु होने का खतरा बना रहता है।

अफगानिस्तान में आतंकी हमले: यूएनएससी ने की निंदा, कहा- आतंक का समर्थन करने वालों को न्याय के कटघरे में लाना जरूरी

संयुक्त राष्ट्र। तालिबान राज के बाद से अफगानिस्तान आतंक का दंश झेल रहा है। आतंकी हमले यहां आम बात हो गई है। इस बीच पाकिस्तान से तकरार के चलते भी इस देश में आतंकी गतिविधियां बढ़ गई हैं। 29 अप्रैल को काबुल की एक मस्जिद में बम धमाका किया गया, जिसमें 30 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई वहीं कई घायल हो गए। अफगानिस्तान में इस तरह का हमला पहला नहीं है। इससे पहले भी यहां कई ऐसे हमले किए गए, जिसमें आम नागरिकों को निशाना बनाया गया है।

यूएनएससी ने की निंदा

अफगानिस्तान में बढ़ते आतंकी हमलों के बीच संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने बयान जारी किया है। सुरक्षा परिषद की ओर से जारी किए गए बयान में इन

हमलों की निंदा की गई है। इसके साथ ही आतंक का समर्थन, उनको आर्थिक मदद मुहैया कराने वालों को जवाबदेह ठहराने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। मस्जिद हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए यूएनएससी ने कहा, आतंक का समर्थन करने वालों को न्याय के कटघरे में लाना होगा। इस दौरान सुरक्षा परिषद ने सभी देशों से आतंकवाद के खिलाफ सहयोग की अपील की। यूएनएनसी ने कहा आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा व शांति के लिए खतरा है।

28 अप्रैल को भी हुए थे धमाके

अफगानिस्तान में 28 अप्रैल की शाम भी दो धमाके हुए थे। दो विस्फोटों में कम से कम नौ लोग मारे गए और 13 अन्य घायल हो गए। धमाका बल्ख प्रांत के मजार-ए-शरीफ इलाके में हुआ था।

इन धमाकों में सार्वजनिक परिवहन को निशाना बनाया गया। इससे पहले भी 21 अप्रैल को अफगानिस्तान में आतंकी हमले हुए थे। इन हमलों की जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट ने ली थी।

फलस्तीनी हमलावरों ने सुरक्षा गार्ड को मारी गोली, हमास समूह के 2 सदस्यों को किया अरेस्ट

यरुशलम। इजराइल सेना ने कहा कि फलस्तीनी हमलावरों ने देर रात वेस्ट बैंक में एक यहूदी बस्ती के प्रवेश द्वार पर एक सुरक्षा गार्ड की गोली मारकर हत्या कर दी। इस हमले से पहले से ही जारी इजराइली-फलस्तीनी तनाव में और इजाफा हो सकता है। इजराइल सेना ने कहा कि शनिवार तड़के हमलावर एरियल बस्ती के प्रवेश द्वार पर पहुंचे और सुरक्षा गार्ड को उसकी चौकी पर गोली मार दी और फिर वहां से फरार हो गए। इजराइली सेना ने यहूदी बस्ती के प्रवेश द्वार पर एक सुरक्षा गार्ड की गोली मारकर हत्या करने वाले दो फलस्तीनी हमलावरों की तलाश के लिए शनिवार को उत्तरी वेस्ट बैंक में एक तलाशी अभियान शुरू किया।सेना ने कहा कि सुरक्षा गार्ड को उत्तरी वेस्ट बैंक में एक प्रमुख बस्ती एरियल के बाहर शुक्रवार देर रात एक कार में सवार दो हमलावरों ने गोली मार दी। इसने कहा कि गार्ड एक अन्य गार्ड के सामने खड़ा था जिससे उसकी जान बच गई। सेना ने कहा कि इजराइली बलों ने शनिवार को जांच चौकियां स्थापित कीं और इलाके में हमलावरों की तलाश की जा रही है। सेना ने कहा कि उसने हमास समूह के दो कथित सदस्यों को गिरफ्तार किया, लेकिन तत्काल इसका कोई संकेत नहीं कि वे हमले में शामिल थे। फलस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि इजराइली सैनिकों ने शनिवार तड़के कलकिल्या शहर के पास अज़ौन गांव में संघर्ष के दौरान 27 वर्षीय एक फलस्तीनी व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी।

श्रीलंका : विपक्षी नेता का दावा, अगले सप्ताह संसद में साबित करेंगे बहुमत, दवाओं के दाम 40 से 60 फीसदी तक बढ़े

कोलंबो। श्रीलंका के विपक्षी दल एसजेबी के एक वरिष्ठ नेता ने दावा किया कि उनकी पार्टी राजपक्षे परिवार के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के दौरान अगले सप्ताह संसद में बहुमत साबित कर देगी। इस बीच देश में दवाओं के दाम और अधिक बोझ पड़ेगा। उधर, राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे ने अंतरिम सरकार बनाने के लिए

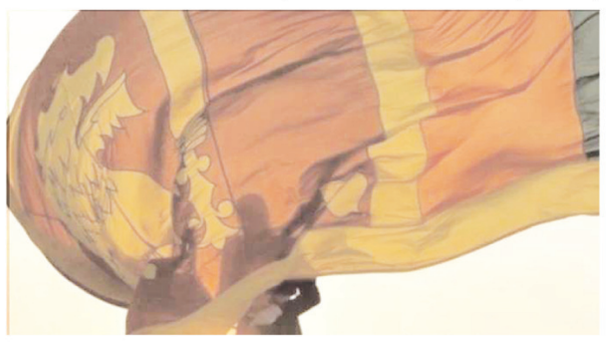

225 सदस्यीय संसद में 113 सांसदों का समर्थन हासिल कर विपक्ष से बहुमत दिखाने की चुनौती दी है। एसजेबी सांसद और मुख्य विपक्षी सचेतक लक्ष्मण किरीला ने कहा, हर कोई देखेगा कि अगले सप्ताह हमारे पास बहुमत होगा। फिलहाल यह नहीं बताऊंगा कि हम इसे कैसे करने जा रहे हैं। उन्होंने राष्ट्रपति से कहा कि उन्हें पद से इस्तीफा दे देना चाहिए और उसके बाद सांविधानिक सुधार होने चाहिए।

बौद्ध भिक्षुओं ने दी सरकार विरोधी फरमान जारी करने की धमकी

श्रीलंकाई शक्तिशाली बौद्ध भिक्षुओं ने राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे की सरकार के खिलाफ एक फरमान जारी करने की धमकी दी है।

उन्होंने देश में आर्थिक व सियासी संकट को हल करने के लिए अंतरिम सरकार के लिए रास्ता बनाने में सरकार की नाकामी के खिलाफ प्रदर्शन की चेतावनी भी दी। बौद्ध भिक्षु सिरिसुमना ने कहा, वे एक बैठक में सरकार के खिलाफ एक फरमान भी जारी करेंगे।

भारत ने भेजी दवाओं व चिकित्सा आपूर्ति की बड़ी खेप

भारत ने नौसेना के जहाज की मदद से महत्वपूर्ण दवाओं की एक बड़ी खेप श्रीलंका पहुंचाई है। भारतीय उच्चायुक्त गोपाल बागले ने बताया, 'गवर्नमेंट मेडिकल ऑफिसर्स एसोसिएशन' ने एक पोर्टल बनाया है, जो दवाओं और अन्य आवश्यक सामग्रियों के दान की मांग कर रहा है। इस मांग के आधार पर ही भारत की ओर से जीवनरक्षक दवाओं की खेप भेजी गई है।

गर्मी से भारत के पड़ोसी भी बेहाल: पाकिस्तान में 61 साल का रिकॉर्ड टूटा, पारा 48 डिग्री पार; नेपाल-बांग्लादेश में भी यही हाल

बीजिंग। चीन ने विदेशी व घरेलू बैंक के प्रतिनिधियों के साथ एक आपात बैठक की। रविवार को एक मीडिया रिपोर्ट में बताया गया कि चीन की सरकार ने अमेरिकी प्रतिबंधों से अपने विदेशी संपत्तियों को बचाने के लिए आनन-फानन में यह बैठक बुलाई। 22 अप्रैल को यह आपात बैठक चीन के सेंट्रल बैंक व वित्त मंत्रालय के अधिकारियों ने विदेश व घरेलू बैंक के एक्जीक्यूटीव के साथ बातचीत की।

फाइनेंशियल टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, 'यदि चीन ताइवान पर हमला करता है तब पश्चिमी अर्थव्यवस्था की ओर से

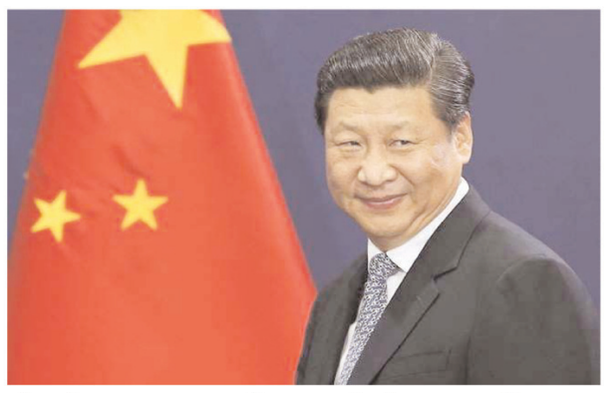

चीन को अलग थलग कर दिया जाएगा जो रूस की तुलना में कहीं अधिक बदतर होगा।' ताइवान पर चीन के हमले की संभावना को देखते हुए अमेरिकी प्रतिबंधों को लेकर आगाह किया जा रहा है। बता दें कि ताइवान के साथ अमेरिकी अधिकारियों के संपर्क को लेकर बीजिंग की ओर से लगातार वाशिंगटन की निंदा की जा रही है।

लगातार फाइटर जेट भेज रहा चीन

उल्लेखनीय है कि चीन की ओर से लगातार बड़ी संख्या में फाइटर जेट को ताइवान भेजा जा रहा है। इसके मद्देनजर अमेरिका ने जापान और आट्रेलिया के साथ गहन बातचीत शुरू कर दी है। अमेरिका के इंडो-पैसिफिक कमांड के प्रमुख एडमिरल जान अक्विलिनो ने कहा है कि यूक्रेन की जंग ने ताइवान को लेकर चीन के खतरे को रेखांकित किया है। एक ब्रिटिश अधिकारी ने कहा कि ताइवान को लेकर हुई बैठक में इस पर चर्चा हुई कि ब्रि?टेन किस तरह से ताइवान के साथ मिलकर कूटनीतिक तरीके से एशिया में प्रतिरोध को बढ़ा सकता है।

ताइवान को चीन अपना हिस्सा मानता है। चीन का कहना है कि ताइवान उसका एक प्रांत है और आखिरकारी एक यह वापस इसका हिस्सा बन जाएगा। वहीं ताइवान का मानना है कि वह आजाद देश है, उसका अपना अलग संविधान है। दक्षिण पूर्वी चीन के तट से लगभग 100 मील दूर ताइवान स्थित है।

रूस का दावा, यूक्रेन ने ही अपने नागरिकों पर बरसाए गोले

कीव। रूस ने रविवार को दावा किया है कि यूक्रेन ने खेरसॉन के दक्षिणी क्षेत्र में अपने ही नागरिकों पर गोले दागकर मार डाला या घायल कर दिया। इस बीच मारियुपोल के इस्पात संयंत्र में फंसे कुछ नागरिकों को निकाला गया है। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी ने यूक्रेन के समर्थन में कीव दौरा किया है। पेलोसी ने ट्वीटर पर राष्ट्रपति जेलेंस्की को साझा किए एक वीडियो में कहा कि हम आपकी आजादी की लड़ाई के लिए धन्यवाद कहने के लिए आपके पास आ रहे हैं। पेलोसी ने कई अमेरिकी सांसदों के साथ शुक्रवार को कहा कि वह यूक्रेन के लिए 33 बिलियन डॉलर का सहायता पैकेज पारित करने की उम्मीद है। एक रिपोर्ट के अनुसार रूस के रक्षा मंत्रालय ने यूक्रेन की सेना पर खेरसॉन क्षेत्र के कासेलिव्का और शायरोका बाल्का के गांवों के एक स्कूल, किंडरगार्टन और कब्रिस्तान पर गोलाबारी करने का आरोप लगाया है। हालांकि मंत्रालय ने इस संबंध में कोई ब्योरा नहीं दिया। इस पर यूक्रेन की तरफ से भी कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। रूसी सेना ने खेरसॉन शहर पर कब्जा कर लिया है, जिससे उन्हें रूस से जुड़े क्रीमिया के उत्तर में सिर्फ 100 कि.मी. (60 मील) की दूरी पर पैर जमाने का मौका मिला है। साथ ही आजोव सागर पर रणनीतिक रूप से पूर्वी बंदरगाह शहर मारियुपोल पर कब्जा कर लिया है। यूक्रेन की सेना ने रविवार को जारी बुलेटिन में कहा कि रूसी सेनाएं खेरसॉन की प्रशासनिक सीमाओं को तोड़ने और मायकोलायिव और क्रिवी रिह शहरों पर हमलों के लिए रास्ता तैयार करने के लिए लड़ रही थीं। रूस ने 21 अप्रैल को मारियुपोल में जीत की घोषणा की, जबकि सैकड़ों होल्डआउट यूक्रेनी सैनिकों और नागरिकों ने अजोवस्टल स्टील वर्क्स में शरण ली। यूक्रेन के एक लड़ाकू सैनिक ने शनिवार को कहा कि 20 महिलाओं और बच्चों को बाहर कर दिया है। हम मलबे से रस्सियों के सहारे नागरिकों को बाहर निकाला जा रहा है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
211019 से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बंधित विवादों का न्याय क्षेत्र कौशाम्बी, प्रयागराज होगा।